इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ

ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव

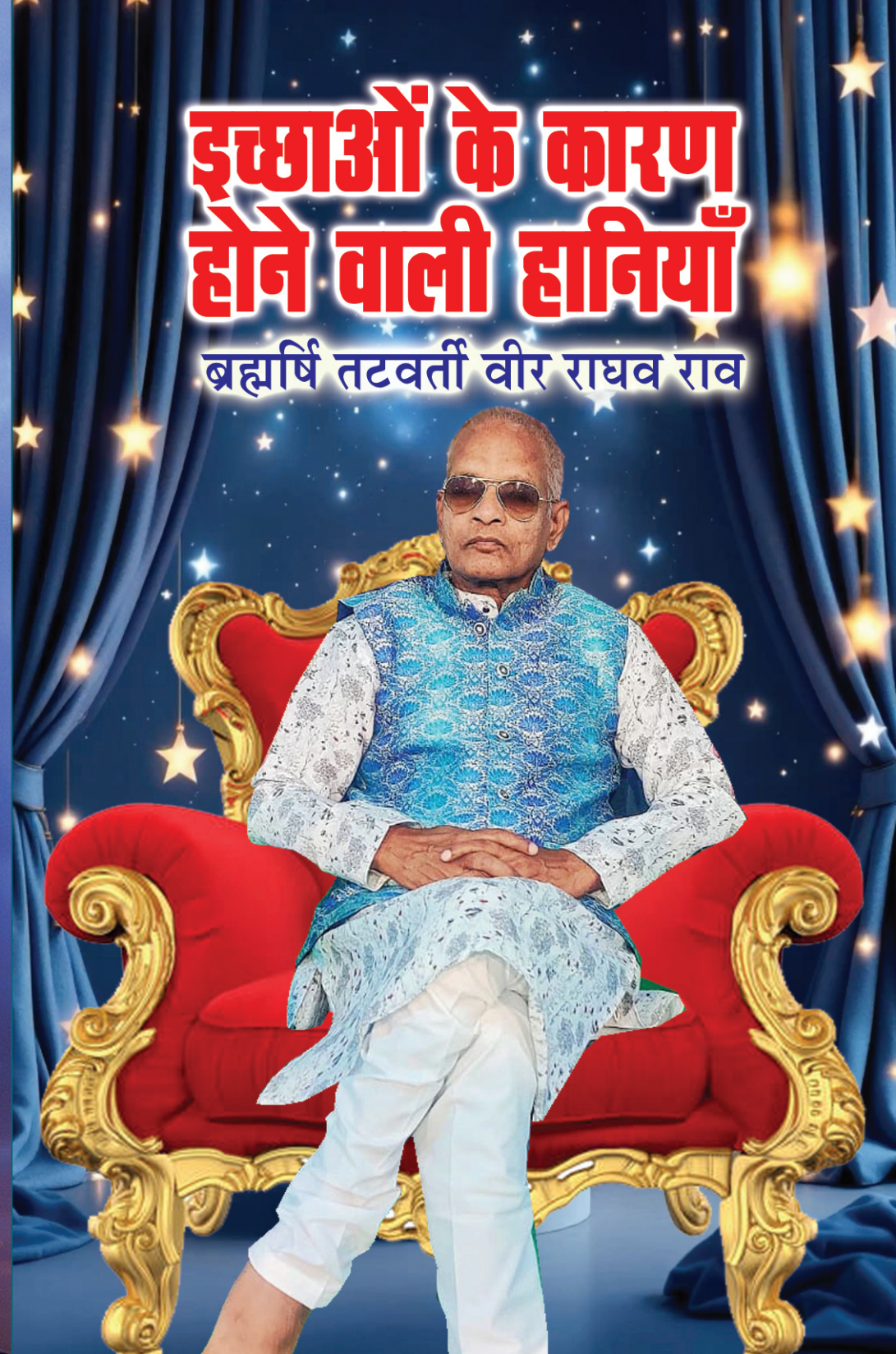

इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ

लेखक : श्री ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीनिवास रेड्डी कर्रा

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.100/-

विषय सूची

1. इच्छाओं के कारण हानियाँ... 3
2. मांस खाने की इच्छा के नुकसान... 13
3. विभिन्न इच्छाएँ. 16
4. इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती ? 18
5. क्या ईश्वर इच्छाएं पूरी करता है ?.....21
6. आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए.....34
7. इच्छाओं के कारण हानियाँ 52
8. क्या ईश्वर इच्छाएं पूरी करता है ?.....56
9. किसी भी जन्म में इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं 66
10. इच्छाएं और इरादे ऊर्जा को खत्म करते हैं 81
11. भगवद्गीता में इच्छाओं से होने वाली हानि.....92
12. मृत्यु पर होने वाली हानियाँ 95

ध्यान की पद्धति - श्वास पर ध्यान

हर किसी को अपने लिए उपयुक्त सुखासन में आराम से बैठकर.. दोनों हाथों को मिलाकर... आंखों को बंद करके... सहज रूप से होने वाले उच्छ्वास और निश्वास पर गौर करना है!

बीच में कई सारे विचार हमारे मन में आते रहते हैं, उन सबका खंडन करते हुए... वापस हमारे ध्यान को श्वास पर लाना है... ध्यान भटकता रहेगा लेकिन वापस श्वास पर ध्यान लाते रहना है. धीरे-धीरे.. विचार रहित स्थिति प्राप्त होगी... चित्तवृत्ति का निरोध होगा मन शून्य बन जाएगा। मन शांति प्राप्त करेगा। यही ध्यान स्थिति है।

इस विचार रहित स्थिति में प्राप्त होने वाले शारीरिक, तंत्रिका व्यवस्था और आत्मानुभव पर ध्यान देते रहना है। उस स्थिति में असीमित विश्वमय प्राणशक्ति शरीर के अंदर प्रवाहित होकर तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि करती है। इस शक्ति के कारण सारे रोग दूर हो जाते हैं। तंत्रिका व्यवस्था की शुद्धि के कारण सारे कर्म दूर हो जाते हैं।

साधारण रूप से मनुष्य की उम्र जितनी है.. कम से कम उतने मिनट तक.. हर रोज दिन में दो बार... ध्यान करना है।

1.इच्छाओं के कारण हानियाँ

कोई भी व्यक्ति इच्छाओं से रहित नहीं है। कई लोग सोचते होंगे कि इच्छाओं के क्या नुकसान हैं ? कोई इच्छाओं के बिना कैसे रह सकता है ? दरअसल कोई इच्छाएँ ही नहीं हैं, तो फिर जीना ही क्यों ? क्या जीने का असली उद्देश्य इच्छाओं की पूर्ति नहीं है ? ऐसे भी लोग हैं जो ऐसा कहते हैं। इसलिए, आइए जानें कि ये इच्छाएँ ऐसी इच्छाओं के साथ जीने वाले मनुष्यों को कितने प्रकार के नुकसान और कठिनाइयाँ पहुँचाती हैं ।

क्योंकि अगर हर कोई यह जान ले, तो वे अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश नहीं करेंगे। वे अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने की कोशिश करेंगे। जो अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर पाएँगे , वे जीवन में अपनी ज़रूरतों तक ही सीमित रहेंगे । वे अपनी ज़रूरतों को सीमित करके एक सुखी और आनंदमय जीवन जी पाएँगे । वह जीवन बहुत सुचारू रूप से चलेगा ।

अगर आप दुनिया को देखें तो हर कोई इच्छा-पूर्ति करने वाला प्रतीत होता है। । इंसानों की तरह-तरह की इच्छाएँ होती हैं। अब दुनिया की आबादी 7 अरब से ज़्यादा है। हर किसी की इच्छाएं अलग-अलग होती हैं।। एक व्यक्ति की इच्छाओं का दूसरे व्यक्ति की इच्छाओं से कोई संबंध नहीं होता ।स्वाभाविक रूप से, हर किसी की सुखी रहने की विशेष इच्छा होती है।, और इतना ही नहीं, खुशी से जीने की भी इच्छा होती है, आनंद पाने की भी इच्छा होती है ।आइए इनके बारे में थोड़ा समझाते हैं।

सुखों का अनुभव करने की इच्छा

इन्हें भोग कहा जाता है।। मनुष्य को पाँच इंद्रियाँ दी गई हैं। इन पाँच इंद्रियों से मन को जो संतुष्टि मिलती है, उसे ''सुख'' कहते हैं । इसलिए, हर कोई अपनी इन पाँच इंद्रियों से मन को संतुष्ट करने का प्रयास

करता है।

आँखें देख रही हैं , यानी मन आँखों के माध्यम से उस सुख का अनुभव कर रहा है । कान सुन रहे हैं , यानी मन भी उस सुख का अनुभव कर रहा है। इसी तरह, नाक सूंघ रही है, यानी मन नाक के माध्यम से संतुष्टि प्राप्त कर रहा है।

रोज़ाना अपने मोबाइल फ़ोन पर फ़िल्में , नाटक , स्टेज प्रोग्राम और दुनिया भर में होने वाले कई अजूबे और ख़ास कार्यक्रम देखते हैं । और इसी सुविधा के लिए हम एक छोटे से मोबाइल फ़ोन पर लाखों रुपये भी खर्च कर देते हैं।

वे विभिन्न प्रकार के भोजन और स्वादों का भी आनंद ले रहे हैं। अनेक लोग सोचते हैं कि जो कुछ भी कमाते हैं, अगर उसे खाएँ नहीं तो क्या फायदा? वे तरह-तरह के स्वादों का आनंद लेते हुए, अनुभव करते हुए, सुखी हैं ऐसा मानते हैं।

संगीत सुनते हुए, तरह-तरह की सुगंधित वस्तुएं सूंघते हुए, ए।सी। में रहकर शरीर को सुख दे रहे हैं, गृहस्थ जीवन में कई तरह के सुख भोग रहे हैं। ऐसे सुखों को भोगने की इच्छा हर किसी की होती है ।

खुश रहने की इच्छा

खुशी शारीर की नहीं, मन की होती है। शरीर से कोई संबंध न रखते हुए, मन को जो संतोष मिलता है, उसे ही खुशी कहते अगर मन में चाही हुई चीज़ मिल जाए तो बहुत ख़ुशी होती है कहते हैं।

अगर कोई एक लाख रुपए कमाना चाहता है और पूरी मेहनत करके कुल एक लाख रुपए कमा लेता है , उसे मनचाही नौकरी मिल जाती है , या जब वह शादी करना चाहता है तो उसे अच्छा रिश्ता मिल जाता है, तो वह बहुत खुश होगा।

इसी तरह, कोई कार या बाइक खरीदता है या त्योहार के दिनों में नए कपड़े पहनता है तो वह सबको दिखाकर बहुत खुश होता है। वे कहते हैं कि मुझे बहुत खुशी हो रही है। इसी तरह खुश होकर जीना हर कोई चाहता है।

आनंद का अनुभव करना चाहने की इच्छा

अधिकांश लोग खुशी को ही आनंद समझते हैं, लेकिन आनंद सामान्य लोगों को प्राप्त नहीं होता। यह केवल ध्यान करने वाले योगियों को ही प्राप्त होता है। वे सुख या प्रसन्नता की इच्छा नहीं रखते, बल्कि आनंदपूर्वक जीना चाहते हैं। वे आनंद प्राप्त करना चाहते हैं और उसके लिए आवश्यक साधनाएँ करते हैं। वे साधनाएँ करते हुए जो आनंद की अनुभूति प्राप्त करते हैं, वह अवर्णनीय होती है।

इसीलिए महान साधक लोग साधना करते हुए दिनों तक, हफ्तों तक, महीनों तक बिना उठे उसी तरह बैठे रहते हैं। क्योंकि इस अद्भुत आनंद की अनुभूति के सामने सारी सुख-सुविधाएँ और खुशियाँ फीकी पड़ जाती हैं।

कई महीनों तक उस तरह तपस्या करते हुए महान योगी ''समाधि की स्थिति'' में चले गए कहा जाता है। समाधि की स्थिति में प्राप्त होने वाला आनंद इतना अनुपम है कि उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।।

अब पत्रीजी की राह में आए ऐसे लोग भी थोड़े से दृढ़ और संकल्पित होकर रोज ध्यान करते रहें तो कुछ ही समय में बिना महसूस किए दो-तीन घंटे, तीन-चार घंटे यूं ही बैठे रह जाते हैं। उन्हें यह अहसास तक नहीं होता कि उन्होंने इतनी देर बैठे रहे। जब वह उठते हैं तो पता चलता कि तीन घंटे बीत चुके हैं। और तब वही सोचते हैं। अरे, तीन घंटे हो गए?

शुरुआत में ध्यान करना नरक जैसा लग सकता है, लेकिन जो लोग नियमित अभ्यास करते हैं उन्हें ऐसी अनुभूति होती है। एक या दो बार ऐसा होने पर, वे उस आनंद का अनुभव करते हैं, उस स्वाद का आनंद लेते हैं और फिर ध्यान नहीं छोड़ पाते हैं।

कितने भी काम हों, परिवार में कितनी भी समस्याएँ हों, अगर वे ध्यान नहीं करते हैं तो उन्हें एक अलग तरह का अनुभव होता है। ऐसी खुशी उन्हें ध्यान न करने पर नहीं मिलती। ध्यान न करने पर उन्हें अशांति होती है। जीवन है तो समस्याएँ होंगी, परिवार है तो दिक्कतें, झगड़े होंगे, बात-बात पर मतभेद होंगे, सब कुछ सुचारु नहीं होगा। पत्नी जैसा पति नहीं होगा, पति जैसी पत्नी नहीं होगी, ये दोनों जैसा चाहेंगे, बच्चे वैसे नहीं होंगे। इसलिए कितनी भी खुशियाँ हों, थोड़ी देर बाद इन समस्याओं के कारण दुख होता रहता है।

मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहते हैं। कितनी भी मेहनत करें, कुछ इच्छाएँ पूरी कर सकते हैं लेकिन बहुत सी इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाते। अगर वे अपनी सोची हुई इच्छाएँ पूरी नहीं कर पाते, और प्रयास करने पर भी उनसे नहीं हो पाता, तो बहुत से लोगों में यह भावना होती है कि अगर वे भगवान का सहारा लें, उनसे प्रार्थना करें तो वे अपनी शक्ति से उनकी इच्छाएँ पूरी करेंगे।

इसलिए लगभग दुनिया में सभी लोग भगवान का सहारा लेते हैं। लेकिन वे अपनी-अपनी आस्था के अनुसार उस भगवान का सहारा लेते हैं। हर किसी को एक अलग भगवान पसंद होता है। ऐसे ही हिंदू पूजा करते हैं, ईसाई प्रार्थना करते हैं, मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ऐसे ही पूजा, प्रार्थना और नमाज़ करके अपनी इच्छाएँ मांगते हैं।

ईश्वर की आराधना को ही ''भक्ति'' मानते हैं और स्वयं को भक्त मानते हैं ।इसके अलावा, कई लोग कहते हैं कि वे ईश्वर से बहुत प्रेम

करते हैं ।इसका कारण यह है कि वे ईश्वर से इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि वे उनकी इच्छाएँ पूरी करते हैं , लेकिन यह वास्तव में ईश्वर के प्रति प्रेम नहीं है।

क्योंकि अगर वह भगवान उनकी माँगी हुई इच्छाएँ पूरी नहीं करता, तो कुछ समय बाद उनका उस भगवान पर से विश्वास उठ जाता है और उन्हें उस पर गुस्सा आता है। तब तक जिस भगवान को पसंद करते थे, उसे भी छोड़ देते हैं। उसे बदलकर एक नया भगवान पकड़ लेते हैं। ऐसे धर्म बदलने वाले लोगों को हम दुनिया में बहुत देखते हैं। और यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि जिस भगवान पर विश्वास किया था, उसने इच्छाएँ पूरी नहीं कीं।

मुख्य रूप से मनुष्यों में तीन प्रकार के लोग होते हैं।

1) तमो गुण वाले

2) रजो गुण वाले

3) सात्विक गुण वाले

इसलिए उनकी इच्छाओं को भी हम तीन प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं।

1) तमो गुण की इच्छाएँ

2) रजो गुण की इच्छाएँ

3) सात्विक गुण की इच्छाएँ

1) तमो गुण की इच्छाएँ:-

इन्हें मुख्य रूप से खाना, पीना, सोना से संबंधित इच्छाएँ होती हैं। यानी आराम से पसंद का खाना, पीना और सोना। और ऐसी इच्छाएँ पूरी करने के लिए धन चाहिए। इसलिए वे धन कमाने पर अधिक ध्यान देते हैं। धन कमाने की इच्छा बहुत प्रबल होती है। इन तीनों प्रकारों में से किसी भी प्रकार की इच्छाएँ रखने वाले लोगों को अपनी इच्छाएँ पूरी करने

के लिए मुख्य रूप से धन चाहिए। इसलिए धन कमाने की इच्छा प्रबल होती है।

इतना ही नहीं, इन्हें शरीर को स्वस्थ रखने की इच्छा होती है। परिवार के साथ समय बिताना, सुख-शांति से जीवन जीना। ऐसी इच्छाएँ होती हैं।

2) रजो गुण की इच्छाएँ:

इनमें थोड़ा घमंड, अहंकार होता है। ये लोग उच्च पद चाहते हैं, सबसे महान बनना चाहते हैं, नाम और प्रसिद्धि कमाना चाहते हैं। हर कोई एक अलग क्षेत्र चुनता है। जो भी क्षेत्र चुनें, उस क्षेत्र में महान जीवन जीने की इच्छा होती है। सभी उनकी बात मानें, उनके नियंत्रण में रहें, ऐसी इच्छा रखते हैं। ऐसे में बिना इच्छाओं वाला कोई नहीं दिखता।

अगर हम पुराणों से उदाहरण लें तो रावण का रजो गुण था। उसे सीता का उपभोग करने की इच्छा हुई। उसने उसे उठाकर लंका में कैद कर लिया। लेकिन इस इच्छा के कारण उसे कितना नुकसान हुआ, यह हम जानते हैं। वह खुद तो बर्बाद हुआ ही, अपने सभी लोगों की बर्बादी का कारण भी बना। विभीषण ने तब कहा, राम से झगड़ा क्यों ? सीता को सौंप दो, लेकिन उसने मना कर दिया। अगर वह इच्छा न होती तो कोई नुकसान नहीं होता, है ना ?

इच्छा कर सकते हैं, पूरी की जा सकने वाली इच्छाएँ करने में कोई बुराई नहीं है, कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन जो पूरी नहीं की जा सकतीं, उनकी इच्छा करने पर बहुत नुकसान होता है। रजो गुण में दृढ़ता अधिक होती है।

अब राजनीति में देखें तो, मैं बहुत उच्च स्थिति में आना चाहता हूँ, वह पद प्राप्त करना चाहता हूँ, ऐसी इच्छा के साथ न करने वाले काम करते हैं, धोखाधड़ी करते हैं, बहुत से लोगों को परेशान करते रहते हैं।

और ऐसे लोग कभी-कभी हारकर कितनी कठिनाइयाँ झेलते हैं, कितना नुकसान उठाते हैं, यह हम देखते हैं।

एक चुनाव में जीतकर इच्छा पूरी कर ली, फिर दूसरे चुनाव में हारकर बहुत दुख उठाते हैं, नुकसान उठाते हैं। तब जीवन बहुत दुखद हो जाता है। तो यह नुकसान क्यों हुआ? इच्छा के कारण ही तो! अगर वह इच्छा न होती तो यह नुकसान क्यों होता? इसलिए एक तरह से देखें तो इच्छा नुकसान ही है। उसी तरह महाभारत में दुर्योधन मय सभा में अपमानित हुए, द्रौपदी ने देखकर हँसा। वह अपमान का बोझ सह नहीं पाए।

उन्हें अपमानित करने के वजह से उन्हें अपमानित करने की एक प्रबल इच्छा उनके मन में उत्पन्न हुई। उस इच्छा के साथ उन्होंने मायाजाल में पांडवों को हराकर द्रौपदी का वस्त्रहरण किया और अपना क्रोध, अपनी इच्छा पूरी करना चाहा। उन्होंने उन्हें अपमानित किया, लेकिन इसके परिणामस्वरूप भारत युद्ध हुआ।

इसके कारण केवल दुर्योधन ही नहीं बल्कि पूरा कुरुवंश ही नष्ट हो गया। इसका कारण द्रौपदी को अपमानित करने की दुर्योधन की इच्छा थी। यदि वह इच्छा न होती, यदि उन्हें अपमानित न किया जाता तो वे सब नष्ट हुए बिना खुशी से जीते। इस तरह हम पुराणों को पलटें या इतिहास को पलटें, हम जान सकते हैं कि ऐसी इच्छाएँ कितना नुकसान पहुँचाती हैं।

उसी तरह अब लोकतंत्र आ गए हैं लेकिन उससे पहले पुराणों के समय में राजतंत्र होते थे। उन राज्यों के राजा खूब कमाते थे, बलवान होते थे, और पड़ोसी राज्य को जीतने की इच्छा से उस देश को जीतते हुए अपने राज्य का विस्तार करते थे। ऐसे युद्धों में कभी-कभी वे जीतते थे। कभी-कभी वे हारकर बहुत नुकसान उठाते थे।

इस तरह देखें तो इतिहास में उस राज्य को जीतने की इच्छा से

कितने लोग का मौत के कारण बनते थे। अपनी तरफ और शत्रुओं की तरफ भी कितने लोग मरते थे। आर्थिक नुकसान होता था।

उसी तरह कोई भी इच्छा पूरी करने के लिए धन चाहिए। धन के बिना कोई भी इच्छा पूरी करना असंभव, असाध्य है। एक चुनाव में जीतने के लिए बहुत निवेश करना पड़ता है। इसलिए बहुत से लोग उस इच्छा को पूरा करने के लिए पहले धन कमाने के लिए न करने वाले सभी गलत काम करते हैं। अधर्म से व्यवहार करते हैं। सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। उन गलतियों, पापों को करने के कारण सृष्टि के नियमों के अनुसार सृष्टि में मौजूद सिद्धांत के अनुसार भविष्य में वे बहुत कष्टों के शिकार होते हैं, बहुत नुकसान उठाते हैं।

इस पैसे को कमाने के लिए भ्रष्टाचार के काम करने पर बाद में आई हुई सरकारें उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाकर गिरफ्तार करना, उन्हें जेल में डालना हम देखते ही रहते हैं। कुछ लोग इनकम टैक्स वालों के हाथ लगकर सारा पैसा खोना भी देखते हैं। तो यह कष्ट, नुकसान क्यों आया? धन कमाने की इच्छा के कारण।

3) सात्विक गुण की इच्छाएँ:

इनकी हमेशा दूसरों की, लोक की सेवा करनी है, सबका भला करना है, अच्छे काम करने हैं, ऐसी ही इच्छाएँ होती हैं।

अन्नदान करना है, वस्त्रदान करना है, सेवा कार्यक्रम आयोजित करने हैं, इस तरह करते हुए पुण्य कमाना है, ऐसी इच्छा इनको होती है। इस तरह सात्विक गुण में रहने वाले सेवा करते हुए, पुण्य कमाना है, ऐसी इच्छा होती है। ये पुण्य कार्य करते हुए वे भोग प्राप्त करना चाहते हैं।

यहां इस तरह पुण्य करके भोग मिलें तो नुकसान क्या है? ऐसा आपको लग सकता है। लेकिन ऐसी इच्छा भी नुकसान ही है, यह हमें ज्ञान बढ़ने के साथ समझ में आता है। क्योंकि जो लोग ये पुण्य कार्य करते हैं,

वे भोग तो कमा सकते हैं लेकिन मुक्ति नहीं कमा सकते। मुक्ति का अर्थ है जन्म रहित स्थिति प्राप्त करना, फिर से पृथ्वी पर न आना।

कोई भी हो, इस सृष्टि में एक कर्म करे, वह पुण्य कर्म हो या पाप कर्म हो, उस कर्म का अनुभव करने के लिए फिर से पृथ्वी पर आना पड़ता है। कितने भी पुण्य करके फिर से पृथ्वी पर आएँ, उन पुण्यों का अनुभव करते हुए इस दुनिया में मौजूद स्थिति के कारण कुछ दुख भी अनुभव करने पड़ते हैं। इसलिए वे मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। वही पुण्यों के कारण उन्हें होने वाला नुकसान है।

इसलिए भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने क्या कहा है? ''शुभाशुभ परित्यागी'' कहा है। शुभ को यानी पुण्य को, और अशुभ को यानी पाप को दोनों को छोड़ देने को कहा है। इसलिए अन्नमाचार्य ने कहा है कि ''पाप नहीं मिटता, पुण्य नहीं मिटता''। उसका अंत कहाँ होगा? ऐसे ही जन्म लेते रहना होगा। पाप करते रहें, पुण्य करते रहें, फिर से पृथ्वी पर आते रहना होगा। और न आना हो तो पाप, पुण्य नहीं करने चाहिए।

इसलिए ये सेवाएँ करने वाले लोगों को फिर से जन्म लेना पड़ता है। इसलिए कहते हैं कि ''**पाप करने वालों को लोहे की जंजीर पड़ती है, पुण्य करने वालों को सोने की जंजीर पड़ती है**''। यानी लोहे की जंजीर से बंधे हुए लोग पैसे के बिना इस बंधन में फंसते हैं, पुण्य करने वाले पैसे के साथ इस बंधन में फंसते हैं। वे भी बंदी हैं, ये भी बंदी हैं। लेकिन बंधन मुक्त नहीं हो सकते, मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते,

इसलिए पत्री जी कहते हैं कि ''**पाप करोगे तो नरक में जाओगे, पुण्य करोगे तो स्वर्ग में जाओगे**'', लेकिन अगर आप ध्यान करते हैं तो मोक्ष प्राप्त करेंगे, ऐसा कहा गया है। इसलिए, पुण्य करने से स्वर्ग तो मिलेगा लेकिन आप फिर से पृथ्वी पर वापस आ जाएंगे।

श्री कृष्ण ने कहा था कि 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशंति'। इसका

मतलब है कि जब आपका अर्जित पुण्य क्षीण हो जाता है, यानी उस पुण्य का अनुभव करने के बाद वह समाप्त हो जाता है, तो आपको फिर से मानव लोक में जन्म लेना होगा। इसीलिए पत्री जी कहते हैं कि ये दो प्रकार के कर्म नहीं, बल्कि ध्यान करो, मुक्ति कर्म करो। मुक्ति कर्म का अर्थ है आत्म कर्म, आत्मा से संबंधित कर्म, यानी ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान, स्वाध्याय, संगति, सेवा ये करने चाहिए।

स्वाभाविक रूप से प्रारंभिक जन्मों में, यानी 100 से 150 जन्मों तक, वे तमो गुण में रहते हैं। उसके बाद अगले 100 से 150 जन्मों तक रजो गुण में रहते हैं। फिर 100 जन्मों तक सात्विक गुण में रहते हैं। जैसे-जैसे ये जन्म बढ़ते जाते हैं, उनमें और उनकी इच्छाओं में बदलाव आता रहता है। लेकिन किसी भी स्थिति में, वे इच्छाएं उन्हें नुकसान ही पहुंचाती हैं, कोई लाभ नहीं देतीं।

आप पूछ सकते हैं कि अगर इच्छाएं न हों तो कैसे होगा? लेकिन याद रखें, इच्छाएं गलत नहीं हैं, लेकिन उन्हें आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए। आवश्यकता से अधिक होने पर वे अनर्थ ही पैदा करती हैं। नुकसान पहुंचाती हैं। इसलिए इच्छाओं को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। तो यह कैसे संभव है ?

आप पूछ सकते हैं। इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए इच्छाओं का मूल ''मन'' है, इसलिए यदि आप मन को नियंत्रित करते हैं तो इच्छाएं आपके नियंत्रण में रहेंगी। यानी मन की बात आपको नहीं सुननी है, बल्कि मन को आपकी बात सुननी है।

यह कैसे संभव है ? वह मार्ग ही पत्री जी ने हमें दिया है ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान। ''श्वास पर ध्यान'' के माध्यम से धीरे-धीरे आपका मन आपके नियंत्रण में आ जाएगा। जब मन नियंत्रण में आ जाता है, तो मन से संबंधित सभी बातें और गुण भी आपके नियंत्रण में रहेंगे।

2.मांस खाने की इच्छा के नुकसान

जो लोग यह नहीं जानते कि वे आत्मा हैं और सही ढंग से नहीं जीते हैं, उन्हें स्वर्ग में जाने के बाद एहसास होता है कि उन्होंने एक जीवन खो दिया है। उन्हें एहसास होता है कि उन्होंने जो कुछ भी कमाया और खर्च किया, वह सब व्यर्थ हो गया। वे वहाँ जानेंगे कि इन इच्छाओं के कारण उन्हें कितना नुकसान हुआ। इसलिए, पत्री जी कहते हैं कि आपके पास जो जीवन है, उसमें से आधा समय शरीर के लिए उपयोग करें और आधा समय अपनी आत्मा के लिए उपयोग करें।

इसलिए, इच्छाओं को पूरा करने के बजाय, इच्छाओं को नियंत्रित करते हुए, जो कुछ भी है उसका आनंद लेते हुए, और कुछ न होने पर दुखी या लालची न होकर जीने से, आप आत्मा के लिए आवश्यक कार्य करेंगे। तब आप जीवन में बिना किसी नुकसान के जीएंगे।

इसी तरह, अगर हम देखें, तो इस दुनिया में बहुत से **''लोगों को मांस खाने की इच्छा होती है।''** उन्हें यह नहीं पता होता कि इससे उन्हें कितना नुकसान हो रहा है। इस इच्छा के कारण वे कई प्रकार के जानवरों को प्रताड़ित करते हैं, मारते हैं और खाते हैं। वे बकरियों, भेड़ों, गायों, भैंसों, बैलों, मुर्गियों और बत्तखों को मारते हैं। इसी तरह, वे जलीय जीवों जैसे झींगे, मछलियाँ और चीन में तो कीड़े-मकोड़े और साँप भी खाते हैं। वे सब कुछ मार डालते हैं। यह सब किस लिए? मांस खाने की इच्छा के लिए।

ठीक है, इच्छा पूरी हो गई, यह अच्छी बात है। लेकिन इस तरह उन जीवों को मारने और उन्हें प्रताड़ित करने से, उन्हें कष्टों और बीमारियों के रूप में परिणाम भुगतने पड़ते हैं, वे बहुत नरक और बहुत नुकसान उठाते हैं, वे रोते हैं, और दुखी होते हैं कि उनका जीवन ऐसा हो गया।

आप जीवन में अपनी इच्छानुसार जी सकते हैं, यह आपकी पसंद है, लेकिन आपको दूसरों को दुख पहुँचाकर आनंद नहीं लेना चाहिए। आपको दूसरों की कीमत पर खुश नहीं होना चाहिए।

आपको दूसरों को आनंदित करके आनंद लेना चाहिए। यही सृष्टि का धर्म है। यदि आप ऐसे जीते हैं, तो कोई समस्या नहीं होगी।

इस तरह जीवन भर खाने से, वे फिर से जन्म लेते हैं और उन कर्मों के फल के रूप में नरक भोगते हैं। हम ऐसे कई लोगों को देखते हैं जो कष्ट उठा रहे हैं। आज अगर हम देखें, तो दुनिया में अस्पतालों और दवा की दुकानों की सबसे ज्यादा मांग है। कितनी भी दुकानें हों, वे पर्याप्त नहीं हैं... सब खचाखच भरे हुए हैं।

इतनी बीमारियाँ क्यों हैं ? यह उनके कर्मों का फल है। बिना कुछ किए कुछ नहीं मिलता, जो करते हैं वही मिलता है। इसलिए, अच्छी तरह समझ लें कि मांस खाने की इस इच्छा के कारण इसे छोड़ नहीं पाते। कुछ लोग जानते हैं, फिर भी छोड़ नहीं पाते, कहते हैं कि आदत हो गई है। देखिए, जिन्हें सुबह कॉफी पीने की आदत है, वे कॉफी न पिएं तो रह नहीं पाते। जिन्हें मांस खाने की आदत है, वे मांस न खाएं तो रह नहीं पाते।

कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, अगर मैं मर गया तो मर जाऊंगा, जो होगा सो होगा। मैं मांस नहीं छोड़ सकता। वे इसके इतने आदी हो जाते हैं। आज एक इलाज कराने में कितने लाख लगते हैं, एक बार सोचिए। हर चीज के लिए पैकेज बनाकर इलाज कर रहे हैं। कुछ लोग अपनी संपत्ति भी बेच रहे हैं। कुछ लोग कर्ज में डूब रहे हैं। तो क्या यह सब इच्छा के कारण होने वाला नुकसान नहीं है ? वह जीवन भर मेहनत करके जो कुछ भी जमा करता है, उसे बीमारियों पर खर्च कर देता है।

बहुत से लोग नौकरी या व्यवसाय करते समय कुछ पैसे बचाना चाहते हैं। किस लिए ? पता नहीं कब कौन सी बीमारी आ जाए! कितने

पैसे की जरूरत पड़ेगी! इस उद्देश्य से वे ऐसा करते हैं। वास्तव में, जैसा उन्होंने सोचा था, कोई बीमारी आ जाती है और वह सारा पैसा खर्च हो जाता है, या वह पर्याप्त नहीं होता, ऐसा हम बहुत से लोगों के जीवन में देखते हैं। कुछ लोगों को देखें तो वे परिवार के लिए खर्च करने वाले पैसे बीमारियों पर खर्च करते हैं। दवा के बिना जीने वाले कोई नहीं दिखते।

इसी तरह, कुछ लोगों को शराब, ब्रांडी, व्हिस्की जैसी चीजें पीने की इच्छा होती है। उन्हें नशीले पदार्थों का सेवन करने की इच्छा होती है। सोचिए, इससे उन्हें कितना नुकसान हो रहा है। जब वे शराब पीते हैं, तो वे शारीरिक चेतना खो देते हैं। उन्हें नहीं पता होता कि वे क्या बोल रहे हैं, क्या कर रहे हैं। ऐसे शराब पीकर घर आकर पत्नी को पीटने वाले, अनावश्यक झगड़े करके घर में नरक पैदा करते हैं।

यह इतना व्यसन बन जाता है कि अगर वे उसे न पिएं तो रह नहीं पाते। सारा पैसा उसी पर खर्च कर देते हैं। कुछ लोग कमाना छोड़ देते हैं और इस कमजोरी के कारण अपनी पत्नियों को पैसे देने के लिए परेशान करते हैं। वह अपनी मेहनत से कमाए हुए पैसे को शराब पर उड़ा देता है। अगर वह नहीं देती, तो उसे पकड़कर पीटता है। उसकी पीड़ा सहन न कर पाने के कारण वह दे देती है और रोती हुई बैठ जाती है, ऐसी चीजें हम देखते हैं।

यह इच्छा भी बहुत नुकसान पहुँचाती है, यह मन से संबंधित कमजोरी है। जो लोग अपने मन को नियंत्रित करते हैं, वे धीरे-धीरे इस कमजोरी से बाहर निकल जाते हैं।

3.विभिन्न इच्छाएँ

कुछ लोगों को जुआ खेलने की इच्छा होती है, कुछ को लॉटरी, क्रिकेट सट्टेबाजी, वेश्यावृत्ति करने की इच्छा होती है, और कुछ को पद प्राप्त करने की इच्छा होती है। ये सभी इच्छाएँ आर्थिक नुकसान पहुँचाती हैं। कुछ लोगों को चुनाव आते ही सट्टेबाजी के माध्यम से पैसा कमाने की इच्छा होती है। यह पता नहीं है कि उनमें से कौन कमाता है, लेकिन हमने कई लोगों को नुकसान उठाते देखा है।

यह सारा नुकसान क्यों होता है ? इच्छाओं के कारण। यदि आप ऐसे नुकसानों से उबरना चाहते हैं, तो किसी को भी अपने मन को शुद्ध करना चाहिए। और उसके लिए ''साँस पर ध्यान'' केंद्रित करके ध्यान करना चाहिए। ये इच्छाएँ कितनी भी पूरी हो जाएँ, नई इच्छाएँ पैदा होती रहती हैं। अगर कोई इच्छा पूरी हो जाए, तो क्या आप संतुष्ट होंगे या तृप्त ? नहीं, आप उससे संतुष्ट या तृप्त नहीं होंगे। एक और नई इच्छा पैदा हो जाती है। किसी की इच्छाओं को पूरी तरह से पूरा करना असंभव, असाध्य है, इन इच्छाओं का कोई अंत नहीं है।

देखिए, पहले वह अच्छी तरह से पढ़ना चाहता है, ठीक है, उसने पढ़ाई कर ली। वह अच्छी रैंक चाहता है। ठीक है, उसने रैंक प्राप्त कर ली। क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, वह अच्छी नौकरी चाहता है। उसे अच्छी नौकरी मिल जाती है। क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, वह उसमें अच्छी स्थिति चाहता है। क्या वह वहीं रुक जाता है ? उसके बाद शादी, शादी हो गई। फिर बच्चे, ठीक है, बच्चे पैदा हो गए। क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, वह चाहता है कि उनका जीवन अच्छा हो। वह चाहता है कि वे भी अच्छी तरह से बड़े हों।

इस तरह इन इच्छाओं का कोई अंत नहीं होता। इतना ही नहीं, आप देखिए, जिसके पास साइकिल नहीं होती, वह सोचता है कि अगर

मेरे पास एक साइकिल हो तो काफी है। मान लीजिए, उसने किसी तरह साइकिल खरीद ली, क्या वह वहीं संतुष्ट हो जाता है ? नहीं, कुछ समय बाद वह सोचता है कि साइकिल नहीं, बाइक खरीदनी चाहिए, तो वह कुछ और समय मेहनत करके आखिरकार बाइक खरीद लेता है और अपनी इच्छा पूरी कर लेता है।

क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, वह बाइक भी उसके लिए पर्याप्त नहीं होती, वह सोचता है कि अगर कार होती तो अच्छा होता। मान लीजिए, उसने कार खरीद ली, क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, सामान्य कार पर्याप्त नहीं होती, वह और बड़ी कार चाहता है। पूरे परिवार ने मिलकर एक कार खरीद ली, क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, उसे ही नहीं, उसके बेटे को कार, अगर दो बेटे हैं तो दोनों को दो कारें चाहिए होती हैं। इस तरह देखें तो कहीं भी अंत नहीं होता।

अगर कोई घर नहीं है तो वे कहते हैं कि कोई भी घर काफी है। ठीक है, मान लीजिए उसने कोई झोपड़ी बना ली। कुछ समय बाद उसे वह पसंद नहीं आती। वे सोचते हैं कि अगर एक खपरैल का घर होता तो अच्छा होता। क्या वे खपरैल के घर से संतुष्ट हो जाते हैं ? नहीं, वह भी पर्याप्त नहीं होता, वे छत वाला घर कहते हैं। और बड़ा घर कहते हैं।

क्या वह वहीं रुक जाता है ? नहीं, वे सजावट करवाना चाहते हैं। इस तरह देखें तो इन इच्छाओं का कहीं भी अंत नहीं होता और वे बढ़ती ही जाती हैं। पहले वह दस लाख का घर खरीदता है। फिर पचास लाख का घर खरीदता है। फिर एक करोड़ रुपये का। इससे पता चलता है कि एक इच्छा पूरी होने पर भी संतुष्टि नहीं मिलती। यह हमें समझ में आता है।

अगर आप यहां देखेंगे तो लोग से कोई इच्छा मांगी जाएगी। उतना तक टीक है। लेकिन जब वह इच्छा पूरी नहीं होती तो उन्हें बहुत दुख होता है, वे अशांति में पड़ जाते हैं, और बहुत नुकसान उठाते रहते हैं।

4.इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती

उपनिषदों में एक कहानी बताई गई है। वह क्या है ? राजा ययाति एक राक्षस राजा थे। उनके पास बहुत सारे भोग थे, जो कुछ भी वह चाहते थे वह पूरा हो सकता था, उन्होंने कई सुंदर स्त्रियों का अनुभव किया था। इस तरह उन्होंने कई इच्छाएँ पूरी कीं, बहुत खुशी और मस्ती से समय बिताया, बहुत संतुष्ट जीवन जिया। किसी चीज की कमी नहीं थी, जो कुछ भी वह चाहते थे वह पूरा कर लेते थे।

इस तरह रहते हुए धीरे-धीरे उन्हें बुढ़ापा आ गया। यहाँ अजीब बात यह है कि इच्छाएँ पूरी करने के लिए वह जिसे भी बुलाते थे, वे आते थे। वह उनका अनुभव कर सकते थे, लेकिन उनके पास अनुभव करने की शक्ति नहीं थी, उन्हें बहुत दुख हुआ। मेरी स्थिति ऐसी क्यों हो गई है, अगर मैं अनुभव करना चाहता हूँ तो मेरे पास शक्ति नहीं बची है, बुढ़ापा आ गया है, उन्होंने दुख व्यक्त किया।

वह अपने गुरु शुक्राचार्य के पास गए। उन्होंने उनसे विनती की। उन्होंने कहा, ''मुझे अभी भी बहुत सारी इच्छाएँ हैं, मैं अभी भी अनुभव करना चाहता हूँ। लेकिन मेरे पास शक्ति नहीं है। कृपया अपनी तपस्या की शक्ति से मुझे युवावस्था प्रदान करें। ''लेकिन उन्होंने क्या कहा ?'' बेटा, सृष्टि में यह किसी के लिए भी संभव नहीं है। किसी के लिए भी युवावस्था कुछ ही समय के लिए होती है, उसके बाद बूढ़ा होना ही पड़ता है, सारी शक्तियाँ खोनी ही पड़ती हैं, यह सृष्टि का नियम है, मैं यह नहीं कर सकता।''

लेकिन जब उन्होंने बार-बार उनसे विनती की कि आप इतने महान तपस्वी हैं, मेरी इच्छा क्यों नहीं पूरी कर सकते, तो उन्होंने एक रास्ता बताया। वह क्या था ? अगर कोई तुम्हें अपनी जवानी देने को तैयार हो, और तुम्हारी बुढ़ापा ले ले, तो मैं यह व्यवस्था कर सकता हूँ, उसने कहा।

तब उसने अपने सभी बेटों से पूछा, और सबसे छोटे बेटे ने इसके लिए सहमति व्यक्त की।

शुक्राचार्य ने अपनी तपस्या की शक्ति से उसकी बुढ़ापा उस बेटे को दे दी, और बेटे की जवानी उसे दे दी। तब उसने फिर से कई स्त्रियों के साथ कई प्रकार के भोगों का खूब अनुभव किया। इस तरह अनुभव करते हुए फिर कुछ समय बाद बुढ़ापा आ गया। तब उसने सोचा! सब कुछ है लेकिन अनुभव करने की शक्ति नहीं है। ये इच्छाएँ कितनी भी पूरी कर ली जाएँ, फिर भी बार-बार उत्पन्न होती रहती हैं। इनकी कोई सीमा नहीं है। तो इसका समाधान क्या है ? उसने सोचा। अगर यह जीवन है तो ऐसा ही रहेगा।

इसलिए, मुझे ऐसी स्थिति प्राप्त करनी चाहिए जहाँ ऐसा जीवन न हो। ऐसी कितनी भी इच्छाएँ पूरी कर ली जाएँ, कितनी भी पूरी कर ली जाएँ, यह संभव नहीं है, इसका कोई अंत नहीं होगा, इस निर्णय पर पहुँचकर उसने राज्य छोड़ दिया और वानप्रस्थ स्वीकार कर साधनाएँ कीं और जन्म रहित स्थिति प्राप्त करने के लिए चला गया।

इसलिए याद रखें, इच्छाएँ उत्पन्न होती रहती हैं। एक पूरी होती है तो दूसरी उत्पन्न होती है। उन्हें पूरा करने के भ्रम में जीवन को कष्टों में नहीं डालना चाहिए। संसार को नरक के समान नहीं बनाना चाहिए। हर किसी को इच्छाओं को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। पत्री जी भी यही कहते हैं। उन्होंने कहा, इच्छाओं को खत्म करना नहीं, बल्कि उन्हें नियंत्रित करना है।

आपको कार खरीदने की इच्छा हुई। लेकिन वह शक्ति नहीं है, ठीक है, अगर मेरे पास नहीं है तो अब क्या नुकसान है, अगर आप अपने मन को समझा सकते हैं तो यह अच्छा है। वैसे ही आपने सोना खरीदने का सोचा लेकिन वह शक्ति नहीं है, ठीक है, अगर मेरे पास है तो क्या ? अगर

नहीं है तो क्या ? अगर आप समायोजित कर सकते हैं तो कोई समस्या नहीं होगी। अगर नहीं भी है और उसे पूरा करने की कोशिश करते हैं तो जीवन में बहुत सारी परेशानियाँ झेलेंगे, और नुकसान भी उठाएँगे।

अब बहुत से लोग अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए गलतियाँ कर रहे हैं, ऐसे काम कर रहे हैं जो नहीं करने चाहिए, अधर्मी व्यवहार कर रहे हैं।

बाद में उन्हें कई नुकसान और कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसलिए हर किसी को अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। वही मार्ग पत्री जी ने हमें ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान के रूप में दिया है।

जो लोग ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान गंभीरता से करते हैं, उनका मन उनके नियंत्रण में आ जाता है। जब मन उनके नियंत्रण में आ जाता है, तो मन से संबंधित सभी गुण, एक तरह से सभी अरिषड्वर्ग, यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य नियंत्रण में रहते हैं। अगर वे नियंत्रण में रहते हैं तो जीवन लाभदायक होता है। अगर वे नियंत्रण में नहीं रहते तो पूरा जीवन कष्टों और नुकसानों से भरा होता है।

5.क्या ईश्वर इच्छाएँ पूरी करता है ?

हमारे बड़े कहते रहते हैं कि जिसने जो किया, उसे उतना ही मिलता है। यानी जो जो करता है, उसे वही मिलता है। जितना करता है, उतना ही मिलता है। अगर कुछ नहीं करता, तो कुछ नहीं मिलता। अच्छा करता है तो अच्छा मिलता है, बुरा करता है तो बुरा मिलता है।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि **''जिसने जो किया, उसे उतना ही मिलता है''**, लेकिन कहीं भी यह नहीं कहा गया कि **''जिसने जो माँगा, उसे उतना ही मिलता है।''** यह हमें याद रखना चाहिए। लोग सोचते हैं कि ईश्वर हमारी इच्छाएँ पूरी करता है। अगर ईश्वर ही इच्छाएँ पूरी करने वाला होता, तो शास्त्रों में इस तरह का वाक्य बड़े नहीं कहते।

इसलिए, यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि हमें वही मिलता है जो हम करते हैं। इसलिए हमें करने पर ध्यान देना चाहिए, न कि माँगने पर। क्योंकि अगर हम माँगने पर ध्यान देते हैं, और इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं, तो बहुत निराशा होती है, बहुत दुख होता है। अंत में उस भगवान पर से भी विश्वास खोना पड़ता है।

कुछ समय देखकर, अगर हम इस भगवान पर भरोसा करते हैं तो हमारी स्थिति ऐसी ही रहेगी, उनका भगवान और भी अच्छा देख रहा है, जो माँगा जा रहा है वह दे रहा है, ऐसा कहकर इस भगवान को छोड़कर दूसरे भगवान के पास जाते हैं। धर्म बदलना, भगवान बदलना हम दुनिया में देखते ही रहते हैं।

इसलिए, जिस भगवान पर लंबे समय से विश्वास किया गया है, उसे बदलकर नई तस्वीरें लगाते हैं। भारत में देखें तो लोग मंदिरों में जाना छोड़कर चर्चों में जा रहे हैं।

अब अगर हम दुनिया भर में देखें तो चर्चों को छोड़कर बहुत से

लोग फिर से हिंदू धर्म में परिवर्तित हो रहे हैं।

इसलिए आप एक बात याद रखें, यहाँ इच्छा से कोई संबंध नहीं है, अगर आप वह करते हैं जो आपको करना चाहिए तो निश्चित रूप से आपको वह मिलेगा जो आपको मिलना चाहिए, भले ही आपने माँगा न हो। जान लें कि अगर आप वह नहीं करते हैं जो आपको करना चाहिए तो आपको वह नहीं मिलेगा जो आपको मिलना चाहिए।

देखिए, पढ़ने वाले बच्चों में से एक रोज़ पूजा करता हुआ, वह भगवान से प्रार्थना करता है कि उसे कक्षा में प्रथम आना चाहिए। वह सोचता है कि चूंकि उसने भगवान से प्रार्थना की है, इसलिए वह कक्षा में प्रथम आएगा, और उसे पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए वह हर दिन बिना पढ़े सो जाता है।

दूसरा व्यक्ति भगवान से बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं करता, न ही पूजा करता है। वह हर दिन रात-दिन कड़ी मेहनत से पढ़ाई करता है। अब इन दोनों में से कौन प्रथम आएगा? निश्चित रूप से, वे कहेंगे कि जो कड़ी मेहनत से पढ़ाई करता है, वही प्रथम आएगा। कारण यह है कि उसने प्रार्थना नहीं की, पूजा नहीं की। जो नहीं पढ़ता, उसे शून्य अंक मिलते हैं, क्योंकि उसने पढ़ाई नहीं की। वह बस भगवान से प्रार्थना करता रहा। तो क्या यहां परिणाम प्रयास पर निर्भर करता है? या इच्छा पर? इसका मतलब है कि परिणाम प्रयास पर निर्भर करता है। भगवान के मामले में, जो कड़ी मेहनत करता है, उसके साथ अच्छा होता है, लेकिन बिना मेहनत किए बस प्रार्थना करते रहने से कोई फायदा नहीं है।

आइए एक और उदाहरण देखें। आपको एक नदी पार करनी है। यदि आप नदी के किनारे बैठकर, भगवान की तस्वीर रखकर पूजा करते हुए प्रार्थना करें कि हे स्वामी, मुझे नदी पार करा दो, तो क्या आप कभी पार कर पाएंगे? कितने भी दिन या कितने भी साल क्यों न लग जाएं, आप पार

नहीं कर पाएंगे।

लेकिन कौन पार कर सकता है ? जो थोड़ा प्रयास करते हैं, जो थोड़ा प्रयत्न करते हैं, वे पार कर सकते हैं। यानी या तो नाव से जाना होगा, या तैरकर जाना होगा, या फिर कम गहरे क्षेत्र से पार करने की कोशिश करनी होगी, ऐसा कोई न कोई प्रयास करना होगा। इसके बजाय, बिना कुछ किए बैठे रहकर भगवान से कहें कि मुझे नदी पार करा दो, तो आप इस किनारे से उस किनारे तक अपने आप कैसे चले जाएंगे ? यानी यहां यह समझना जरूरी है कि प्रयास करना महत्वपूर्ण है।

इसी तरह, आपको एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ना है। यदि आप उस पहाड़ी के पास जाकर भगवान की तस्वीर रखकर प्रार्थना करें कि हे स्वामी, मुझे उस पहाड़ी पर पहुंचा दो, तो क्या आप पहाड़ी पर चढ़ पाएंगे ? कभी नहीं चढ़ पाएंगे। लेकिन जो थोड़ा प्रयास करते हैं, कड़ी मेहनत करते हैं, प्रयत्न करते हैं, वे धीरे-धीरे, आज नहीं तो कल, उस पहाड़ी की शिखर पर पहुंच पाएंगे। इसके बजाय, बिना प्रयास के कोई परिणाम नहीं मिलता।

इतना ही नहीं, यदि आप क्रिकेट चैंपियन बनना चाहते हैं, या किसी अन्य खेल में अच्छी महारत हासिल करना चाहते हैं, और हर दिन मंदिर जाकर पूजा करते हुए प्रार्थना करें कि मुझे एक महान चैंपियन बना दो, तो क्या आप बन पाएंगे ? कभी नहीं बन पाएंगे। लेकिन यदि आप हर दिन अभ्यास करते हैं, तो निश्चित रूप से चैंपियन बनेंगे।

इसलिए, भगवान के मामले में इच्छाएं करने से कोई फायदा नहीं है, प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है। यदि भगवान इच्छाएं पूरी करने वाले होते, तो वे सबकी इच्छाएं पूरी करते। जिसे जो चाहिए, वह उसे देते। फिर मेहनत करने की क्या जरूरत थी ? इसीलिए भगवान ने सृष्टि में ऐसी व्यवस्था की है कि जो जितनी मेहनत करता है, उसे उतना ही फल मिलता

है।

इसलिए, जो भी मेहनत करता है, उसे वह प्राप्त करने की व्यवस्था प्रकृति में की गई है। इसलिए, हर कोई यह याद रखे कि इच्छा करने से कोई फायदा नहीं है, सब नुकसान ही है, लेकिन यदि आप मेहनत करते हैं, तो निश्चित रूप से किया गया प्रयास ही परिणाम का आधार होगा।

सृष्टि में कर्म सिद्धांत के बारे में भाई गुरुदास कहते हैं कि **''अच्छा करने से बुरा नहीं मिलता। बुरा करने से अच्छा नहीं मिलता।''**

स्वाभाविक रूप से, **''यदि आप अच्छे काम करते हैं, तो बुराई बुलाने पर भी नहीं आती।''** यदि आप बुरा करते हैं, तो अच्छा आप चाहें भी तो नहीं आता। स्वाभाविक रूप से, दुनिया में लोग बुरा करते हैं और भगवान से अच्छा चाहते हैं। तो बुरा करके अच्छा कैसे आएगा? उन्होंने निश्चित रूप से कहा है कि यदि आप अच्छा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको अच्छा ही करना होगा।

इसलिए, हर कोई इच्छा करने पर ध्यान केंद्रित न करे, बल्कि करने पर ध्यान केंद्रित करे। यही बात पत्री जी कहते रहते हैं।

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने क्या कहा? उन्होंने कहा कि **''जैसा कोई करता है, वैसा ही उसे उसका फल मिलता है।''**

अच्छा करेगा तो अच्छा भोगेगा, बुरा करेगा तो बुरा भोगेगा। किसी भी महानुभाव ने यही बात कही है। उन्होंने और क्या कहा?

उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि **''किए गए कर्म से अलग न तो कोई भगवान है और न ही कोई प्रारब्ध।''**

यानी, यदि किसी के साथ कुछ अच्छा होता है, तो वे तुरंत भगवान की कृपा मानते हैं, और यदि अच्छा नहीं होता है, तो वे सोचते हैं कि भगवान की कृपा अभी नहीं हुई है। यानी, दुनिया में यह धारणा है कि अच्छा हो या बुरा, सब भगवान की वजह से होता है। लेकिन वशिष्ठ ने

क्या कहा ? उन्होंने कहा कि आपके किए गए कर्म से अलग कोई भगवान नहीं है।

यहां याद रखें कि यदि किसी के जीवन में कुछ अच्छा हुआ है, अप्रत्याशित लाभ हुआ है, और कुछ भोग प्राप्त हुए हैं, तो इसका मतलब है कि अतीत में उसने पुण्य कार्य, दान और अच्छे कर्म किए थे, जिसके परिणामस्वरूप वह अब उसका फल भोग रहा है। उसे इस बात का पता नहीं है। उसे यह नहीं पता कि पिछले जन्म में क्या हुआ था। इसलिए, जब सब कुछ अच्छा चल रहा होता है, तो वह सोचता है, अगर जीवन सुचारु रूप से चलता है, सब कुछ अनुकूल होता है, तो वह सब भगवान की कृपा मानता है।

इसी तरह, एक और व्यक्ति ने गलतियाँ कीं, पाप किए, हिंसा की, जीवन में मांस खाया, जीवों को नुकसान पहुँचाया। वह भविष्य में या अगले जन्म में कठिनाइयों और दुखों का अनुभव करेगा। जब ऐसी कठिनाइयाँ और दुख आते हैं, तो वह स्वाभाविक रूप से सोचता है कि भगवान दयालु नहीं हैं।

वह कितना भी चाहे, कितना भी करे, कितने भी मंदिरों में जाए, कहीं भी जाए, वे कठिनाइयाँ आती ही रहती हैं। तब वह कहता है कि भगवान को अभी भी मुझ पर दया नहीं आई है। यहाँ जब उसे बुरा होता है, तो वह कहता है कि भगवान को दया नहीं आई, जिसका अर्थ है कि वह मानता है कि उसका पूरा जीवन भगवान पर निर्भर करता है। लेकिन वशिष्ठ ने कहा कि ''तुम्हारे कर्मों से अलग कोई भगवान नहीं है।'' इसलिए, पाप करके यह सोचना कि भगवान को दया नहीं आई, तुम्हारी मूर्खता है।

इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि तुमने जो किया है, उससे अलग कोई प्रारब्ध नहीं है। तो प्रारब्ध क्या है ? जन्म लेने के बाद आप कई

पुण्य करते हैं, पाप करते हैं, अच्छा करते हैं, बुरा करते हैं। और कर्मों के फल जो अनुभव किए जाने हैं, उन्हें अनुभव करने के बाद जो बचते हैं, वे आपके शरीर छोड़ने पर आपके खाते में दर्ज हो जाते हैं। इसे ''आकाशिक रिकॉर्ड्स'' कहते हैं। हिंदू धर्मशास्त्रों में इसे ''चित्रगुप्त की चिट्ठा'' कहते हैं। इसे यम धर्मराज के पास रहने वाले चित्रगुप्त की पुस्तक कहते हैं।

यानी हर किसी का एक खाता होता है। उसमें आपके किए गए सभी कर्म दर्ज होते हैं। इस तरह दर्ज किए गए सभी कर्मों को संचित कर्म कहते हैं। फिर से जब आप जन्म लेते हैं, तो उन कर्मों में से कुछ कर्मों को चुनकर फिर से पृथ्वी पर शरीर लेकर आते हैं। इस तरह अनुभव करने के लिए लाए गए कर्मों को ही प्रारब्ध कर्म कहते हैं।

बहुत से लोगों को यह समझ नहीं आता और वे इस प्रारब्ध शब्द का उपयोग परंपरा के रूप में करते रहते हैं। अगर कोई अपनी बेटी को कष्ट सहते हुए देखता है, तो वे कहते हैं कि उसका प्रारब्ध ऐसा जल गया, उसका जीवन ऐसे नष्ट हो गया, सब कुछ कष्ट ही है।

लेकिन यहाँ प्रारब्ध किस पर आधारित है, तो वह पिछले जन्मों में किए गए उन पाप कर्मों, उन बुरे कर्मों, उन दुष्कर्मों का फल ही है जो अब कष्टों के रूप में अनुभव करना पड़ रहा है। इसलिए, उनके किए गए कर्मों से अलग कोई प्रारब्ध या भगवान नहीं है। उन कर्मों को ही तुम भगवान मानते हो। उन कर्मों को ही तुम प्रारब्ध मानते हो, ऐसा वशिष्ठ ने कहा है।

इतना ही नहीं, बहुत से लोग कहते हैं कि भगवान ने मेरी किस्मत ऐसे लिखी है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि ब्रह्मा ने मेरी किस्मत ऐसे लिखी है। पत्री जी क्या कहते हैं? कोई तुम्हारी किस्मत नहीं लिखता, तुमने जो कर्म किए हैं, जन्म लेने से पहले, तुमने जो कर्म चुने हैं, वही

तुम्हारे जीवन में लिखे जाते हैं, उन्होंने कहा।

इसलिए पत्री जी कहते हैं कि बोलते समय बहुत सावधानी से बोलो। **''तुम्हारे शब्द भी कर्म हैं। तुम्हारी जुबान ही तुम्हारी किस्मत है'',** ऐसा कहते हैं। तुम जो भी बोलते हो, वह तुरंत रिकॉर्ड हो जाता है। जब समय आता है, तो उसका फल अनुभव करते हैं। इसलिए अपनी वाणी का बहुत सावधानी से उपयोग करने को कहते हैं। जागरूकता के साथ बोलने को कहते हैं। वे कहते हैं कि किसी पर टिप्पणी न करें, आलोचना न करें, तुम्हारे मुँह से अपशब्द नहीं निकलने चाहिए, कहते हैं।

यहाँ कोई भी भगवान किसी के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता। उन्होंने सभी को स्वतंत्रता दी है। वह कहते हैं कि अपनी मर्जी से करो। इसलिए आप देखें, महाभारत युद्ध के समय अर्जुन अपने दादा, रिश्तेदारों, अपने गुरु को मारना नहीं चाहता था और उन सभी को देखकर कृष्ण के सामने वहीं बैठ गया कि मैं युद्ध नहीं कर सकता। तब कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। उन्होंने अर्जुन को अपार ज्ञान का उपदेश दिया।

अंत में उन्होंने क्या कहा? मैंने उपदेश दिया है, इसलिए तुम्हें मेरे कहे अनुसार कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। अपनी मर्जी से करो। **''यथा इच्छसि तथा कुरु''**, उन्होंने कहा। यानी मैंने अपना काम कर दिया, अब अगर तुम युद्ध करना चाहते हो तो करो, नहीं तो अगर तुम जाना चाहते हो तो जाओ, यह तुम्हारी मर्जी है, उन्होंने कहा।

भगवद गीता में जो कहा गया है वह सत्य है। इसलिए आपको अच्छा करने या बुरा करने की स्वतंत्रता है, सब कुछ आपकी मर्जी है। लेकिन आपको उसके फल की इच्छा करने का अधिकार नहीं है। यह हर किसी को याद रखना चाहिए।

यह मेरी मर्जी है, ऐसा कहकर मनमानी करना ठीक नहीं है। सृष्टि के अनुसार करना चाहिए, वह धर्म के अनुसार होना चाहिए, वह

भविष्य में आपको लाभ पहुँचाने वाला होना चाहिए। उसका फल आपको कष्ट पहुँचाने वाला नहीं होना चाहिए।

इसलिए, केवल अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगने से कुछ नहीं मिलेगा। यदि आपकी इच्छा पूरी नहीं होती है, तो आप बहुत निराश महसूस करेंगे और महसूस करेंगे कि आपको नुकसान हुआ है। इसलिए, यह जान लें कि आपको मांगने पर नहीं, बल्कि करने पर ध्यान देना चाहिए।

आइए देखें कि भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इन इच्छाओं के बारे में क्या कहा है। उन्होंने क्या कहा ? उन्होंने निष्काम कर्म करने के लिए कहा। यानी बिना किसी इच्छा के कोई भी काम करने के लिए कहा।

श्लोक।। कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम ।

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ।।(भ.गी.5-12)

तात्पर्यः- निष्काम कर्मयोगी, जब वह यह मानकर कर्मफल का त्याग करता है कि उसके कर्म केवल परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए हैं, अपने लाभ के लिए नहीं, तो वह मोक्ष रूपी शांति प्राप्त करता है। इसके विपरीत, जो फल की प्राप्ति के लिए कर्म करता है, वह उस फल में आसक्त होकर संसार के बंधनों में बंध जाता है।

यदि आप पूजा करना चाहते हैं, तो करें। लेकिन इच्छाओं के लिए न करें। वह जानते हैं कि आपको आपके कर्मों के लिए क्या देना है, और यदि आप नहीं भी मांगते हैं, तो भी वह आपको वह देंगे जो आपको मिलना चाहिए। सृष्टि में यह व्यवस्था है। आपको यह जानना चाहिए कि इसके लिए मांगने की आवश्यकता नहीं है।

काम का अर्थ है इच्छा, और निष्काम का अर्थ है बिना इच्छा के करना। निष्काम कर्म ही करने के लिए कह गया है।

श्लोक।। यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जितः।।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं त माहुः पण्डितं बुधाः (भ.गी. 4-19)

अर्थात, जिसके सभी कर्म, अर्थात किए गए कार्य, इच्छाएं और संकल्प रहित होते हैं, और जिसके कर्म ज्ञान रूपी अग्नि से भस्म हो जाते हैं, विद्वान लोग उसे पंडित कहते हैं। यहां पंडित का अर्थ है ज्ञान में परिपक्व व्यक्ति। इसलिए, किसी के भी कर्म इच्छा और संकल्प रहित होने चाहिए।

इच्छा का अर्थ है बिना प्रयास के भगवान से मांगना। संकल्प का अर्थ है जो मांगा गया है उसे प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयास। यदि हम ऐसा प्रयास करते हुए भी कुछ मांगते हैं, तो उसका भी कोई लाभ नहीं है। श्री कृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आपको वह करना चाहिए जो आपको करना है, और जो मिलना है वह अपने आप मिल जाएगा।

श्लोक।। कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि (भ.गी.2-47)

तात्पर्यः- आपको कर्म करने का अधिकार है। लेकिन आपको कर्मफल की इच्छा करने का अधिकार नहीं है। इतना ही नहीं, कर्मफल का कारण भी न बनें। कर्मों को छोड़ने में भी रुचि न दिखाएं।

इतना ही नहीं, उन्होंने इच्छाओं के बारे में और क्या कहा? उन्होंने कहा कि आपको कर्म करने का अधिकार है, लेकिन कर्मफल की आशा करने का अधिकार नहीं है। आप देखें, बहुत से लोग मंदिर जाते हैं। कुछ फल देते हैं, कुछ धन देते हैं, कुछ उपहार देते हैं। और इच्छाएं मांगते हैं। श्री कृष्ण ने भगवदगीता में कहा है कि यहां आपको देने का अधिकार है, लेकिन मांगने का अधिकार नहीं है।

श्लोक।। न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः

न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते (भ.गी.2-14)

तात्पर्य:- भगवान मनुष्यों के लिए न तो कर्तृत्व, न कर्म, और न ही कर्मफल का संबंध उत्पन्न करते हैं, क्योंकि! वे प्रकृति में उत्पन्न पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण ऐसा व्यवहार करते हैं।

उन्होंने क्या कहा? उन्होंने कहा कि कोई भी काम बिना कर्तृत्व भाव के करना चाहिए। कर्तृत्व भाव का अर्थ है 'मैं कर रहा हूँ' का भाव भी न हो। आमतौर पर हम सब क्या करते हैं? हम कहते हैं कि 'मैं कर रहा हूँ', 'मैंने यह दिया', 'मुझे यह चाहिए'। उन्होंने कहा कि 'मैं' को ही हटा देना चाहिए। आपको जो करना है वह करें। लेकिन उन्होंने कहा कि कर्तृत्व भाव के बिना करें।

देखें तो, बहुत से लोग मंदिरों में जाते हैं, पूजा करवाते रहते हैं। पूजा करवाने से पहले संकल्प करवाते हैं। यानी 'मैं यह पूजा कर रहा हूँ, अष्टोत्तरम कर रहा हूँ, अभिषेक कर रहा हूँ'। इसलिए, 'मुझे इस प्रकार के लाभ प्राप्त हों' ऐसी इच्छा करते हैं। जब पुजारी 'आयु आरोग्य ऐश्वर्याभिसिद्धयर्थं, इष्ट काम्याभिफलसिद्धयर्थं' कहते हैं, तो यदि उन्हें कोई और इच्छाएं होती हैं तो वे भी बता देते हैं।

वे वहीं नहीं रुकते। वे उन पुजारियों से पहले ही गोत्र और नाम भी बता देते हैं। यानी नाम और गोत्र भी बता देते हैं। क्यों? क्योंकि वे कहते हैं कि 'इस गोत्र और इस नाम वाला मैं, इन लाभों की आशा में यह पूजा कर रहा हूँ कि आप यह देंगे'। लेकिन भगवदगीता में उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि कर्तृत्व भाव के बिना करें। उन्होंने कहा कि 'मैं' को हटा देना चाहिए।

इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि कर्मफल त्याग सबसे महान है। हम कोई भी कर्म फल के लिए करते हैं। लेकिन उन्होंने क्या कहा? उन्होंने कहा कि आप कोई भी कर्म करें, उस कर्म के फल को छोड़ दें। उन्होंने कहा कि यह सब से महान है। और 12वें अध्याय में 12वें

श्लोक के माध्यम से क्या कहा गया है ?

श्लोक।। श्रेयो हि ज्ञान मभ्यासात् ज्ञाना ध्यानं विशिष्यते ।

ध्यानात्कर्म फलत्याग स्त्यागा च्छांति रनंतरम (भ.गी.12-12)

तात्पर्य:- अर्थात अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है, ध्यान से कर्मफल त्याग और भी श्रेष्ठ है। ऐसे कर्मफल त्याग से शांति मिलती है, यह यहाँ कहा गया है।

अर्थात हमारे द्वारा किए गए कर्मों के फल का त्याग करना महान कहा गया है। अर्थात उन्होंने कहा कि तुम जो भी करो, कुछ भी मत चाहो। लेकिन जब भगवान ने इच्छाओं को मना किया, तो मनुष्य इच्छाओं के लिए ही आराधना कर रहे हैं।

बिना इच्छाओं के कौन आराधना करता है ? थोड़ी सी भी परेशानी आती है तो दोनों हाथ जोड़ लेते हैं। इसलिए बिना इच्छाओं के कोई कुछ नहीं करता। और इससे कोई फायदा नहीं है। आखिर इस ध्यान में आने वाले भी बहुत से लोग रोगों के ठीक होने और इच्छाओं के पूरा होने के लिए करते हैं। बताने वाले भी कहते हैं कि तुम्हारी समस्या दूर हो जाए, तुम्हारी बेटी की शादी हो जाए, तुम्हारे बेटे को नौकरी मिल जाए, घर बन जाए, या कार खरीद लो, ऐसा संकल्प करके ध्यान करो, तुम्हारी जो भी इच्छा हो, उसे मांगकर संकल्प करो, तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी, लेकिन ऐसी बातों से कोई फल नहीं मिलता।

इसलिए पत्री जी मांगने को नहीं कहते। वे बताते हैं कि क्या करना चाहिए। और अगर आप नहीं भी मांगते हैं, तो भी आपको ध्यान करने से आपका अपेक्षित फल मिलेगा। इसलिए ध्यान करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इच्छाओं से तुम्हें क्या लेना-देना ? संकल्पों से तुम्हें क्या लेना-देना ? यह वे बहुत स्पष्ट रूप से बताते हैं। ध्यान से बढ़कर कुछ भी नहीं है, यह उत्तर गीता में भी श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है। उन्होंने क्या

कहा ?

''पूजा कोटि समं स्तोत्रम'' कहा।

अर्थात उन्होंने कहा कि करोड़ों पूजाएं एक स्तोत्र के बराबर हैं। अर्थात अगर तुम करोड़ों घंटे पूजा करते हो, तो वह एक घंटे स्तोत्र पढ़ने के बराबर है। अर्थात एक जन्म भर पूजा करने पर भी जो फल नहीं मिलता, वह एक घंटे स्तोत्र पढ़ने से मिलता है। स्तोत्र इतना महान है, उन्होंने कहा। उन्होंने और क्या कहा ?

''स्तोत्र कोटि समो जपम'' कहा।

अर्थात उन्होंने कहा कि ऐसे करोड़ों स्तोत्र एक जप के बराबर हैं। अर्थात अगर करोड़ों घंटे स्तोत्र पढ़ते हो, तो वह एक घंटे जप करने के बराबर है। इससे आप एक बार समझ लीजिए कि एक घंटे जप करने से एक जन्म भर स्तोत्र पढ़ने जैसा होता है, उन्होंने कहा। उन्होंने और क्या कहा ?

''जपकोटि समं ध्यानम'' कहा।

अर्थात उन्होंने कहा कि करोड़ों घंटे जप करने से एक घंटे ध्यान के बराबर है। और करोड़ों घंटे जप का मतलब है एक जन्म भर। एक जन्म भर जप करने पर भी जो फल नहीं मिलता, वह एक घंटे ध्यान में मिलता है।

और इससे हम श्रीकृष्ण भगवान द्वारा कहे गए इस श्लोक के माध्यम से जान सकते हैं कि ध्यान कितना महान है। जो करना चाहिए, वह करने से जो पाना चाहिए, वह मिलता है। इसलिए वे कहते हैं कि सबसे शक्तिशाली वह ध्यान करो। पत्री जी के पास कोई भी किसी भी समस्या के साथ आता है, तो वे कहते हैं कि ध्यान करो। जो इसे समझता है, उसे और कुछ नहीं चाहिए, उसे इच्छाओं और संकल्पों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। जो करना चाहिए, वह करने से ही वह फल आसानी से प्राप्त कर

सकता है।

श्रीकृष्ण ने एक घंटे के ध्यान को एक जन्म के जप, करोड़ों जन्मों के स्तोत्रों और करोड़ों-करोड़ों जन्मों की पूजा के बराबर क्यों कहा ? इतना अंतर क्यों है ? क्योंकि ये पूजाएं शरीर से की जाती हैं। स्तोत्र मुंह से किए जाते हैं, जप मन से किए जाते हैं, ध्यान मन रहित स्थिति में किया जाता है। जब मन नहीं होता, तो क्या होता है ? अर्थात आत्मा अर्थात भगवान ही होते हैं। यहाँ आप याद रखें कि शरीर से वाणी श्रेष्ठ है, वाणी से मन श्रेष्ठ है, मन से आत्मा और भी श्रेष्ठ है।

आत्मा अर्थात साक्षात भगवान! आत्मा करोड़ों-करोड़ों वर्षों से आती रही है, और करोड़ों वर्षों तक रहेगी। आत्मा का न जन्म है, न मृत्यु। ऐसी आत्म-संबंधी साधना ही ध्यान है। यह हर किसी को समझना चाहिए। इसलिए आप जो भी करें, फल मांगने की आवश्यकता नहीं है।

6.आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए

जीवन में कभी भी इच्छाओं के गुलाम नहीं बनना चाहिए, आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए। शरीर की कुछ आवश्यकताएं होती हैं। भोजन अर्थात खाना, घर अर्थात निवास, वस्त्र अर्थात कपड़े, साथी अर्थात पत्नी या पति अनिवार्य हैं।

आप पत्नी की इच्छा करें, इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन अगर आप ऐश्वर्या राय चाहते हैं, तो वह कहाँ से आएगी? पति की इच्छा करें, लेकिन अगर आप शाहरुख खान ही चाहते हैं, तो वह कहाँ से आएगा? अपनी हैसियत के अनुसार, अपनी स्थिति के अनुसार एक पत्नी प्राप्त कर सकते हैं, एक पति प्राप्त कर सकते हैं।

इसी तरह घर। आपको धूप से, बारिश से, सुरक्षा चाहिए, रात में आराम करना है, खाना खाना है, कुछ भी करना है तो एक घर होना चाहिए। इसलिए अपनी हैसियत के हिसाब से रहने के लिए कोई न कोई घर ज़रूर होना चाहिए। तो इस तरह ज़रूरतें पूरी करनी चाहिए लेकिन इच्छाओं के पीछे नहीं भागना चाहिए।

इच्छाओं में

1.कुछ ऐसे भी हैं जो धर्म युक्त हैं।

2.कुछ ऐसे भी हैं जो अधर्म युक्त हैं।

अगर धर्म युक्त हैं तो निश्चित रूप से उससे आपको कोई नुकसान नहीं है। अधर्म युक्त इच्छाओं के कारण उनके परिणामस्वरूप बाद में आपको कष्ट झेलने पड़ेंगे। इसलिए अगर व्यापार करने की इच्छा है, पैसा कमाने की इच्छा है तो धर्म से करें। ऐसा नहीं कि अधर्म से व्यवहार करें, अन्याय से कमाएँ, दूसरों को सताएँ, धोखा दें, दुख पहुँचाएँ और ऐसा कमाएँ तो बाद में इसका दस गुना आपको नुकसान उठाना पड़ेगा।

उदाहरण के लिए, यदि आप डॉक्टर के पेशे में हैं तो आपको धर्म से करना चाहिए। यदि आप किसी मरीज़ के केस को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं, झूठा बिल बनाते हैं और अन्यायपूर्ण तरीके से पैसे लेते हैं तो भविष्य में आपको इसका पूरा फल भुगतना पड़ेगा। आपके सभी पाप रिकॉर्ड हो जाते हैं, और आपको उसका भयानक परिणाम भुगतना पड़ेगा।

यदि आप चुनाव में खड़े होते हैं तो आपको धर्म से रहना चाहिए। यदि आप पद का दुरुपयोग करके, अधिकार का गलत इस्तेमाल करके, गलत तरीके से और अवैध रूप से कमाना चाहते हैं तो आपको उसका परिणाम भुगतना ही पड़ेगा। सभी के लिए उपयोगी सेवा करें, इससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

इसी तरह, किसी भी क्षेत्र में, धर्मयुक्त इच्छाएँ बुरा नहीं करतीं, बल्कि लाभ भी पहुँचाती हैं। अधर्मयुक्त कार्य आपको नुकसान पहुँचाते हैं।

बहुत से लोग अपनी इच्छाओं के लिए भगवान का सहारा लेते हैं। कुछ लोगों की इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं। जब वे पूरी नहीं होतीं तो वे क्या करते हैं ? जिसका कोई सहारा नहीं होता, उसका भगवान ही सहारा होता है, ऐसा कहकर वे भगवान का सहारा लेते हैं। दुनिया भर में लोग अपनी पसंद के भगवान का, अपनी पसंद के तरीके से सहारा लेते हैं, उनकी पूजा करते रहते हैं, यह स्वाभाविक हो गया है।

जिस भगवान का ये लोग सहारा ले रहे हैं, उन्होंने सृष्टि में कुछ धर्म, नियम, सिद्धांत स्थापित किए हैं और सृष्टि उन्हीं के अनुसार चलती है। आपको उन्हीं धर्मों के अनुसार चलना चाहिए, यदि आप धर्मयुक्त रहेंगे तो सब कुछ अच्छा होगा, यदि आप अधर्मयुक्त रहेंगे तो सब कुछ नुकसान होगा।

महाभारत देखें तो कौरवों ने अधर्म से जीवन जिया, पांडवों ने

धर्म से जीवन जिया। भारत युद्ध इन दोनों के बीच का युद्ध नहीं था। यह धर्म और अधर्म के बीच का युद्ध था। शुरुआत में अधर्म से व्यवहार करने वाले कौरवों को लगा कि उन्होंने पांडवों का राज्य भी प्राप्त कर लिया है, उन्हें लाभ हुआ है। लेकिन अंत में वे पूरी तरह से नष्ट हो गए।

धर्म का पालन करने वाले पांडवों को शुरुआत में नुकसान हुआ लगा, लेकिन अंत में वे पूरा राज्य प्राप्त कर सके। कोई भी हो, वहाँ राज्य और राजा नहीं होते।

आप भी वैसे ही हैं, यदि आप अधर्म से व्यापार करते हैं, अन्याय से किसी का छीनते हैं तो यही होगा। इसलिए जिस भगवान की सब पूजा करते हैं, उसी भगवान ने धर्मों को स्थापित किया है। सृष्टि उन्हीं नियमों के अनुसार चलती है।

इसी तरह उन्होंने कुछ सिद्धांत भी रखे हैं। उनमें से एक कर्म सिद्धांत है। यानी अब आप जो भी करेंगे, वैसी ही योग्यता प्राप्त करेंगे, उसका फल बाद में भुगतेंगे। लेकिन आप दुनिया में देखते हैं कि बहुत से लोग भगवान से इच्छाएँ माँगते रहते हैं। अगर यह सवाल पूछा जाए कि क्या भगवान इच्छाएँ पूरी करते हैं तो ऐसे लोग भी हैं जो कहते हैं कि क्यों नहीं करते ?

इतना ही नहीं, कुछ लोग यह भी कहते हैं कि हमने पूजा की, या प्रार्थना की, या नमाज़ पढ़ी, कुछ इच्छाएँ पूरी हुईं। वे यह नहीं कहते कि सभी पूरी हुईं। तो कुछ क्यों पूरी हुईं ? कुछ इच्छाएँ क्यों पूरी नहीं हुईं ? इसी तरह कुछ लोगों की पूरी हुईं, बहुत से लोगों की पूरी नहीं हुईं। तो इनकी क्यों पूरी हुईं ? बहुत से लोगों की क्यों पूरी नहीं हुईं ? इसका कारण थोड़ा गहराई से विश्लेषण करने पर समझ में आता है।

सृष्टि में कुछ सिद्धांत हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कर्म सिद्धांत है। अतीत में आपने जो किया है, उसी का फल अब आप अनुभव कर रहे

हैं। अतीत का मतलब इस जन्म का पिछला जीवन हो सकता है या पिछले जन्मों का हो सकता है। तब आपने जो पुण्य कर्म किए थे, उसी के फल के कारण आप। अनजाने में अब अनुभव कर रहे हैं। वह धन के रूप में हो सकता है, किसी और रूप में हो सकता है। तो जब ऐसा कुछ होता है तो मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ, और वह भगवान मेरी इच्छा पूरी करता है, ऐसा वे सोचते रहते हैं।

इसी तरह, कुछ अन्य लोगों को अतीत में किए गए पापों के परिणामस्वरूप अब कष्ट, बीमारियाँ, बहुत सी समस्याएँ आती हैं। वे उन्हें सहन नहीं कर पाते और पूजा-पाठ, प्रार्थनाएँ करते रहते हैं। ऐसा करते रहने पर कुछ लोगों की वे पूरी होती हैं, कुछ की नहीं होतीं। और ये पाप ज़्यादा करने वाले भी हैं, कम करने वाले भी हैं। ज़्यादा करने वालों को ज़्यादा दिन भुगतना पड़ता है, कम करने वालों को कम दिन भुगतना पड़े तो काफ़ी है।

यानी मांस खाने को ही देख लें। कुछ लोग रोज़ तीनों टाइम खाते हैं, कुछ लोग दिन में एक बार ही खाते हैं। या फिर हफ़्ते में एक बार खाते हैं, या महीने में एक बार खाते हैं, और कुछ लोग कभी-कभी फ़ंक्शन में खाते हैं। ऐसे ज़्यादा खाने वाले भी होते हैं, कम खाने वाले भी होते हैं। ज़्यादा पाप करने पर ज़्यादा कष्ट भोगना पड़ता है। कम करने पर कम कष्ट भोगना पड़ता है। कष्ट उसे भी आता है, इसे भी आता है, लेकिन दोनों भगवान से प्रार्थना करते हैं।

कम पाप करने वाले का कष्ट कुछ ही दिनों में चला जाता है। वह सोचता है कि मैंने भगवान से प्रार्थना की इसलिए मेरा कष्ट चला गया, उन्होंने कृपा की, उनकी दया से मेरा कष्ट चला गया और वह उन पर और विश्वास करने लगता है। वहीं ज़्यादा पाप करने वाला कितनी भी प्रार्थना करे, इस जैसा कुछ भी करे, उसका कष्ट नहीं जाता, वह निराश हो जाता

है।

कभी-कभी अगर वह सालों तक रहता है तो वह उस भगवान को छोड़कर नए भगवान की शरण लेता है। उस धर्म को छोड़कर नया धर्म अपनाता है। तो अगर भगवान की आराधना करने से इच्छा पूरी होती है तो इसका कारण यही है। यह बहुत से लोगों को समझ नहीं आता।

वह किसी की इच्छाएँ पूरी नहीं करते। अगर वह इच्छाएँ पूरी करने वाले होते तो सबकी इच्छाएँ पूरी करते। उनके लिए सब समान हैं! किसी पर राग-द्वेष नहीं होता। अपने लोगों पर अनुराग और अपने न मानने वालों पर द्वेष कुछ भी नहीं होता, उनके लिए सब एक समान हैं। सब उनके ही रूप हैं इसलिए उनमें किसी भी तरह का कोई अंतर नहीं होता।

उन्होंने ऐसी व्यवस्था की है कि जो जैसा करता है, उसे वैसा ही मिलता है। इसलिए पाने के लिए इच्छा करना नहीं, बल्कि करना पड़ता है। करने से मिल सकता है। अगर यह समझ आ जाए तो आप निश्चित रूप से उस भगवान की राय के अनुसार जीएंगे, और अगर आप ऐसे जीएंगे तो निश्चित रूप से लाभ प्राप्त करेंगे, इसलिए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भगवान इच्छाएँ पूरी नहीं करते।

आप देखिए, अब पृथ्वी पर आप देखें तो कितने ही मनुष्य हैं, सभी उस भगवान को मानने वाले हैं। वे कहते रहते हैं कि वह महान हैं, शक्तिशाली हैं, उनके लिए सब समान हैं। तो जब भगवान के लिए सब समान हैं तो क्या सभी का जीवन एक जैसा है? यानी नहीं है।

असल में एक के जीवन का दूसरे के जीवन से कोई संबंध नहीं है।

कुछ लोगों के पास करोड़ों हैं और वे अच्छी ज़िंदगी जी रहे हैं। कुछ लोग पूरी तरह से भिखारी हैं और भीख माँग रहे हैं, कुछ लोग दुखों और कष्टों से बहुत परेशान हैं। कुछ लोग स्वस्थ हैं, कुछ लोग बीमारियों

से ग्रस्त हैं। कुछ लोग अच्छी बुद्धि वाले हैं, कुछ लोग बिना किसी बुद्धि के हैं।

किसी को पढ़ाई आती है, किसी को पढ़ाई नहीं आती। किसी के पास अच्छी नौकरी है, किसी के पास नौकरी ही नहीं है। किसी के पास अच्छा स्टैटस है, किसी के पास अच्छा स्टैटस नहीं है। किसी के पास पद है, किसी के पास पद नहीं है। कोई गाने गाने में निपुणता दिखाता है। कोई खेलों में निपुणता प्रदर्शित करता है। ऐसे देखने पर कई तरह के अंतर दिखाई देते हैं।

कुछ लोग शारीरिक अक्षमता के साथ कई कमियों से ग्रस्त हैं। तो क्या वास्तव में ऐसी कमियों वाले लोग यह इच्छा करके कि मुझे ये कमियाँ न हों, ठीक नहीं हो सकते ? क्यों नहीं कर सकते ? कुछ ही लोग क्यों ठीक हैं ? सब क्यों ठीक नहीं हैं ? सब इंसान ही तो हैं, इतने अंतर क्यों हैं ? तो अगर भगवान के लिए सब समान हैं, अगर भगवान सबकी इच्छाएँ पूरी करते हैं तो ऐसे अंतर क्यों होंगे ? यानी इससे हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि भगवान इच्छाएँ पूरी नहीं करते। इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि हमारा जीवन हमारे पिछले कर्मों पर ही आधारित है।

इसलिए कहा गया है कि ''जिसने जैसा किया, उसे वैसा ही मिलता है''। लेकिन यह नहीं कहा गया कि ''जिसने जैसा चाहा, उसे वैसा ही मिलता है''। यानी अच्छा करने वाले के साथ अच्छा होता है। बुरा करने वाले के साथ बुरा होता है लेकिन जो चाहे वह, जितना चाहे उतना चाहकर पाने की व्यवस्था नहीं है। इसलिए यह भ्रम में न रहें कि चाहने से भगवान सब कुछ दे देंगे।

उदाहरण के लिए, हम सभी को ए.टी.एम। पता है, एनी टाइम मनी। बैंक ए.टी.एम. में कोई भी जा सकता है। वहाँ ए.टी.एम. में कार्ड डालकर ज़रूरत के हिसाब से पैसे निकालते रहते हैं। तो क्या सब निकाल

सकते हैं ? यानी नहीं निकाल सकते। बैंक में अगर उसके खाते में पैसे हैं तभी वह कार्ड डालकर कभी भी पैसे निकाल सकता है। यानी उस कार्ड में पात्रता होनी चाहिए। पात्रता वाले को ही वह पैसा मिलता है। पात्रता न होने पर उस कार्ड से पैसा नहीं आता।

तो अगर पैसा नहीं आया तो वहीं बैठकर उस ए.टी.एम। की पूजा करने से आएगा क्या ? यानी नहीं आएगा। आरती करने से आएगा क्या ? यानी नहीं आएगा।क्या नारियल तोड़ने से कुछ मिलता है ? नहीं मिलता। किसे मिलता है ? उसे मिलता है जो योग्य होता है। इतना ही नहीं, जितनी योग्यता होती है, उतना ही मिलता है। यह योग्यता कैसे आती है ? बैंक में पैसे जमा करने से आती है। पहले जितना जमा किया जाता है, उतना ही पाने की योग्यता होती है। इसलिए उसे उतना ही लेना चाहिए। यह बैंक द्वारा की गई व्यवस्था है।

यानी 5000 जमा करने पर 5000 मिलते हैं। 10,000 जमा करने पर 10,000 मिलते हैं। लेकिन 5000 जमा करके 10,000 मांगने पर नहीं मिलते। 5000 से एक रुपया भी ज्यादा मांगने पर नहीं मिलता।

मनुष्य की बुद्धि से ऐसी व्यवस्था की गई है। वहां कोई मैनेजर नहीं होता, कोई कैशियर नहीं होता, कोई अकाउंटेंट नहीं होता। कोई न होने पर भी 24 घंटे में किसी भी समय जाने पर पैसे मिलते रहते हैं। ऐसी व्यवस्था की गई है।

थोड़ा सोचिए, जब मनुष्य इतना कर सकता है, तो क्या यह सृष्टि चलाने वाला, सृष्टि का आधार, सृष्टि का कारण, अनंत शक्ति वाला भगवान ऐसी व्यवस्था नहीं कर सकता ? निश्चित रूप से कर सकता है।

मनुष्य ने एक छोटा एटीएम बनाया, तो भगवान ने एक बहुत बड़ा एटीएम बनाया है। यह पृथ्वी ही एक एटीएम है। इस पृथ्वी पर आप जो कुछ भी करते हैं, उसे पाने की व्यवस्था उन्होंने की है। बैंक में पैसे

जमा करने पर एटीएम से निकालने की योग्यता आती है। इस पृथ्वी रूपी एटीएम में करने पर पाने की योग्यता आती है। जो कुछ भी करते हैं, वही मिलता है। अच्छा करने पर अच्छा, बुरा करने पर बुरा, खुशी देने पर खुशी मिलती है।

मनुष्य की बुद्धि से वे केवल पैसे तक ही खोज पाए। लेकिन भगवान के पास असीम बुद्धि और अनंत शक्ति है, इसलिए उन्होंने सब कुछ मिलाकर व्यवस्था की है। इसलिए जिसे जो चाहिए वह मिल सकता है, लेकिन उसे पाने के लिए पहले योग्यता होनी चाहिए। योग्यता कैसे आती है, तो करने से आती है।

देखिए, बैंक एटीएम में मैनेजर, कोई नहीं होता, यहां भी वैसे ही भगवान को रहने की कोई जरूरत नहीं है, व्यवस्था हो चुकी है। इसलिए एटीएम में कार्ड ले जाने पर पैसे निकालने की तरह यहां भी योग्यता प्राप्त करके प्राप्त किया जा सकता है।

इसलिए सृष्टि के नियमों के अनुसार व्यवहार करने पर आपको लाभ होगा। अन्यथा, अंधाधुंध इच्छाएं करने पर आपको नुकसान होगा, आप निराश होंगे, उस भगवान पर गुस्सा बढ़ेगा, विश्वास खो देंगे।

बहुत से लोग थोड़ी सी कठिनाई आने पर, थोड़ा सा नुकसान होने पर अपनी कठिनाई दूर करने, नुकसान न होने और अपना जीवन सुचारु रूप से चलने के लिए भगवान से प्रार्थना करते रहते हैं। तो क्या आपको आने वाली परेशानियों के बारे में भगवान को बताने पर ही पता चलता है? आप बताएं या न बताएं, उन्हें आपकी कठिनाइयों, आपके नुकसानों, आपकी परेशानियों के बारे में पता है। यहां आपको क्या करना है, वह यह है कि आपको वे कठिनाइयां क्यों आईं? वे परेशानियां क्यों आईं? यह जानना चाहिए। वे कठिनाइयां कैसे आईं, तो?

उनकी बनाई व्यवस्था के अनुसार आईं। तो उन्होंने ऐसी व्यवस्था

क्यों की! उन्होंने ऐसा निर्णय क्यों लिया! सोचने पर पता चलेगा।

भगवान की सृष्टि में सब कुछ न्यायपूर्ण है, अन्याय नहीं होता, सब कुछ हिसाब से होता है। सृष्टि में जो कुछ भी होता है, वह उनकी बनाई व्यवस्था के अनुसार ही होता है। यह विशेष रूप से किसी एक व्यक्ति को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता। इसलिए भगवान की सृष्टि में जो कुछ भी होता है, वह सब हमारे भले के लिए ही होता है, यह ज्ञानियों को समझ में आता है, अज्ञानियों को नहीं।

कठिनाइयां, बीमारियां, दुख आने पर वे मेरे लिए अच्छे कैसे हो सकते हैं? ऐसा कहते हैं, बहुत दुखी होते हैं। लेकिन उस भगवान के निर्णय का सभी को सम्मान करना चाहिए, आलोचना नहीं करनी चाहिए। वे कितनी भी पीड़ादायक क्यों न हों, सब कुछ अच्छे के लिए ही है, यह जानना चाहिए। हर चीज का कोई न कोई कारण होता है, यह जानना चाहिए।

आपको थोड़ा धैर्य से इंतजार करना चाहिए। आत्मज्ञानी इंतजार करते हैं, अज्ञानी भगवान के निर्णय की आलोचना करते रहते हैं। तो क्या भगवान ऐसा करने पर भी फिर से प्रार्थना कर रहे हैं, इसका मतलब है कि भगवान अच्छे हैं! तो अच्छे होने पर ऐसा क्यों करते हैं? थोड़ा सोचना चाहिए! जो कुछ भी होता है, वह हमारे भले के लिए ही होता है, यह हमें समझाने के लिए पत्री जी ने ''चीन में एक किसान'' की कहानी भी सुनाई।

एक किसान के पास एक घोड़ा था। वह घोड़ा एक दिन भागकर पास के जंगल में चला गया। जंगल में चले जाने पर भी वह किसान थोड़ा ज्ञानी होने के कारण उसकी ज्यादा परवाह नहीं की, दुखी नहीं हुआ। लेकिन गांव के सभी लोग आकर कहने लगे, क्या तुम्हारा घोड़ा चला गया? कितना दुर्भाग्य! कितना नुकसान हुआ! उन्होंने कहा। उन्होंने कितना

भी कहा, फिर भी वह दुखी नहीं हुआ।

10, 15 दिन बीतते-बीतते वह घोड़ा, जो चला गया था, 10 और घोड़ों के साथ उसके घर आ गया। तब भी वह किसान खुश नहीं हुआ, उछल-कूद नहीं मचाई। उसने सोचा कि एक घोड़ा चला गया था। मुझे 10 घोड़े मिल गए, ऐसा उसने कुछ नहीं सोचा। यह भी किसी कारण से हुआ होगा, ऐसा सोचकर वह सामान्य ही रहा।

फिर उसके आसपास के दोस्त, किसान सब आए। सबने क्या कहा? अरे, हमने सोचा था कि तुम्हें नुकसान हुआ है, लेकिन तुम्हें सच में नुकसान नहीं हुआ। तुम्हें तो और ज़्यादा फ़ायदा हुआ है। हमारे पास तो एक-एक घोड़ा ही है। तुम्हें अब 10 घोड़े मिल गए हैं, ऐसा उन्होंने कहा। फिर भी उसने कुछ नहीं कहा।

ऐसे ही कुछ समय बीतने पर, नए आए घोड़ों में से एक घोड़े पर चढ़कर किसान का बेटा सवारी के लिए गया। सवारी के लिए जाकर वह घोड़े से गिर गया और उसका पैर टूट गया। उस किसान को भगवान के निर्णय का सम्मान करना चाहिए, यह बात पता थी, क्योंकि वह ज्ञानी था, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा।

लेकिन यह बात जानने के बाद गाँव के सभी लोग आए और कहने लगे कि दस घोड़े आए थे, हमने सोचा था कि तुम भाग्यशाली हो, लेकिन घोड़ों से क्या फ़ायदा! अब तुम्हारे बेटे का पैर टूट गया है! इससे बड़ा नुकसान और क्या हो सकता है, ऐसा उन्होंने कहा। फिर भी किसान ने कुछ नहीं कहा।

कुछ समय बाद उस राज्य में युद्ध छिड़ गया। राजा ने राज्य के सभी युवाओं को सेना में भर्ती कर लिया। किसान के गाँव से भी सभी को ले गए। लेकिन इस किसान के बेटे का पैर टूटा होने के कारण वह युद्ध के लिए काम नहीं आ सकता था, इसलिए उसे छोड़कर बाकी सभी को ले

गए। तब भी उसने यह क्यों हो रहा है, ऐसा कुछ नहीं कहा।

लेकिन फिर किसान के सभी दोस्त आए और कहने लगे, ''अरे, तुम्हारे बेटे का पैर टूट गया था, हमने सोचा था कि तुम दुर्भाग्यशाली हो, क्योंकि हमारे बेटे तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन अब हमारे बेटों को युद्ध में ले गए हैं, हमें नहीं पता कि वे जीवित रहेंगे या मरेंगे। तुम्हारा बेटा आराम से तुम्हारे पास है। उस पैर के टूटने से तुम्हें अच्छा ही हुआ है।'' तो इस कहानी से हमें यह समझ में आता है कि जो कुछ भी होता है, वह हमारे अच्छे के लिए ही होता है।

अगर हम यह समझ लें, तो हम भगवान के निर्णय को खुशी-खुशी स्वीकार करेंगे, आलोचना नहीं करेंगे, बुरा-भला नहीं कहेंगे। वह कभी गलत निर्णय नहीं लेते। सब कुछ अच्छे के लिए ही होता है, यह हमें थोड़ा ज्ञान प्राप्त करने पर समझ में आता है।

तो आइए, पुराणों में बताई गई एक और कहानी जानते हैं। एक राजा एक फल काट रहे थे। काटते समय गलती से उनकी उंगली कट गई और बहुत खून निकला। उस उंगली पर कुछ बांधा गया। राजा दुखी थे, तो पास में मंत्री ने कहा, ''दुखी मत होइए, जो कुछ भी होता है, अच्छे के लिए ही होता है।'' राजा को बहुत गुस्सा आया। ''क्या, मेरी उंगली कट गई है और मैं इतना दुखी हूँ, और तुम कहते हो कि यह मेरे अच्छे के लिए है ?'' ऐसा कहकर उस मंत्री पर गुस्सा आया और कहा, ''इसे ले जाकर जेल में डाल दो।'' मंत्री को जेल में डाल दिया गया। जेल में डालने पर भी उसने कहा, ''यह भी किसी तरह से अच्छा ही है।'' राजा को और गुस्सा आया।

ऐसे ही कुछ समय बीतने पर, एक बार राजा शिकार पर गए। शिकार पर जाते समय वह सेना से दूर अकेले बिछड़ गए। तब उस जंगल में रहने वाले आदिवासी लोग किसी की बलि देने की सोच रहे थे, तो राजा

बहुत हष्ट-पुष्ट और अच्छे दिखे। ठीक है, राजा की बलि देते हैं, ऐसा सोचकर उन्हें ले गए। जब उन्हें वहां ले जाकर बलि देने का समय आया, तो उन्हें उनकी उंगली पर बंधी पट्टी दिखी। यह देखकर उन्होंने कहा, ''ऐसे व्यक्ति की हमें बलि नहीं देनी चाहिए। ऐसे लोग बलि देने के काम नहीं आते'', ऐसा कहकर उन्हें छोड़ दिया।

जब राजा राज्य में वापस आए, तब उन्हें मंत्री की बात समझ में आई कि ''जो कुछ भी होता है, हमारे अच्छे के लिए ही होता है।'' अब इस चोट लगने के कारण ही तो उन्होंने मुझे जीवित छोड़ दिया। इसलिए यह मेरे अच्छे के लिए ही हुआ, यह समझकर उन्होंने तुरंत मंत्री को जेल से बुलवाया। बुलवाकर कहा, ''तुमने जो कहा था, वह सही है, यह मेरे अच्छे के लिए ही हुआ। लेकिन तुम्हें जेल में डालने से तुम्हें क्या अच्छा हुआ?'' ऐसा उन्होंने पूछा।

तब मंत्री ने कहा, ''आपने मुझे जेल में डाला, इसीलिए आप अकेले जंगल में गए। अगर आपने मुझे जेल में नहीं डाला होता, तो मैं निश्चित रूप से आपके साथ होता। वे हम दोनों को पकड़ लेते। आपकी उंगली कटी थी, इसलिए उन्होंने आपको छोड़ दिया। लेकिन मैं पूरी तरह से ठीक था, इसलिए वे मेरी बलि दे देते। इस तरह, आपने मुझे जेल में डाला, इसीलिए मैं जीवित हूँ। तो यह मेरे लिए अच्छा ही हुआ, है ना!'' ऐसा उन्होंने कहा। तब राजा ने स्वीकार किया कि जो कुछ भी होता है, हमारे अच्छे के लिए ही होता है।

ऐसी बातें जानने और समझने के लिए ही बड़ों ने ऐसी कहानियों के माध्यम से बताया है। इसलिए, जब कोई कठिनाई आती है, तो सिर्फ रोते हुए बैठना नहीं चाहिए। आपको यह जानना होगा कि सब कुछ अच्छे के लिए होता है। यदि आपको कोई बीमारी या कठिनाई आती है, तो आप उससे कुछ सीखते हैं, अनुभव प्राप्त करते हैं, और यह आपको बहुत लाभ

पहुंचाता है।

पत्री जी ने कहा कि जब किसी महिला का बच्चा जन्म लेते ही मर जाता है, तो लोग सोचते हैं कि इसमें क्या अच्छा है ? इस तरह के नुकसान के कारण वह महिला यह जानने के लिए बहुत जांच करती है कि ऐसा क्यों हुआ। वह इससे बहुत कुछ सीखती है, बहुत कुछ जानने की कोशिश करती है और जानती है।

यह उसके लिए अच्छा है। इसलिए, हमें सब कुछ भगवान पर छोड़ देना चाहिए और उनके निर्णय का सम्मान करना चाहिए।

क्या होगा यदि हम भगवान के निर्णय के खिलाफ इच्छाएं करते हैं ? हम कितना नुकसान उठाएंगे ? आइए इस कहानी के माध्यम से जानते हैं।

एक गाँव में एक दंपति रहते थे। दुर्भाग्य से, उनकी नाक बहुत चपटी थी। उनकी नाक नहीं थी, बस छेद थे। हर कोई उनकी नाक देखकर हंसता था और कहता था, ''ये लोग ऐसे क्यों हैं ?'' तब दंपति बहुत दुखी होते थे और कहते थे, ''सब ठीक हैं, हमारी स्थिति ऐसी क्यों है, भगवान को हम पर दया नहीं है, भगवान ने हमें ऐसा क्यों बनाया ?''

तब उन्होंने सोचा कि किसी भी तरह से इससे बाहर निकलना चाहिए, और जिस भगवान ने हमें ऐसा बनाया है, उसी भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए, तपस्या करनी चाहिए। यह कहकर वे पास के जंगल में गए और तपस्या की। उनकी इच्छा प्रबल थी, इसलिए उन्होंने दृढ़ता से तपस्या की। तब भगवान प्रकट हुए और पूछा, ''तुम्हारी क्या इच्छा है ?''

तब उन्होंने कहा, ''हमें ये नाक नहीं चाहिए, हमें अच्छी नाक चाहिए।'' उन्होंने ''तथास्तु'' कहा। जब वे घर गए और देखा, तो उनके पूरे शरीर पर नाकें थीं। उन्हें यह पूछना चाहिए था कि ''हमें एक-एक अच्छी नाक दें।'' लेकिन उन्होंने कहा, ''हमें ये नाक नहीं चाहिए, हमें

अच्छी नाक चाहिए।'' अब उनके पूरे शरीर पर नाकें थीं। यह देखकर सब लोग और भी ज्यादा हंसने लगे।

तब उन्हें और भी अपमानित महसूस हुआ। वे फिर से दुखी हुए और सोचने लगे, ''यह क्या है, भगवान ने ऐसा क्यों किया?'' और फिर से तपस्या करने गए। जब उन्होंने तपस्या की, तो भगवान फिर से प्रकट हुए। इस बार उन्होंने क्या मांगा? उन्होंने वरदान मांगा कि ''हमें ये नाक नहीं चाहिए।'' क्या वह मना करेंगे? उन्होंने ''तथास्तु'' कहा। जैसे ही उन्होंने ''तथास्तु'' कहा, उनकी सारी नाकें गायब हो गईं। पहले जो एक नाक थी, वह भी चली गई।

अब नाक न होने के कारण उन्हें सांस लेने में दिक्कत हो रही थी, मुंह से सांस लेने में बहुत परेशानी हो रही थी। इस दर्द को सहन न कर पाने के कारण उन्होंने फिर से तपस्या की। जब भगवान प्रकट हुए, तो अंत में उन्होंने कहा, ''हे प्रभु, हमें कोई नाक नहीं चाहिए, हमें हमारी पुरानी नाकें ही वापस दे दें।'' यदि उन्होंने भगवान के निर्णय का सम्मान किया होता, तो यह सारी परेशानी नहीं होती, है ना?

यदि आप इसे समझे बिना सोचते हैं कि आप कुछ और बेहतर प्राप्त कर सकते हैं, और कुछ मांगते हैं, तो नुकसान आपका ही होगा। वह निर्माता सब कुछ सोच-समझकर करता है। उसे पता है कि किसे क्या देना है और किसे क्या नहीं देना है। हमें उनके निर्णय का सम्मान करना चाहिए और उसके अनुसार जीने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन यदि आप केवल यह चाहते हैं और वह चाहते हैं, तो अंत में नुकसान आपका ही होगा। इसलिए, आपको कभी भी भगवान के निर्णय की आलोचना नहीं करनी चाहिए, और ऐसी इच्छाएं नहीं करनी चाहिए जो नहीं करनी चाहिए। आपको यह जानना होगा कि यदि आप ऐसा करते हैं, तो नुकसान आपका ही होगा।

''जो है उसी से संतुष्ट रहना चाहिए''

इसी तरह, आइए एक और कहानी के माध्यम से जानते हैं कि यदि आप भगवान के निर्णय के खिलाफ इच्छा करते हैं तो आपको कैसे नुकसान होगा।

एक गाँव में एक बहुत गरीब आदमी रहता था। उसने अपनी गरीबी दूर करने के लिए तपस्या की, और भगवान प्रकट हुए और पूछा कि उसे क्या चाहिए? उसने कहा, ''मैं जो कुछ भी छूता हूँ, वह सोना बन जाना चाहिए।'' ''ओह... तथास्तु,'' उन्होंने कहा। ''ओह, यह बहुत अच्छा है,'' सोचते हुए उसने धीरे से एक मेज को छुआ, और वह सोना बन गई। उसने एक कुर्सी को छुआ, और वह सोना बन गई, इस तरह उसने सब कुछ सोना बना दिया।

कुछ देर बाद उसे भूख लगी और उसने खाने के लिए थाली को छुआ, तो वह भी सोना बन गई। उसने चावल को छुआ, तो चावल, और सब्जी को छुआ, तो सब्जी सोना बन गई। ''यह क्या है, मेरे जीवन में खाने के लिए भी कुछ नहीं बचा,'' उसने सोचा और फिर से तपस्या की और कहा, ''मुझे ऐसा कोई वरदान नहीं चाहिए, मुझे मेरा पुराना जीवन ही वापस दे दें, मुझे वह पर्याप्त है, तब सब ठीक था। अब कोई भी वरदान मेरे किसी काम का नहीं है,'' और उसने अपना पुराना जीवन ही मांगा।

इसी तरह, आइए एक कहानी के माध्यम से जानते हैं कि यदि आप जो है उससे संतुष्ट नहीं रहते हैं और लालच करते हैं तो क्या नुकसान होता है।

इसी तरह, एक और गरीब आदमी ने क्या किया कि जब कोई स्वामीजी उसके घर आए, तो उसने उन्हें बैठाया, उनकी सेवा की, उन्हें भोजन कराया और उन्हें बहुत खुश किया। उस स्वामीजी ने कहा, ''तुमने मेरे लिए यह सब किया है, मैं बहुत खुश हूँ। तुम कोई भी एक इच्छा मांगो,

मैं तुम्हें दूंगा।'' तब उस गरीब आदमी ने कहा, ''मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मैं जो कुछ भी चाहूँ वह सोना बन जाए और मेरी गरीबी दूर हो जाए।''

तब उन्होंने उसे एक छड़ी दी। उन्होंने कहा, ''यह छड़ी तुम जिस चीज़ को भी छूओगे, वह सोना बन जाएगी और तुम्हारी गरीबी दूर हो जाएगी।'' यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ। लेकिन यह केवल छह महीने तक ही काम करेगी। स्वामीजी ने कहा कि छह महीने के बाद इसकी शक्ति खत्म हो जाएगी। तब गरीब आदमी ने कहा, ''ठीक है स्वामी, इस बीच मैं अपनी गरीबी दूर कर लूंगा।'' स्वामीजी चले गए।

इस गरीब आदमी ने एक-दो लोहे के सामान को छुआ, वे तुरंत सोना बन गए और वह बहुत खुश हुआ। उसे लगा कि हमारे घर में ज्यादा सामान नहीं है! अगर मैं बाहर बाजार से ज्यादा लोहे का सामान खरीद लूं तो उन सबको बदल सकता हूँ! यह सोचकर वह बाहर बाजार गया। उस लोहे का सामान बेचने वाले ने कहा, ''बेटा, अभी लोहा थोड़ा महंगा है, अगर तुम एक महीने बाद आओगे तो तुम्हें बहुत कम दाम में मिलेगा।''

उस मूर्ख ने सोचा कि अभी इस पैसे से थोड़ा खरीदने के बजाय, अगर मैं कुछ दिन रुक जाऊं तो उसी पैसे से और ज्यादा खरीद सकता हूँ। यह सोचकर वह एक महीना रुका। फिर से जाकर पूछा तो उसने कहा कि अभी भी कम नहीं हुआ है बेटा, और दो महीने लगेंगे। ज्यादा खरीदने पर ज्यादा सोना बना सकता हूँ, इस आशा में वह इंतजार करता रहा। आखिरकार छह महीने बीत गए।

वह लोहा लाया और उन्हें छुआ, लेकिन वे वैसे ही रहे। कुछ भी नहीं बदला। उसने सोचा कि अगर मैंने तभी सोना बना लिया होता जब मेरे पास था, तो अच्छा होता। उसने सोचा था कि वह सारा लोहा खरीदकर उसे बदल देगा। उसने बहुत दुख महसूस किया कि वह लालच में पड़कर कितना नुकसान उठा चुका है।

इस तरह अनावश्यक इच्छाएं करने से बहुत नुकसान होता है। इसलिए जो है उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। जो लोग भगवान द्वारा दिए गए से संतुष्ट होकर जीते हैं और उसमें से कुछ लोक कल्याण के लिए खर्च करते हैं, उनका जीवन धन्य हो जाता है। इसके बजाय, अगर वे लालच में पड़कर अनावश्यक इच्छाएं करते हैं तो वे नई-नई मुश्किलों में पड़ जाते हैं। आइए एक और कहानी देखें।

एक गाँव में एक किसान था। उस किसान के पास 100 एकड़ खेत था। उन सभी कामों को करवाने के लिए उसे मजदूरों को रखना पड़ता था। वे ठीक से सुनते नहीं थे, समय पर नहीं आते थे। वह अकेला पड़ गया था। वह बहुत परेशान था। अगर एक एकड़ या आधा एकड़ होता, तो वह खुद ही कर लेता और संघर्ष करता। लेकिन 100 एकड़ के काम पूरे नहीं हो पा रहे थे।

तब किसी ने बताया कि पड़ोस के गाँव में एक स्वामीजी हैं, तो वह उनके पास गया और उनके पैरों पर गिरकर कहा, ''मेरी स्थिति ऐसी है। कृपया मुझे कोई ऐसा तरीका बताएं जिससे मैं अपने काम आसानी से कर सकूं।'' तब उस स्वामीजी ने कहा, ''बेटा, तुम्हारी यह परेशानी दूर करने के लिए मैं तुम्हें एक वरदान देता हूँ।'' और उन्होंने एक राक्षस को बनाया। उन्होंने कहा, ''यह तुम जो भी काम कहोगे, कितना भी काम क्यों न हो, बहुत आसानी से कर देगा। यह तुम जो काम कहोगे वह करेगा, लेकिन एक शर्त है।''

वह शर्त यह थी कि अगर तुम उसे काम नहीं बताओगे तो वह तुम्हें खा जाएगा। किसान ने कहा, ''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मेरे पास बहुत खेत है। मैं काम नहीं कर पा रहा हूँ और मर रहा हूँ, कितने भी दिन काम करूं, खत्म नहीं होता। मुझे ऐसा ही कोई चाहिए।'' यह कहकर वह उसे ले गया। वह उसे ले गया और खेत जोतने को कहा। उसने सोचा कि

यह दो-तीन दिन में जोतेगा। वह पाँच मिनट में वापस आकर बोला, ''जोत दिया।'' उसने पूछा, ''और क्या काम है ?'' फिर उसने उसे पौधे लगाने को कहा। पाँच मिनट में पूरा करके राक्षस ने फिर पूछा, ''और क्या करना है ?''

जब वह जो कुछ भी कहता, वह तुरंत कर देता, तो किसान को समझ नहीं आया कि क्या कहे। अगर वह कुछ नहीं कहता तो राक्षस उसे खा जाता, इसलिए वह फिर से स्वामी के पास गया और उनके पैरों पर गिर पड़ा। उसने स्वामीजी से प्रार्थना की, ''मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं अपनी परेशानियाँ खुद झेलूंगा, मुझे राक्षस से बचाओ।'' उस स्वामीजी ने उसे एक उपाय बताया।

तब वह किसान घर गया और उस राक्षस को एक बड़ा ताड़ का पेड़ दिखाकर कहा, ''जब तक मैं न कहूँ, तब तक इस पेड़ पर चढ़ते-उतरते रहो।'' राक्षस ऐसा नहीं कर पाया और भाग गया। तब वह किसान जो कुछ कर सकता था, वह करता रहा और संतुष्ट होकर जिया। इसलिए इच्छाओं के गुलाम मत बनो, अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करो। ध्यान करो।

7.इच्छाओं से हानियाँ

अगर आप अपनी इच्छाओं को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं तो आपको बहुत नुकसान होता है। इच्छा करना, उसके लिए कड़ी मेहनत करना, और असफल होने पर बहुत दुखी होना होता है। इसके बजाय, अगर आप अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करते हैं तो आप शांत और खुश रहेंगे।

योगी वे होते हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को नियंत्रित किया है। वे अपनी जरूरतों तक सीमित रहते हैं। जीवन में भोजन, आश्रय, वस्त्र और साथी ही जरूरतें हैं। मनुष्य की जरूरतों के लिए सृष्टि में पर्याप्त दिया गया है,लेकिन इच्छाओं के लिए सृष्टि में पर्याप्त व्यवस्था नहीं की गई है।

भारत में अब 130 करोड़ से अधिक आबादी है। लेकिन आबादी बढ़ने के साथ-साथ खेती की जमीन भी बढ़ी है। फसल भी बढ़ी है। इस तरह जरूरतों के हिसाब से वृद्धि हुई है।

यानी यह समझना चाहिए कि जरूरतों के लिए कभी कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन अगर इच्छाओं को नियंत्रित नहीं किया जा सका तो ही परेशानी होती है।

अजीब बात यह है कि उन्हें अपनी स्थिति पसंद नहीं आती। वे किसी को भी देखकर दूसरों से तुलना करते हैं और सोचते हैं कि मेरे पास उसके जैसा कुछ नहीं है। वे चाहते हैं कि उनके पास वह सब कुछ हो जो उसके पास है, वे उसके जैसा बनना चाहते हैं, उनके पास उतना धन हो, उतनी प्रसिद्धि हो, उतनी शान-शौकत हो, उसके जैसी कारें हों, उसके जैसी इमारतें हों।

लेकिन परलोक में आपने क्या-क्या तय किया है, यह आपको पता नहीं होगा, लेकिन आपकी आर्थिक स्थिति हो, परिवार हो, पत्नी हो, पति हो, बच्चे हों, ये सब आपने पहले ही तय कर लिए थे।

बहुत से लोगों को कुछ समय बाद अपनी पत्नी पसंद नहीं

आती, हमेशा दूसरे की पत्नी पसंद आती है। लेकिन वे अंदर ही अंदर ऐसी पत्नी की कामना करते हैं।

वे हमेशा दूसरों की कमियां देखते हैं, लेकिन दूसरों की खूबियां नहीं देखते। अगर परिवार को अच्छा बनाना है तो जीवनसाथी की खूबियां देखनी चाहिए, तो परिवार स्वर्ग बन जाता है। अगर आप जीवनसाथी, चाहे वह पति हो या पत्नी, की कमियों पर ध्यान देंगे तो वह परिवार नर्क बन जाएगा।

एक कहानी देखते हैं। एक गाँव में एक महिला ने शादी करके ससुराल आई। पति अच्छा था, अच्छी तरह से देखभाल करता था, किसी चीज की कमी नहीं थी। लेकिन समस्या कहाँ आई कि उसे अपनी सास से समस्या थी। धीरे-धीरे दोनों की बिल्कुल नहीं बनती थी। यह अंततः चरम पर पहुँच गया। हर बात पर झगड़े होते थे, एक-दूसरे को कोसना, एक-दूसरे को गाली देना, अंत में बहू ने मरने का फैसला कर लिया।

गाँव के बाहर एक गुरुजी थे। एक बार वह उनके पास गई और अपनी समस्या बताई और उनसे समाधान पूछा।

तब वह गुरुजी के पास गई और उनके पैरों पर गिरकर बोली, ''गुरुजी, मेरी सास से बिल्कुल नहीं बनती, मैं घर में नहीं रह पा रही हूँ, मैं मरना चाहती हूँ।'' तब गुरुजी ने पूछा, ''अब तुम्हारी इच्छा क्या है ?'' उसने कहा, ''कुछ नहीं गुरुजी, अगर मेरी सास से छुटकारा पाने का कोई रास्ता हो तो मुझे बताइए।''

तब उन्होंने कहा, ''अगर तुम अपनी सास से छुटकारा पाना चाहती हो तो तुम कोई जहर या कुछ और देकर उसे मार दोगी तो सब यही सोचेंगे कि बहू ने सास को जहर देकर मार दिया। इसलिए मैं तुम्हें बिना किसी बात के उसे छुटकारा पाने का तरीका बताता हूँ, मैं तुम्हें एक दवा देता हूँ। यह दवा रोज उसे कॉफी या चाय में थोड़ी मिलाकर देती रहो।''

कुछ दिनों में वह धीरे-धीरे मर जाएगी। एक बार जब वह मर जाएगी तो ऐसा लगेगा जैसे तुमने दवा दी है। लेकिन इस तरह से मरने पर

कोई परेशानी नहीं होगी। उन्होंने यह भी कहा कि अगर तुम उससे झगड़ा करती रहोगी तो किसी को शक हो सकता है, इसलिए आज से तुम उससे चाहे पसंद करो या न करो, प्यार से उसकी देखभाल करो। उन्होंने दवा दी। उन्होंने जो शर्त बताई थी वह यह थी कि इस महीने भर सास से प्यार से रहने का नाटक करना है। और जब वह घर गई तो उसके व्यवहार में बदलाव आया।

सास ने कहा, ''मैं तुम्हें कॉफी बनाकर देती हूँ,'' और वह रोज कॉफी में दवा मिलाकर देती थी। वह बहुत प्यार से रहती थी, सब कुछ देखती थी। बहू के 10 दिन प्यार से रहने पर सास में भी बदलाव आया। वह बहू की अच्छी तरह से देखभाल करने लगी। इस तरह 20 दिन होते-होते दोनों के बीच अच्छी दोस्ती हो गई।

पहले दोनों झगड़ते थे। अब वे झगड़े नहीं थे। धीरे-धीरे एक महीना होते-होते ऐसी स्थिति आ गई कि वे एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे। वह उसे बेटी की तरह देखती थी। वह उसे माँ की तरह देखती थी। सास इतनी अच्छी तरह से देखभाल कर रही थी। उसे एक महीना होते ही एक संदेह हुआ। अरे, मैं इतनी अच्छी सास को मार रही हूँ। ऐसी सास को मरना नहीं चाहिए। लेकिन मैंने दवा दे दी है, अब क्या होगा? यह सोचते हुए कि सास को मरना नहीं चाहिए, उसे रहना चाहिए, वह दौड़कर गुरुजी के पास गई।

उसने गुरुजी से कहा, ''वह राक्षसी नहीं है गुरुजी, वह बहुत अच्छी महिला है, वह मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करती है, उसे मरना नहीं चाहिए। लेकिन आपने जैसा कहा था, मैंने दवा दे दी है, तो अगर वह मर गई तो मेरी क्या हालत होगी? ऐसी सास को किसी भी तरह से आपको ही बचाना होगा।'' तब गुरुजी ने कहा, ''बेटी, तुम चिंता मत करो, वह नहीं मरेगी। मैंने उसे शक्तिवर्धक दवा दी है। मैंने ऐसा तुम्हारे वैवाहिक जीवन में बदलाव लाने के लिए किया है।''

''अगर तुम इसी तरह रहोगी तो तुम्हारा वैवाहिक जीवन सुचारु रूप से चलेगा। यह समझ लो कि कमी दूसरों में नहीं, तुम में ही है,'' गुरुजी ने कहा।

इसी तरह, अगर कोई कहता है कि पत्नी का व्यवहार ठीक नहीं है, तो इसका मतलब है कि आप में कहीं न कहीं कोई कमी है। उसे सुधारने की कोशिश करें। अगर आप अपनी पत्नी से प्यार करते हैं, तो आपकी पत्नी आपसे प्यार क्यों नहीं करेगी? इसी तरह, अगर आप अपने पति से प्यार करते हैं, तो आपका पति आपसे प्यार क्यों नहीं करेगा? इसे अच्छी तरह याद रखें।

इसलिए, सृष्टि में जितने पुरुष होते हैं, उतनी ही स्त्रियां भी होती हैं। वे ऊपर से ही तय करके आते हैं कि उन्हें कैसी पत्नी चाहिए और कैसा पति चाहिए। वे ऐसी पत्नी के साथ ऐसे अनुभव और ऐसे पति के साथ वैसे अनुभव प्राप्त करने के लिए ऐसा निर्णय लेकर आते हैं। इसे समझना चाहिए। समझने के बाद, यह सोचना कि ''यह मेरी इच्छित पत्नी नहीं है'', ''यह मेरा इच्छित पति नहीं है'', ''मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई'', मूर्खता है। इसलिए, इच्छाओं के गुलाम नहीं बनना चाहिए, बल्कि आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए। यहां हर किसी को एक साथी की आवश्यकता होती है। इसी तरह, रोज़ फाइव स्टार भोजन की ज़रूरत नहीं है, एक प्लेट भोजन से आपकी ज़रूरत पूरी हो जाती है।

आवश्यकताओं को जाने बिना इच्छाएं करने से केवल परेशानियां और नुकसान ही होता है। जो लोग इसे नहीं समझते, वे इच्छाएं करते रहते हैं। वे इच्छाएं करके परेशानियों में पड़ते हैं, कष्टों का सामना करते हैं, ऐसे काम करते हैं जो नहीं करने चाहिए, गलतियां करते हैं, पाप करते हैं, अधर्म करते हैं, और अंत में उन्हीं के कारण कष्ट उठाते हैं और बहुत नुकसान झेलते हैं। लेकिन इतना नुकसान क्यों होता है? यह समझना चाहिए कि यह इच्छाओं के कारण होता है।

8.क्या ईश्वर इच्छाएं पूरी करता हैं ?

बहुत से लोगों का मानना है कि भगवान से मांगने पर इच्छाएं पूरी हो जाती हैं, लेकिन थोड़ा और सोचिए। सभी भगवान से मांगते हैं ! लेकिन क्या भगवान मनुष्य की सभी इच्छाएं पूरी कर सकते हैं ? एक बार सोचिए। आप कह सकते हैं कि अनंत शक्ति के स्वरूप भगवान हमारी इच्छाएं क्यों नहीं पूरी कर सकते।

पत्री जी इसीलिए कहते हैं कि पहले बुद्धि बढ़ाओ। कोई भी काम करते समय अगर तुम्हारी बुद्धि ठीक से काम करती है, तो तुम सोच-समझकर वही करोगे जो करना चाहिए, और वह नहीं करोगे जो नहीं करना चाहिए। अगर तुम बुद्धि से सोचोगे, तो तुम्हें समझ आएगा कि क्या भगवान मनुष्यों की सभी इच्छाएं पूरी कर सकते हैं ? क्या उनके पास वह शक्ति है ? क्योंकि मांगना आसान है, पूरा करना मुश्किल।

मैं कुछ उदाहरण देता हूँ। जो लोग अमरता का वरदान मांगते हुए तपस्या करते हैं, वे पूछते हैं। क्या भगवान दे सकते हैं ? क्योंकि पुराणों में राक्षस अत्यधिक तपस्या करके उन देवताओं को प्रसन्न करते हैं और उन्हें प्रत्यक्ष करते हैं। जब वे पूछते हैं, ''बेटा, तुम्हें क्या वरदान चाहिए ?'' तो वे अमरता का वरदान मांगते हैं। तब क्या भगवान उनकी इच्छा पूरी कर सकते हैं ? नहीं, है ना ?

''वह मेरे हाथ में नहीं है। उसके अलावा कुछ और मांगो'', वे कहते थे। अगर भगवान वास्तव में इच्छाएं पूरी करने वाले होते, तो उन्होंने यह क्यों कहा कि यह इच्छा मेरे हाथ में नहीं है ? इसका मतलब है कि भगवान सभी इच्छाएं पूरी नहीं कर सकते। जब उन्हें कुछ और मांगने के लिए कहा जाता था, तो वे अपनी बुद्धि का उपयोग करके मांगते थे। वे देवताओं, मनुष्यों या जानवरों में से किसी से भी मौत नहीं होने का वरदान

मांगते थे।

देवता उन्हें वरदान देते थे और फिर नरसिंहावतार लेकर उन्हें मार देते थे। इसी तरह, एक और व्यक्ति ने शिव से वरदान मांगा कि जिसके सिर पर मैं हाथ रखूं, वह भस्म हो जाए। तब उसने कहा, ''मैं तुम्हारे दिए हुए वरदान को परखने के लिए तुम्हारे सिर पर ही हाथ रखकर देखता हूँ,'' तो शिव भाग गए।

तब विष्णु मोहिनी रूप में आए और अंततः उससे नृत्य करवाया और उसका हाथ उसके सिर पर रखवाकर उसे ही भस्म कर दिया। इस तरह, कितने ही राक्षसों ने अपनी बुद्धि का उपयोग करके कितनी भी इच्छाएं कीं, लेकिन अंत में उन्हें मरना ही पड़ा।

कुछ और उदाहरण: अगर कुछ लोग बुढ़ापा न आने का वरदान मांगते हैं, तो क्या देवता वह वरदान दे सकते हैं ? यह भी सृष्टि के सिद्धांत के विरुद्ध है! क्योंकि जिस सृष्टिकर्ता ने सृष्टि की रचना की है, उसने रचना करते समय कुछ नियम बनाए हैं। उस सृष्टिकर्ता के नियमों का कोई भी देवता उल्लंघन नहीं कर सकता, उन्हें तोड़ नहीं सकता। कोई भी देवता हो, उसे सृष्टि के नियमों के अनुसार ही व्यवहार करना होगा। हमारे भारतीय संविधान के अनुसार, मुख्यमंत्री हों या प्रधानमंत्री, उन्हें संविधान के अनुसार ही काम करना होगा, संविधान का उल्लंघन करके कोई कुछ नहीं कर सकता। और उस सृष्टिकर्ता द्वारा बनाए गए नियमों के विरुद्ध कोई भी देवता कुछ नहीं कर सकता है।

इसलिए याद रखें, क्या भगवान सभी इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं ? इसका मतलब है कि वे नहीं कर सकते। अगर हम आगे देखें, तो मान लीजिए चुनाव हो रहे हैं, हम देखते हैं कि तीन, चार, पांच, छह लोग भी चुनाव में खड़े हैं। सभी अपने पसंदीदा भगवान से प्रार्थना करते हैं, ''हे स्वामी, मुझे जिताओ, मुझे जीतने में मदद करो।'' और वास्तव में, सभी

चाहते हैं, सभी भक्ति के साथ चाहते हैं। तो क्या भगवान उन सभी को जिता सकते हैं ? नहीं, कोई भी कहेगा।

कारण यह है कि केवल एक ही जीतता है, लेकिन खड़े हुए सभी लोग कैसे जीत सकते हैं ? क्या सभी विधायक बन जाएंगे ? मतलब, केवल एक ही बनेगा।

तो सभी ने भगवान से प्रार्थना की, मतलब हमें समझ आता है कि भगवान सभी को नहीं जिता सकते। वैसे ही, उस गाँव में सभी 100 एकड़ जमीन चाहते हैं। क्या भगवान सभी को 100 एकड़ दे सकते हैं ? भगवान कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, उस गाँव में कुल 2000 एकड़ जमीन है। उस गाँव की आबादी 3000 है। भगवान प्रत्येक व्यक्ति के लिए 100 एकड़ कहाँ से लाएंगे ?

वैसे ही, अगर कोई चाहता है कि मेरे घर का सारा सामान सोना बन जाए ? क्या वे बन जाएंगे ? वैसे ही, अगर सभी अंबानी बनना चाहते हैं, तो क्या सभी बन जाएंगे ? सोचिए, क्या भगवान ऐसा कर सकते हैं ? अगर दुनिया के सभी लोग अंबानी बन जाएं, तो काम कौन करेगा ?

इस तरह, हम कई उदाहरण दे सकते हैं। इसलिए, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भगवान के पास मनुष्यों की इच्छाओं को पूरा करने की शक्ति नहीं है।

इसलिए, यह सोचना मूर्खता है कि अगर हम भगवान से प्रार्थना करेंगे तो हमारी सभी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी। इसलिए, हमें अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना चाहिए। इच्छाओं की एक सीमा होनी चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि किस तरह की इच्छाएं करनी चाहिए। इच्छाओं को नियंत्रित करने का तरीका जो पत्री जी हमें बता रहे हैं, वह है ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान।

इसे समझने के लिए एक कहानी सुनते हैं। प्राचीन काल में,

यानी इस सृष्टि के बनने से पहले, भगवान ने एक-एक करके जीवों का निर्माण किया। पहले वनस्पति जगत, फिर कीट-पतंगों का जगत, फिर पक्षी जगत, फिर पशु जगत का निर्माण किया और अंत में मानव जाति का निर्माण किया।

सभी जातियों का निर्माण करने के बाद भी उन्हें संतुष्टि नहीं मिली। मानव जाति का निर्माण करने के बाद वे बहुत संतुष्ट हुए। ''वाह, अब मैं अपनी इच्छानुसार सृष्टि कर पाया, मैंने अद्भुत मानव का निर्माण किया। जो विशिष्टताएं किसी भी जीव में नहीं हैं, वे सभी मनुष्यों में हैं। जो कोई भी जीव प्राप्त नहीं कर सकता, वह मानव प्राप्त कर सकता है, मैंने ऐसे मानव का निर्माण किया है,'' उन्होंने सोचा।

क्योंकि कोई भी जीव भगवान के रूप में विकसित नहीं हुआ, वह शक्ति केवल मानव में है। उन्होंने सोचा कि वे ऐसे मानव का निर्माण कर पाए हैं और वे बहुत खुश हुए। इसलिए, उन्होंने सोचा कि ये सभी मानव बहुत खुशी और उत्सव मनाते होंगे।

उन्होंने सोचा कि वे उनके आनंद का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए पृथ्वी पर जाएंगे और उनसे पूछकर जानेंगे। वे पृथ्वी पर आए और एक मानव को बुलाया। ''बेटा, मैंने तुम्हें बनाया है, तो मेरी सृष्टि कैसी है ? क्या तुम संतुष्ट हो ?'' उन्होंने पूछा।

तब वह आश्चर्यचकित होकर बोला, ''हे प्रभु, जब आप, जिन्होंने हमें बनाया है, हमें दिखाई देते हैं, तो हमें इससे बढ़कर और क्या चाहिए ? मैं बहुत खुश हूँ, लेकिन एक ही कमी है, मुझे गंजापन है। अगर थोड़े बाल होते तो अच्छा होता,'' उसने कहा।

''ओह, बस इतना ही,'' कहकर भगवान ने उसे बाल प्रदान किए। ठीक है, फिर वे दूसरे के पास गए। जब वे उसके पास गए, तो उन्होंने पूछा, ''क्या सब ठीक है ?'' तो उसने कहा, ''सब ठीक है,

लेकिन मैं थोड़ा काला हूँ, अगर मैं गोरा होता तो अच्छा होता''। ''बस इतना ही ?'' कहकर उन्होंने उसे भी गोरा रंग दिया और उसकी इच्छा पूरी करके फिर दूसरी जगह चले गए।

दूसरी जगह जाने पर उसने भी कहा, ''सब ठीक है, लेकिन मैं थोड़ा मोटा हूँ, अगर मैं थोड़ा पतला होता तो अच्छा होता''। ''ओह, बस यही है ?'' कहकर उन्होंने उसकी इच्छा पूरी की और चले गए। एक ने कहा कि उसकी उंगली टेढ़ी है, दूसरे ने कहा कि उसका पैर टेढ़ा है। इस तरह, एक ने यह कहा, दूसरे ने वह नहीं है कहा। एक ने कहा कि उसकी आवाज अच्छी नहीं है। दूसरे ने कहा कि उसकी आँख ठीक नहीं है। इस तरह, हर कोई एक-एक कमी बता रहा था। यह बात पूरे गाँव में फैल गई। यह जानकर कि भगवान आकर उनकी सभी कमियों को ठीक कर रहे हैं, गाँव के सभी लोग झुंड के झुंड भगवान के पास आए और ''मुझे यह नहीं है, वह नहीं है'' कहकर मांगना शुरू कर दिया।

भगवान का सिर घूम गया। ''क्या बात है, मैंने सोचा था कि ये बहुत खुश होंगे, लेकिन अंत में वे कोई न कोई कमी बता रहे हैं। मैंने जो बनाया है, उससे कोई संतुष्ट नहीं है, मैं उनकी इच्छाएं पूरी नहीं कर सकता'', यह कहकर वह भाग गया।

उन्हें अपनी समस्याओं से खुद ही निपटना होगा, उनकी इच्छाएं पूरी करना और उन्हें संतुष्ट करना किसी के बस की बात नहीं है, उनकी इच्छाएं देखकर मुझे आश्चर्य होता है, यह कहकर वह भाग गया। वह भागकर एक गुफा में छिप गया।

जब वह छिपा हुआ था, तो सभी मनुष्य गए और अंततः उसे पकड़ लिया। जब उसे पकड़ लिया गया, तो वह ''ओह माय गॉड'' कहकर एक पहाड़ी पर जाकर छिप गया। जब वे वहां गए, तो उन्होंने उसे वहां भी पकड़ लिया। वह एक झील में जाकर छिप गया, जब वे वहां गए,

तो उन्होंने उसे वहां भी पकड़ लिया।

इस तरह, वे उसे नहीं छोड़ रहे थे। ''भगवान आ गए हैं, अगर हम भगवान को पकड़ लेंगे तो हमारी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी'', यह सोचकर वे उसे हर जगह से पकड़ रहे थे। तब भगवान ने बहुत सोचा। ''अगर मुझे इनकी परेशानी से बचना है, तो मुझे एक चतुर उपाय सोचना होगा, नहीं तो ये मुझे नहीं छोड़ेंगे'', उन्होंने सोचा। ''अगर मैं पृथ्वी पर कहीं भी रहूंगा, तो ये मुझे पकड़ लेंगे। अगर मैं चाहता हूं कि वे मुझे न पकड़ें, तो मुझे उनके अंदर ही छिप जाना चाहिए, तो वे मुझे कैसे पकड़ेंगे?'' यह सोचकर वह मनुष्यों के शरीर में छिप गया। मूर्ख लोग बाहर खोजते रहे। लेकिन किसी ने भी अंदर नहीं खोजा। वह उनके अंदर छिपकर एक निर्णय पर पहुंचा।

उन्होंने सोचा कि वह उन्हीं को दिखाई देंगे जो अपनी सभी इच्छाओं को छोड़कर अपनी आत्मा की खोज करेंगे। उन्होंने सोचा कि वह उन लोगों को दिखाई नहीं देंगे जिनकी इच्छाएं हैं। इस तरह, मनुष्य हर जगह घूम रहे हैं, जैसे काशी, यरूशलेम, मक्का, तिरुपति, श्रीशैलम, आदि।

लेकिन भगवान कहीं नहीं हैं, वे उन्हें दिखाई नहीं दे रहे हैं। कितने युगों से खोज रहे हैं, लेकिन वह बाहर किसी को नहीं मिले? क्योंकि वह बाहर नहीं हैं, वह मनुष्य के अंदर ही हैं। इसलिए, भगवान को पकड़ने के लिए बाहर घूमना नहीं है, बल्कि अपने अंदर जाना है। उन्हें यह नहीं पता कि वह उनके अंदर हैं, इसलिए वे ''वह वहां है, वह यहां है'' कहकर हर जगह घूम रहे हैं।

वह बिना किसी परेशानी के, शांति से, साक्षी के रूप में उनके अंदर ही हैं। लेकिन जो लोग अपनी बुद्धि, अपने ज्ञान, अपनी समझ से इस बात को समझते हैं और बिना इच्छाओं के अपने अंदर जा पाते हैं, उन्हें वह भगवान दिखाई देंगे, प्रकट होंगे, साक्षात्कार होंगे। लेकिन उन्होंने यहां एक

शर्त रखी है कि इच्छाओं और संकल्पों के बिना जाना होगा। तो, अपने अंदर जाने का वह मार्ग जो ब्रह्मर्षि पत्री जी ने हम सभी को बताया है, वह है ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान।

इस ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान के माध्यम से आप अपने अंदर जाकर उस दिव्य शक्ति का दर्शन कर सकते हैं। जो लोग बिना इच्छाओं और संकल्पों के ध्यान करते हैं, वे निश्चित रूप से उस भगवान को प्रकट करेंगे, और अपने जीवन को धन्य करेंगे। उन्हें मुक्ति मिलेगी, यानी जन्म रहित स्थिति प्राप्त होगी।

''श्वास पर ध्यान'' के अलावा कुछ भी करने से आप अपने अंदर नहीं जा पाएंगे, उस दिव्य शक्ति का दर्शन नहीं कर पाएंगे, इसलिए हर कोई इसे याद रखे। बहुत से लोग कहते हैं कि ''श्वास पर ध्यान'' क्यों? लेकिन कितना भी कुछ भी कर लें, भगवान को प्राप्त किए बिना मोक्ष नहीं मिलता, दुख दूर नहीं होता।

तो, जो लोग बिना किसी इच्छा या संकल्प के ध्यान करते हैं, उन्हें निश्चित रूप से उस दिव्य शक्ति का दर्शन होगा। इसलिए, पत्री जी ने एक बहुत ही अद्भुत मार्ग दिया है। इसलिए, भगवान को जानने का मार्ग ''श्वास पर ध्यान'' है। इसलिए, समझ लें कि इच्छाएं नुकसानदायक हैं।

अजीब बात यह है कि जब एक इच्छा पूरी होती है, तो एक नई इच्छा पैदा होती है। जो पैदा हुआ है, उसे मरने तक इच्छाएं पैदा होती रहेंगी। तो, अगर ऐसी इच्छाएं पैदा होती रहती हैं, तो मनुष्य की स्थिति क्या होगी, इस पर थोड़ा सोचना चाहिए?

देखिए, जिसके पास मोटरसाइकिल नहीं है, वह पहले कहता है कि बस एक मोटरसाइकिल मिल जाए। अंत में उसने खरीद ली। लेकिन वह दो साल तक चलाता है। धीरे-धीरे वह कहता है कि मोटरसाइकिल नहीं, कार होनी चाहिए। ठीक है, किसी तरह उसने कार खरीद ली। फिर

वह कार पर्याप्त नहीं होती, एक बड़ी कार चाहिए। इस तरह 10 लाख रुपये, अगर वह खरीदता है तो 25 लाख, अगर वह खरीदता है तो 50 लाख, अगर वह खरीदता है तो 1 करोड़ रुपये।

जब कार हो जाती है, तो हवाई जहाज देखिए, वह कहां से कहां जा रहा है। वह किसी से संतुष्ट नहीं होता। इन इच्छाओं का कोई अंत नहीं होता।

मनुष्य इतनी गलतियां करने, इतना अधर्मी व्यवहार करने, इतने अवैध कार्य करने का कारण इच्छाएं ही हैं। सबसे ज्यादा कमाने की इच्छा, सबसे महान होने की इच्छा, सभी में गर्व करने की इच्छा, इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए वे बहुत संघर्ष करते हैं। गलतियां, पाप, अधर्मी कार्य करने का मूल कारण इच्छाएं ही हैं। लेकिन सृष्टि का सिद्धांत यह है कि अगर कोई गलतियां करता है, पाप करता है, यदि आप अधर्मी व्यवहार करते हैं, तो आपको निश्चित रूप से इसके परिणाम भुगतने होंगे।

ऐसे लोग इससे बाहर नहीं निकल पाते, और यह नहीं जानते कि कैसे बाहर निकलें, तो वे सोचते हैं कि मर जाना ही बेहतर है। –

अजीब बात यह है कि कोई कमी न होने पर भी वे बड़प्पन के लिए और गलतियाँ करते हैं। यदि कोई 10 करोड़ का घर बनाता है, तो दूसरा 25 करोड़ का, और कोई 100 करोड़ का बनाता है। कोई और 1000 करोड़ का बनाता है। इसके लिए वे कितनी गलतियाँ करते हैं! तो क्या उन्हें कठिनाइयाँ नहीं होंगी? क्या इसका परिणाम नुकसान नहीं है? यह नुकसान सब इच्छाओं के कारण ही तो है?

जो है, उसमें संतुष्ट रहकर यदि इच्छाएँ न बढ़ाई जाएँ, तो कोई परेशानी नहीं है। लेकिन इच्छाओं के कारण ही यह सारा नुकसान है! जब करते हैं, तब कुछ नहीं होता, लेकिन जब भुगतते हैं, तब जीवन असहनीय हो जाता है।

बहुत से लोगों को यह भी एक संदेह है! इस जन्म में मैं करूँ, तो अगले जन्म में भुगतना क्या है? पिछले जन्म में किया, तो इस जन्म में मैं भुगतना क्या है? कहते हैं।

यही बात मैंने एक बार पत्री जी से पूछी थी कि, ''क्या यह शरीर गलतियाँ करता है, तो दूसरा शरीर क्यों भुगतता है?'' बाद में आने वाले शरीर को तो पता नहीं होता ना? यदि इस शरीर से किया, तो इस शरीर को भुगतना चाहिए, लेकिन नया शरीर क्यों भुगतता है? तब पत्री जी ने कहा, क्या हुआ, किसी ने तुमसे दस हज़ार उधार लिए। तुमने उधार दिया।

जब तुमने उधार दिया, तब वह शर्ट-पैंट में था। छह महीने बाद तुम उससे पूछने गए। तब वह लुंगी-बनियान में था। तुमने उससे पैसे माँगे। उसने क्या कहा? मैं शर्ट-पैंट में था, तब तुमने दिए, अब मैं लुंगी-बनियान में हूँ, मुझे देने की ज़रूरत नहीं है, तो क्या तुम चुप रहोगे? नहीं रहोगे ना?

क्या है, तुम शर्ट-पैंट में भी वही हो, लुंगी-बनियान में भी वही हो। क्या तुम मेरा कर्ज़ चुकाने से मना करोगे? क्या शर्ट बदलने से कर्ज़ चुकाने से बच जाओगे? कहते हैं। वैसे ही तुम आत्मा हो। तुमने अपना शरीर बदला है, बस। शरीर जैसे कपड़े बदले हैं, बस। उसमें भी तुम ही हो, इसमें भी तुम ही हो। इसलिए भुगतना होगा, उन्होंने कहा।

भगवद्गीता में भी है ना!

श्लोक।। वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृज़्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही
(भ.गी.2-22)

तात्पर्यः- जैसे मनुष्य पुराने, फटे हुए वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा बूढ़े, पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करती है।

इसलिए उसमें भी वही है, इसमें भी वही है। जिसने किया है, वही है, इसलिए निश्चित रूप से भुगतना होगा। मना करने से कोई लाभ नहीं।

इसलिए इच्छाओं के लिए गलतियाँ करना, पाप करना। भविष्य में जीवन को नुकसान पहुँचाना ही है। इसलिए मैं शुरू से कह रहा हूँ कि इच्छाओं के गुलाम मत बनो, इच्छाओं को नियंत्रित करो, इच्छाओं के लिए गलतियाँ और पाप मत करो, अधर्मी व्यवहार मत करो। सृष्टि के विरुद्ध आचरण मत करो, क्योंकि इसका परिणाम असहनीय होगा।

उससे बेहतर होना चाहिए, उसे पार करना चाहिए, ऐसी इच्छाओं के लिए पाप करोगे, तो नुकसान तुम्हारा ही होगा। बहुत से लोग जो गलतियाँ करते हैं, वे सब बड़प्पन के लिए ही होती हैं, महान होने की इच्छा, महान कहलाने की इच्छा। इसलिए ऐसी इच्छाएँ नुकसान ही पहुँचाती हैं, लाभ नहीं। इसलिए इच्छाओं को नियंत्रित करो। इच्छाओं को नियंत्रित करने का मार्ग ही पत्री जी ने हमें दिया है, ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान। श्वास पर जितना ध्यान केंद्रित करोगे, धीरे-धीरे इच्छाओं का कारण बनने वाला मन तुम्हारे नियंत्रण में आ जाएगा। मन नियंत्रण में आ जाएगा, तो इच्छाएँ तुम्हारे नियंत्रण में रहेंगी। तब तुम सभी चीज़ों के लिए सीमित हो जाओगे, धर्मपूर्वक जीवन जियोगे, अन्याय और अत्याचार नहीं करोगे। तब कोई नुकसान नहीं होगा। अन्यथा, इच्छाओं के कारण सब नुकसान ही है। इसे अच्छी तरह समझना चाहिए।

9.इच्छाएँ किसी भी जन्म में पूरी नहीं होतीं

पत्री जी ने एक अवसर पर क्या कहा था? उन्होंने कहा था कि किसी भी जन्म में किसी की इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं।

इसलिए कुल मानव जन्मों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रारंभिक जन्म, मध्यवर्ती जन्म, अंतिम जन्म।

1. प्रारंभिक जन्म का अर्थ है जन्म लेते ही होने वाले 100 से 150 जन्म।

2. मध्यवर्ती जन्म का अर्थ है 150 से 300 जन्म।

3. अंतिम जन्म का अर्थ है 300 से 400 जन्मों में विभाजित किया जा सकता है।

पत्री जी ने क्या कहा था? ''प्रारंभिक जन्मों में जो माँगा जाता है, वह नहीं मिलता, योग्यता के अनुसार मिलता है।''

अर्थात, जो माँगा जाता है, वह किसी को नहीं मिलता, लेकिन योग्यता के अनुसार, अर्थात पिछले जन्मों में किए गए कर्मों के अनुसार मिलता है, उन्होंने कहा।

वैसे ही मध्यवर्ती जन्मों में भी ''**जो माँगा जाता है, वह नहीं मिलता, जो चाहिए, वह मिलता है**'' उन्होंने कहा।

वहाँ इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, लेकिन जो चाहिए, वह मिलता है। यह भी आपके द्वारा ऊपर तय किए गए अनुसार ही होगा।

अंतिम जन्मों में, यानी आखिरी जन्मों में भी, उन्होंने कहा, ''**जो मांगा जाता है वह नहीं मिलता, बल्कि वही मिलता है जो लोक कल्याण के लिए उनके लिए आवश्यक होता है।**''

वहां भी जो मांगा जाता है वह नहीं मिलता, जब वे लोक कल्याणकारी कार्य कर रहे होते हैं तो जो आवश्यक होता है! जितना

आवश्यक होता है ! उतना ही मिलता है।

इस प्रकार, मनुष्य के जीवन में कितने भी जन्म क्यों न हों, यह जानना चाहिए कि जो मांगा जाता है वह कभी नहीं मिलता। इसलिए, मांगने से नुकसान ही होता है, इसके अलावा कुछ नहीं। यह पत्री जी का संदेश है।

''प्रारंभिक जन्मों में रहने वाले''

प्रारंभिक जन्मों में जो मांगा जाता है वह नहीं मिलता। हमने जाना कि यह योग्यता के अनुसार मिलता है। यानी, इस सृष्टि में यदि कोई कुछ प्राप्त करना चाहता है तो उसे पहले योग्यता अर्जित करनी होगी।

योग्यता अर्जित किए बिना, यदि आप गलतियां करते हैं, पाप करते हैं, धोखा देते हैं, अन्याय, अवैध कार्य करते हैं, लूटपाट, चोरी करते हैं, हत्याएं करते हैं, कुछ भी करते हैं, तो आप दस गुना अधिक खो देंगे, और इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा।

उन्हें और इन्हें देखकर प्रतिस्पर्धा करके कुछ आगे निकलने की, या कुछ महान बनने की इच्छा से ऐसे काम करते हैं जो नहीं करने चाहिए, तो आपकी इच्छाएं पूरी नहीं होंगी ! बल्कि, आप धोखा देकर जो कुछ भी इकट्ठा करते हैं, उसके बाद आप उसका दस गुना खो देंगे, यह बात आपको जाननी चाहिए।

तो, जो सोचा है वह होना चाहिए, इसके लिए सृष्टि में एक मार्ग है, वही योग्यता अर्जित करना।

आप जितनी योग्यता अर्जित करेंगे, उतना ही प्राप्त कर पाएंगे। यदि योग्यता नहीं है तो कुछ भी प्राप्त नहीं होगा, कितनी भी कोशिश कर लें, नहीं मिलेगा। लेकिन जितनी अधिक योग्यता अर्जित करेंगे, उतना ही अधिक प्राप्त करेंगे।

तो यह योग्यता कैसे आती है ?

यानी, ''**देने से आती है, जो देते हैं वही आता है, जितना देते हैं उतना ही आता है, जो नहीं देते वह नहीं आता।**'' देना मतलब केवल धन ही नहीं, कुछ भी दिया जा सकता है।

देखिए, लोग कष्टों से बचना चाहते हैं। लेकिन कष्टों से बचने की इच्छा करने से वे नहीं रुकते। उसके लिए भी योग्यता अर्जित करनी पड़ती है। योग्यता कैसे आती है ? यदि आपने अतीत में किसी को कष्ट नहीं दिया, कष्टों में नहीं डाला, तो आपको भी कोई कष्ट नहीं होगा।

बहुत से लोग धन की इच्छा करते हैं। धन देने से आता है। यानी, यदि आपने पहले, यानी अतीत में, दूसरों को या लोक कल्याण के लिए धन दान किया है, धन खर्च किया है, तो आप धन प्राप्त कर पाएंगे। लेकिन केवल इच्छा करने मात्र से नहीं आता।

क्यों ? सोचिए, धन कौन नहीं चाहता। मंदिर जाकर सब मांगते हैं, चर्च जाकर मांगते हैं। मस्जिद जाकर मांगते हैं। तो क्या सब करोड़पति बन जाते हैं ? नहीं ना ? तो कुछ ही क्यों बनते हैं ? क्योंकि उन्होंने योग्यता अर्जित की है।

योग्यता का मतलब यह नहीं कि आज ही अर्जित करनी है। अतीत में भी अर्जित की हो सकती है। इसलिए आप देखिए, भगवान के लिए सब समान होते हुए भी, कोई जन्म लेते ही एक बड़े करोड़पति परिवार में पैदा होता है, यानी जन्म लेते ही करोड़पति बन जाता है, कोई जन्म लेते ही गरीब परिवार में पैदा होता है, कोई भिखारी के घर पैदा होता है। तो भगवान के लिए सब समान ही हैं ना ? तो वह ऐसा क्यों पैदा हुआ ? यह ऐसा क्यों पैदा हुआ ? यानी यह योग्यता के अनुसार ही है, यह जानना चाहिए।

यदि योग्यता नहीं है तो कितनी भी मेहनत कर लें, कुछ भी कर लें, कुछ नहीं मिलेगा। किसी को भी, विशेष रूप से यह याद रखना चाहिए

कि सृष्टि में योग्यता अर्जित करनी चाहिए। ऐसा नहीं कि रात-दिन मेहनत करने से आता है। यदि ऐसा होता तो सब मेहनत करते, कौन मेहनत नहीं करता? इसलिए योग्यता अर्जित करें और धनवान बनें।

इसलिए देखिए, सरकारें कितना भी कर लें, धनवान धनवान ही रहते हैं, गरीब गरीब ही रहते हैं। कितने भी कानून लाएं, कितने भी आरक्षण बढ़ाएं, कितनी भी व्यवस्थाएं करें, कुछ भी करें, धनवान धनवान ही रहते हैं, गरीब गरीब ही रहते हैं, क्योंकि योग्यता नहीं है।

''मध्यस्थ जन्मों में आए हुए लोग''

मध्यस्थ जन्मों में आए हुए लोग स्वाभाविक रूप से ऊपर सब कुछ तय करके, पृथ्वी पर आने के बाद क्या करना है? क्या प्राप्त करना है? कौन से अनुभव प्राप्त करने हैं? कौन से पाठ सीखने हैं? यह सब एक योजना के अनुसार तय करके पृथ्वी पर आते हैं। लेकिन पृथ्वी पर आने के बाद आप कौन हैं, आपने क्या तय किया है, आपकी योजना क्या है, यह सब भूल जाते हैं।

स्वाभाविक रूप से जन्म लेने के बाद कोई भी धन को अधिक महत्व देता है। धन कमाना किस लिए? सुख पाने के लिए। उसके लिए धन चाहिए, क्योंकि जीने के लिए, सुख पाने के लिए, अच्छी तरह से जीने के लिए धन चाहिए, इसलिए धन कमाने को ही महत्व देते हैं। कोई भी अपनी उपलब्ध अवसरों के अनुसार व्यापार, व्यवसाय, या नौकरी कुछ भी करके धन कमाता है।

इतना ही नहीं, उस धन कमाने के लिए व्यापार करना है, नौकरी करनी है, लोग एक अच्छा पेशा अपनाना चाहते हैं, राजनीति में आगे बढ़ना चाहते हैं, या डॉक्टर, आईएएस बनना चाहते हैं, ऐसी कई इच्छाएँ होती हैं। अजीब बात यह है कि जो वे चाहते हैं वह नहीं होता, चाहे वे कितनी भी प्रार्थनाएँ करें, पूजा करें, कितनी भी जगहों पर जाएँ, कितनी भी

मन्नतें माँगें, कुछ भी करें, जो वे चाहते हैं वह नहीं होता, वे कुछ और सोचते हैं और कुछ और हो जाता है।

पत्री जी ने कई बार अपनी जीवनी बताते हुए कहा कि मैं डॉक्टर बनना चाहता था, लेकिन कुछ अंकों से मौका चूक गया। यानी, जब वे डॉक्टर बनना चाहते थे, तो प्रकृति ने उन्हें वह अवसर नहीं दिया,

जिससे वे निराश होकर मरने के लिए टैंक बंड के पास गए और सुबह-सुबह कूदकर मरने का सोचा, लेकिन उस समय पानी बहुत ठंडा था, और उन्होंने सोचा कि ठंडा पानी उन्हें पसंद नहीं है, इसलिए उन्होंने कूदना छोड़ दिया।

उनके परिवार में उनके बड़े भाई ने अच्छी पढ़ाई करके एक अच्छी नौकरी की, जबकि उन्होंने एक सामान्य नौकरी करते हुए हैदराबाद में धीरे-धीरे इस ध्यान मार्ग में प्रवेश किया।

इस मार्ग में उन्होंने वह सब कुछ सीखा जो उन्हें चाहिए था, उन्होंने संगीत सीखा, बांसुरी सीखी। इस तरह उन्होंने इस मार्ग में सभी आवश्यक विद्याएँ सीखीं।

जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे जीवन में भी मुझे वह नहीं मिला जो मैं चाहता था। लेकिन मुझे वही दिया गया जो मुझे चाहिए था। पत्री जी ने मध्यस्थ जन्मों के बारे में जो बयान दिया था कि ''जो चाहा वह नहीं मिलता, वही मिलता है जो चाहिए'' वह मेरे जीवन में सच साबित हुआ।

मैं व्यापार कर रहा था और मैं और भी बड़ी व्यापारिक संस्थाएँ स्थापित करना चाहता था, लेकिन वह कुछ हद तक ही चला, फिर मुझे बिना बताए ही वे व्यापार खराब होने लगे। मुझे समझ नहीं आया कि क्या हुआ। तब तक जो भी सोचा था वह सब हो रहा था। तब मुझे समझ नहीं आया कि अब सब उल्टा क्यों हो रहा है।

कितना भी कुछ किया, कितने भी तरह के प्रयास किए, कुछ भी

सफल नहीं हुआ। तब तक सब कुछ बिना किसी बाधा के सफल हो रहा था। यानी, मुझे नहीं पता था कि मुझे धन नहीं चाहिए, लेकिन उस चलाने वाली प्रकृति को पता था कि मुझे क्या चाहिए। इसलिए मुझे व्यापार से आध्यात्मिकता की ओर ले जाया गया।

इसलिए सांसारिक मार्ग पर जाने का कोई फायदा नहीं है। अगर आप जाते हैं, तो वहाँ सब कुछ उल्टा होता रहेगा। जब तक आप सही मार्ग पर नहीं जाते, तब तक आप कहीं भी जाएँगे, वह आपको नुकसान पहुँचाता रहेगा, मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। व्यापार देखा तो व्यापार नीचे चला गया, राजनीति में गया तो शुरुआत में सब ठीक था लेकिन बाद में उल्टा हो गया। फिर परिवार में भी शुरुआत में सब ठीक चला, लेकिन बाद में वहाँ भी उल्टा हो गया।

इस तरह उल्टा होते-होते, अनजाने में पत्री जी से परिचय हुआ। पत्री जी के सान्निध्य से मैं इस ध्यान मार्ग की ओर आकर्षित हुआ। जैसे ही मैं इसमें आकर्षित हुआ, मैंने एक-एक करके सब कुछ छोड़ दिया, और इसमें आगे बढ़ना शुरू किया। सांसारिक जीवन में भले ही मैं पीछे रह गया, लेकिन इसमें मैं आगे बढ़ रहा हूँ, इसमें सब कुछ मेरे अनुकूल है। कहीं भी जाकर कुछ कहना हो तो उसके लिए अनुकूल वातावरण, ज्ञान बढ़ाने के लिए आवश्यक वातावरण, ध्यान करने के लिए आवश्यक वातावरण बना और सब कुछ अनुकूल हो गया।

मैंने इस ध्यान मार्ग में आए बहुत से लोगों को देखा है, बहुत से लोगों ने यही बात कही है।

इसलिए कोई भी खुद को देख सकता है, आप जिस भी स्तर पर हैं, निश्चित रूप से उसी के अनुसार होगा। जब आपको इस आध्यात्मिक मार्ग पर आना होता है, तो आप सांसारिक मार्ग में कितनी भी इच्छाएं करें, कितना भी कुछ करने की सोचें, जब तक आप उस मार्ग पर नहीं आते

जिस पर आपको आना है, तब तक आपको कुछ भी नहीं मिलेगा।

यदि आप अभी भी मूर्खतापूर्ण व्यवहार करते हैं, तो आपको और चोटें लगेंगी, लेकिन कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए, इसे समझकर, यदि आप इस मार्ग पर चलते हैं और प्रयास करते हैं, तो आप निश्चित रूप से बहुत आगे बढ़ेंगे।

इसी तरह, शुरुआती जन्मों में रहने वालों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जो चाहा जाता है वह नहीं मिलता है, यदि आप इसे जाने बिना प्रयास करते हैं, तो आपको केवल चोट ही लगेगी, और इच्छाएं कभी पूरी नहीं होंगी, कभी नहीं।

सब लोग वह चाहते हैं, यह चाहते हैं। लेकिन जान लें कि यह योग्यता के अनुसार आता है। इसे बहुत अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि आपको वही मिलेगा जिसके आप हकदार हैं। इसलिए, जो कुछ भी आपके अनुकूल है, उसके अनुसार जीना चाहिए। अपनी मर्जी से कुछ भी करने की कोशिश करेंगे तो नहीं होगा।

अब आपको आत्मा के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। शरीर के लिए नहीं, शारीरिक सुखों के लिए नहीं। जो चाहिए वह ज्ञान है, इसलिए आध्यात्मिक मार्ग पर बढ़ने के लिए आपको सब कुछ मिलता रहेगा। जो लोग इन बातों को जानते हैं, वे प्रकृति के अनुसार जीना सीख जाते हैं। वे उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। तब कोई परेशानी नहीं होगी।

निश्चित रूप से, आपको वही करना होगा जो आपने वहां योजना बनाई थी। आपको अपनी योजना के अनुसार जीना होगा। यदि आप अलग तरह से व्यवहार करते हैं, तो आपको केवल झटके ही लगेंगे। यदि आप सृष्टि के अनुसार व्यवहार करते हैं, तो आपको कोई परेशानी नहीं होगी। सब कुछ सुचारू रूप से चलेगा।

देखिए, शुरुआती जन्मों में, ध्यान केवल इस बात पर होता है कि

कितना आनंद लेना है, कितना अनुभव करना है। यानी खाना-पीना-सोना के अलावा और कुछ नहीं होता। वे ध्यान में आने के बाद भी ध्यान में टिक नहीं पाते। उन्हें शारीरिक लाभ चाहिए, वे अपनी इच्छाएं पूरी करना चाहते हैं।

थोड़ा और विकसित होने पर, मैं महान बनना चाहता हूं। मैं सबसे ऊपर रहना चाहता हूं। पंचायत अध्यक्ष या पार्षद बनने के लिए कोई न कोई संघर्ष करता है। कोई सोसाइटी बनाकर उसमें अध्यक्ष या सचिव बनने की कोशिश करता रहता है। या फिर विधायक या मंत्री बनने की लालसा रखता है।

और भी जन्म बढ़ने पर उनकी भी आवश्यकता नहीं होती, ध्यान हमेशा सेवाओं पर रहता है। उसे अच्छा करना है। इसे अच्छा करना है। पुण्य कार्य करने हैं, ऐसे विभिन्न सेवा कार्य करते रहते हैं।

और विकसित होने के बाद, जब मैं शरीर नहीं, आत्मा हूं, इस स्थिति में आने के बाद, वे गुरुओं का आश्रय लेते हैं। वे ज्ञान के लिए प्रयास करते रहते हैं।

दुनिया भर में, जब भी कोई आवश्यकता होती है, वे भगवान का आश्रय लेते हैं, प्रार्थना करते हैं, याचना करते हैं। थोड़ी सी भी परेशानी आने पर वे भगवान से मांगते रहते हैं। जीवन में थोड़ी सी भी असुविधा होने पर तुरंत मन में स्वामी से कहते हैं कि मेरी यह परेशानी दूर करो, ऊपर से कुछ नहीं कहते, लेकिन अंदर ही अंदर सोचते रहते हैं।

हर किसी को एक-एक भगवान पसंद होता है। बहुत से लोग अपने पसंदीदा भगवान का बार-बार स्मरण करते रहते हैं, जप करते रहते हैं।

साईं बाबा हों तो बाबा बाबा बाबा कहते हुए, वेंकटेश्वर स्वामी हों तो स्वामी बालाजी बालाजी कहते हुए, यीशु हों तो यीशु यीशु कहते

हुए, ऐसे अंदर ही अंदर सोचते रहते हैं।

उनका उद्देश्य यह होता है कि अगर वे ऐसा मांगेंगे तो वह उनकी इच्छा पूरी करेंगे। वे सोचते हैं। लेकिन उन्हें यह स्थिति क्यों आई ? वे नहीं सोचते।

वह परेशानी क्यों आई ? उस तरह की कठिनाई क्यों आई ? वह नुकसान क्यों हुआ ? वे यह नहीं सोचते। पत्रीजी ने कई बार कहा है कि आपके जीवन में जो कुछ भी होता है, उसके लिए आप ही जिम्मेदार हैं, कोई और नहीं।

आप अपने जीवन में उन्हें और उन्हें यानि दूसरों को कारण बताते हैं। लेकिन जो कुछ भी होता है, उसके लिए आप ही जिम्मेदार हैं। आपका भविष्य आपके कर्मों पर निर्भर करता है। इसलिए, आपको अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिए। तभी आपका भविष्य अच्छा होगा। यदि आप अपने कर्मों पर ध्यान नहीं देते हैं और किसी भी भगवान पर ध्यान देते हैं, किसी का भी आश्रय लेते हैं, किसी भी गुरु को पकड़ते हैं, तो कोई फायदा नहीं है।

यदि आप किसी बड़े गुरु का भी आश्रय लेते हैं, तो वे आपकी इच्छाएं पूरी नहीं करेंगे, वे आपको सिखाएंगे कि कैसे जीना है, कैसे व्यवहार करना है।

आपकी बात कैसी होनी चाहिए ? आपकी सोच कैसी होनी चाहिए ? आपके कार्य कैसे होने चाहिए ? यह बताना ही नहीं, बल्कि आपको उस स्थिति में आना भी चाहिए। यानी क्या करना है, यह भी वे सिखाते हैं। यदि आप उनका अनुसरण करते हैं, तो आप निश्चित रूप से अपने भविष्य को अच्छी तरह से आकार देंगे। गुरुओं ने बहुत अनुभव और ज्ञान के साथ सब कुछ विस्तार से चर्चा करके, समझकर, अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त किया है। इसलिए, वे जानते हैं कि क्या करने से हम

बाहर निकलेंगे। वे वही सब हमें बताते हैं।

वे बताते हैं कि वह स्थिति क्यों आई। वे बताते हैं कि उस स्थिति से बचने के लिए क्या करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए। वे बताते हैं कि उसके लिए किस तरह के अभ्यास करने चाहिए। यदि आप उनका अनुसरण करते हैं, तो भविष्य निश्चित रूप से अच्छा होगा।

थोड़ा सोचिए, इन इच्छाओं का मूल क्या है ? ऐसी इच्छाएं क्यों उत्पन्न होती हैं ? यदि आप सोचते हैं, तो इच्छाओं का कारण मन है। मन सभी के पास होता है। लेकिन सभी का मन एक जैसा नहीं होता। यह विभिन्न प्रकार का होता है। हर किसी का मन अलग-अलग होता है।

जिसका मन तमो गुण और रजो गुण में होता है, वह नियंत्रण में नहीं रहता। उनकी इच्छाएं प्रबल होती हैं, वे नियंत्रण में नहीं रहतीं। वे अपनी इच्छा पर ध्यान केंद्रित करते हैं और जो चाहते हैं उसे पूरा करने के लिए दृढ़ता और जिद पर उतर आते हैं। अंत में उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

इसलिए, इच्छाओं के मूल तमो गुण और रजो गुण को पार करने का प्रयास करना चाहिए। उन गुणों को पार करने का मार्ग वही सात्विक शाकाहार है जो पत्री जी बताते हैं, और ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान है। जो कोई भी इन्हें करता है, वह निश्चित रूप से उनसे बाहर निकल जाएगा, इच्छाओं का गुलाम नहीं बनेगा, संतुष्ट रहेगा, लालच नहीं करेगा, खुशी से जिएगा, अधर्मी व्यवहार नहीं करेगा, और ऐसे काम नहीं करेगा जो नहीं करने चाहिए।

बहुत से लोग पूछते हैं कि क्या मुझे अपने परिवार की देखभाल नहीं करनी चाहिए, क्या मुझे कमाना नहीं चाहिए? क्या वह इच्छा भी गलत है ? क्या परिवार की देखभाल करने की इच्छा भी गलत है ? वे ऐसे ही पूछते रहते हैं। सब कुछ किया जा सकता है, सब कुछ चाहा जा सकता

है, लेकिन इच्छाओं का गुलाम नहीं बनना चाहिए। उन्हें नियंत्रण में रखना चाहिए।

''अंतिम जन्मों में आए हुए लोग''

इसी तरह, अंतिम जन्म में आए हुए लोग शुद्ध सात्विक और निर्गुण स्थितियों में होते हैं। अंतिम जन्मों में आने पर क्या होता है, तो वहां भी चाहा हुआ नहीं मिलता। स्वाभाविक रूप से, अंतिम जन्मों में रहने वाले लोग लोक कल्याण के लिए ही देखते हैं।

वे दुनिया का भला करने, दुनिया को लाभ पहुंचाने वाले काम करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग परिस्थितियों के प्रभाव से अगर कुछ चाहते भी हैं, तो भी उनकी इच्छाएं पूरी नहीं होतीं। क्या होता है, तो वहां भी ''चाहा हुआ नहीं मिलता। लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए जो आवश्यक होता है, वही आता रहता है।''

इसका कारण यह है कि वे अंतिम जन्म में आए हैं। जो लोग लोक कल्याणकारी कार्य करते रहते हैं, उनकी योजना ही अलग होती है, उनका लक्ष्य ही अलग होता है, वे आए ही अलग उद्देश्य से।

पत्री जी ने निश्चित रूप से कहा है कि हर किसी को अपनी योजना के अनुसार ही जीना चाहिए, विपरीत नहीं जीना चाहिए। जो सोचकर आते हैं, उसे प्राप्त करना चाहिए। यदि ऐसा न करके विपरीत जीते हैं, तो उसे प्राप्त करने के लिए एक और जन्म लेना पड़ेगा, वे एक जन्म बर्बाद करने वाले बन जाते हैं। आए थे कुछ और करने, कर रहे हैं कुछ और। यदि जो करने आए थे, वह नहीं करते, तो क्या होगा? फिर से आना पड़ेगा।

अब परीक्षाओं में जो दिया जाता है, वही लिखना चाहिए। यदि कुछ और लिखते हैं, तो परीक्षा कैसे पास होगी। फिर से परीक्षा देनी पड़ेगी, फिर से एक साल पढ़ना पड़ेगा।

उसी तरह, यह पृथ्वी लोक एक पाठशाला है। हम पाठ सीखने आए हैं। जो सीखने आए हैं, यदि वह नहीं सीखते, तो फिर से आकर सीखना पड़ेगा। जो अनुभव करने आए हैं, यदि वह अनुभव नहीं करते, तो फिर से अनुभव करना पड़ेगा, बचने का कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए पत्री जी कहते हैं। यदि तुम कष्टों को सहन न कर पाने के कारण आत्महत्या करते हो, तो फिर से वैसा ही जीवन आएगा।

जिन कष्टों से बाहर निकलने के लिए आत्महत्या करते हैं, फिर से वैसा ही जीवन लेकर वैसा ही कष्ट अनुभव करना पड़ेगा। बचने की कोशिश करने के लिए थोड़ी पेनल्टी पड़ेगी और अधिक कष्ट अनुभव करने पड़ेंगे। उनकी स्थिति ''तवे से चूल्हे में गिरने जैसी'' होती है, ऐसा वे कहते हैं।

इसलिए, तुमने अपनी योजना में उन्हें चुना है, उन कष्टों के माध्यम से कुछ पाठ सीखोगे, इसलिए यदि तुम सोचते हो कि इन कष्टों से मुझे क्या सीखना चाहिए, तो समझ में आ जाएगा। इससे पहले तुमने किसी को परेशान किया था, इसलिए वैसा ही जन्म मिला है, यह जानना चाहिए। इस तरह हर चीज में अनुभव होता है।

इसलिए, कुछ भी हो, अपनी योजना के अनुसार, अपने चुने हुए जीवन के अनुसार जीना चाहिए। अंतिम स्थिति में आने पर, अब जो करना है, वह लोक कल्याणकारी कार्य हैं।

जब वे लोक कल्याण के लिए काम करते हैं, तो उन्हें जो चाहिए वह स्वाभाविक रूप से मिलता है। उस स्तर पर रहने वाले स्वामीजी हों या गुरु हों, कोई भी हो, उन्हें धन पर, इच्छाओं पर कोई लालच नहीं होता। उनका लक्ष्य सभी को वह ज्ञान सिखाना ही होता है। पिछले जन्म में लोक कल्याण के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, वह सब उपलब्ध होता रहता है। इसलिए इच्छाओं पर ध्यान न दें। इच्छाओं के बारे में व्यर्थ चिंता न

करें। यह विचार छोड़ दें कि देवता इच्छाएं पूरी करने के लिए ही हैं। भगवान की सृष्टि में व्यवस्था ही ऐसी है।

मनुष्य जो कुछ भी मांगते हैं, देवता वह सब नहीं देते। क्योंकि मैं आपको एक उदाहरण बताता हूँ।

आप सामान्य पूजा-पाठ और प्रार्थनाएं करके बस मांगते हैं। ऐसा नहीं है। पुराने समय में बहुत से राक्षस तपस्या करते थे, वे सामान्य तपस्या नहीं, बल्कि घोर तपस्या करते थे, बहुत तीव्र तपस्या करते थे। उसे ही घोर तपस्या कहते थे।

कुल मिलाकर, उनकी लगन से प्रसन्न होकर वे देवता प्रकट होते थे। कुछ लोग ब्रह्मा के बारे में, कुछ शिव के बारे में, कुछ विष्णु के बारे में तपस्या करते थे। वे सभी देवताओं में महान थे, इसलिए उनके बारे में तपस्या करते थे। ऐसा करने पर, कुल मिलाकर, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर वे प्रकट होते थे।

''बेटा, तुम्हारी क्या इच्छा है?'' पूछने पर बहुत से लोग कहते थे, ''मुझे अमरता का वरदान दो, स्वामी।'' तो इतनी तपस्या क्यों की, इतनी मेहनत क्यों की? इच्छा के लिए। तो क्या वे इच्छा पूरी करते थे? वे एक ही बात कहते थे, ''बेटा, वह हमारे हाथ में नहीं है, उसके अलावा कुछ और मांगो।''

तो इतनी मेहनत करके, इतना करके, इतना प्रसन्न करके उन्हें प्रकट करने के बाद भी जो मांगा वह नहीं मिला, है ना? यह याद रखना चाहिए। कारण यह था कि उनकी इच्छा अमर रहने की थी।

जब वे खुद कहते हैं कि यह मेरे हाथ में नहीं है, तो वे क्या कर सकते हैं? वे अपनी बुद्धि का उपयोग करके तरह-तरह की चीजें मांगते थे।

इच्छा पूरी नहीं हुई। जब इतनी तपस्या करने वालों की इच्छाएं

पूरी नहीं होतीं, तो सामान्य लोगों की इच्छाएं कैसे पूरी होंगी ? इसलिए, सृष्टि के नियमों का पालन करते हुए हर किसी को जीना चाहिए और प्रयास करना चाहिए।

जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह कुछ समय तक ही पोषित होता है और फिर समाप्त हो जाता है। आप चाहें तो देख लें, प्रकृति में कुछ भी हो, कितनी भी प्रजातियां हों, 84 लाख प्रकार की, सभी उत्पन्न होती हैं, बढ़ती हैं, और अंत में समाप्त हो जाती हैं।

इसी को, उत्पन्न होने वाले को ही ब्रह्म तत्व कहते हैं, पोषित होने वाले को विष्णु तत्व कहते हैं, लय होने वाले को शिव तत्व कहते हैं, यह सृष्टि में है। वहां ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर हैं या नहीं, यह बात नहीं। वहां इस प्रकार का तत्व है।

इसलिए एक बात याद रखें, इच्छाएं पूरी करना, इच्छाओं पर ध्यान देना नहीं।

रमण महर्षि जी ने जैसा कहा, पत्री जी ने जैसा कहा, और बड़ों ने जैसा कहा, शंकराचार्य जी ने जैसा कहा, पहले ये प्रश्न पूछें।

इच्छाएं नहीं। मैं कौन हूँ ? मैं कहाँ से आया हूँ ? किसलिए आया हूँ ? क्या करने, क्या प्राप्त करने आया हूँ ? पहले ये प्रश्न पूछने चाहिए। इनके उत्तर प्राप्त करने चाहिए।

आखिर ये सब कौन हैं ? मेरे अपने, मेरे अपने सोचते हो, उनका तुमसे क्या संबंध है ? यह जन्म क्या है ? मरना क्या है ? मरने के बाद क्या होता है ? क्या मैं और रहूँगा ? नहीं रहूँगा ? मरने वाले सब कहाँ जा रहे हैं ? फिर क्यों नहीं दिखते ? आखिर ये सब कहाँ से आ रहे हैं ? कैसे उत्पन्न हो रहे हैं ? ये कष्ट क्या हैं, ये दुख क्या हैं ? सभी के जीवन एक जैसे क्यों नहीं हैं ? कुछ लोगों के ऐसे हैं, कुछ लोगों के वैसे हैं, कुछ लोगों का भोग क्या है ? कुछ लोगों की बीमारियाँ क्या हैं ? कुछ लोग धनी क्यों

हैं ? कुछ लोग गरीब क्यों हैं ? अगर भगवान के लिए सब समान हैं, तो ये अंतर क्यों हैं ? ऐसी सोचने लायक बहुत सी बातें हैं।

तब तक सब ठीक रहता है। जीवन में अचानक बदलाव आता है, अचानक बीमारी आती है, अचानक मर जाते हैं। रहना चाहते हैं ? तो फिर क्यों नहीं रहते, जैसा सोचा था वैसा क्यों नहीं हुआ। जैसा चाहा वैसा क्यों नहीं रहता। जीवन में कितनी भी प्रार्थना करें, कितनी भी विनती करें, जैसा सोचा वैसा क्यों नहीं रहता ? इसका कारण क्या है ?

अगर हर समय इच्छाओं पर ही ध्यान देंगे तो जीवन सुचारु रूप से कैसे चलेगा, उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए जो काम नहीं करने चाहिए वे करते हुए, उनका परिणाम फिर से असहनीय कष्ट भोगना पड़ेगा। कितना नुकसान होगा। इसलिए इच्छाओं पर ध्यान नहीं, ज्ञान पर ध्यान दें।

To watch Tatavarthy's zoom sessions:

a) Silence meditation from **4 a.m.** to **6.30 a.m.**, followed by messages related to soul-knowledge from **6.30am** to **7.30am.**

Zoom ID: **2413823868** Password: **RAO**

b) The above-mentioned Zoom session will also be livestreamed on **YouTube** from **6.30am to 7.30am.**

c) Those who are in the TVR & TRL WhatsApp group will receive Zoom and YouTube links, along with details about the Tatavarthy's classes. They must save Sindhura's phone number: **8555995217**

d) Those who wish to join the Tatavarthy's WhatsApp group can contact Sindhura: 8555995217, Madhu: 7893917364 or visit www.tst.org.in and click on the "Join WhatsApp Group" link.

10.इच्छाएं और इरादे ऊर्जा को खत्म करते हैं

जो कोई भी इच्छाओं का गुलाम होकर उन्हें पूरा करने की कोशिश करता है, वह बहुत दुखी होता है। बहुत नुकसान उठाता है। आप देखें, किसी को भूख लगी, उसने किसी होटल में जाकर खाना खाने का सोचा, एक तरफ फाइव स्टार होटल है, वहां का खाना 1000 रुपये का है। दूसरी तरफ प्लेट मील्स 50 रुपये का है।

अगर आप ध्यान दें तो इस 50 रुपये के प्लेट मील्स से भी पेट भर जाता है। 1000 रुपये का 5 स्टार भोजन खाने से भी पेट भर जाता है। यदि आप इच्छाओं के गुलाम हैं तो 1000/- रुपये का भोजन करेंगे। लेकिन आप ऐसा कब तक खा सकते हैं ? लेकिन यदि आप आवश्यकता तक सीमित रहते हैं तो प्लेट मील्स से ही काम चला लेंगे, और आप इसे कितने भी समय तक खाएं, आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

इसी तरह जीवन में कुछ भी हो, किसी भी स्तर के लोग हों, उन्हें अपनी आवश्यकताओं तक सीमित रहना चाहिए, अन्यथा उन्हें बहुत नुकसान होगा। उन्हें उसी में जीना चाहिए जो उनके पास है। यदि आप वास्तव में अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं तो आपको प्रकृति के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। प्रकृति का नियम यह है कि जो आपने अतीत में किया है, उसे अब आप अनुभव करेंगे, और जो आप अब करते हैं, उसे भविष्य में अनुभव करेंगे।

जो आप चाहते हैं वह अभी नहीं हो सकता, यह संभव नहीं है, लेकिन यदि आप योग्यता प्राप्त करते हैं तो यह भविष्य में आपके लिए पूरा होगा।

बहुत से लोग कहते हैं कि मैं बहुत आर्थिक परेशानियों में हूँ, मुझे नहीं पता कि इनसे कैसे निकलूँ, मैं मरना चाहता हूँ। लेकिन याद रखें

कि आर्थिक परेशानियाँ अपने आप नहीं आतीं। वे उनके पिछले कर्मों के कारण आती हैं। यदि उन्होंने अतीत में गलत काम किए हैं, धोखाधड़ी की है, अवैध रूप से कमाया है, तो अब वे इसके परिणामस्वरूप आर्थिक परेशानियों का सामना कर रहे हैं।

इसलिए, यदि आप अपनी इच्छानुसार जीना चाहते हैं, तो आपको अब उसके अनुसार प्रयास और कड़ी मेहनत करनी चाहिए। क्योंकि वर्तमान आपके हाथ में नहीं है, आपको किए गए कार्यों का अनुभव करना होगा, लेकिन भविष्य आपके हाथ में है।

बहुत से लोग अपनी कुंडली दिखाते हैं कि मेरा भविष्य कैसा होगा? क्या मैं मुश्किलों से बाहर निकल पाऊँगा या नहीं? वे जानने की उत्सुकता दिखाते हैं। लेकिन आपको अपने जीवन के बारे में कोई कुंडली दिखाने की आवश्यकता नहीं है, यदि आप अब उसके अनुसार कड़ी मेहनत करते हैं कि आप भविष्य में कैसा रहना चाहते हैं, तो आपका भविष्य आपकी इच्छानुसार आकार लेगा।

पत्री जी ने कहा कि **''हर व्यक्ति अपनी वास्तविकता का निर्माता स्वयं है।''** इसलिए आप अपना भविष्य स्वयं बना सकते हैं। कोई आपको अपमानित न करे। यदि आप ऐसा सोचते हैं, तो आपको अब से किसी को अपमानित नहीं करना चाहिए। यदि कोई आपकी चीज़ न चुराए, तो आज से आप किसी की भी चीज़ किसी भी तरह से न चुराएँ। धोखाधड़ी से, मीठी बातों से, अवैध रूप से, या अन्यायपूर्ण तरीके से किसी की भी चीज़ किसी भी तरह से न चुराएँ।

यदि आप प्रकृति द्वारा आपको दिए गए से अधिक कुछ चाहते हैं, तो आपको उसके लिए कड़ी मेहनत और प्रयास करना चाहिए। यदि आप इसे अधार्मिक तरीके से प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको इसकी कीमत चुकानी होगी।

बस एक बात याद रखें, 5000 कमाने वाला भी जी रहा है, 50 हजार कमाने वाला भी जी रहा है, 5 लाख कमाने वाला भी जी रहा है, 5 करोड़ कमाने वाला भी जी रहा है। सभी प्रकार के लोग जी रहे हैं। यहाँ जीने के लिए पाँच करोड़ की आवश्यकता नहीं है, महीने में 10,000 कमाने वाला भी जी सकता है। इसलिए, अपनी स्थिति के अनुसार आवश्यकताओं तक सीमित रहकर जीना चाहिए।

पत्री जी ने कई बार कहा है कि मनुष्य को क्या चाहिए? एक रोटी का टुकड़ा और अचार काफी नहीं है? यदि आप सीमित रूप से जीते हैं तो कोई परेशानी नहीं होगी। लेकिन रोटी के साथ सब्जी चाहिए, सब्जी के साथ मिठाई चाहिए, मिठाई के साथ नमकीन चाहिए, मिठाई और नमकीन ही नहीं, चांदी की प्लेटें भी चाहिए, फल चाहिए, आइसक्रीम चाहिए, मुझे वह वैरायटी चाहिए, यह वैरायटी चाहिए, वे कहते हैं। कितना भी हो, पर्याप्त नहीं होता।

यहाँ एक बात याद रखें, चाहे प्लेट मील्स खाने वाला हो या फाइव स्टार मील्स खाने वाला हो, शाम होते-होते फिर से भूख लगती है। इसलिए ये सब इच्छाएँ हैं! तो सिर्फ इच्छा करने से लाभ नहीं है, इन दो बातों को याद रखें।

1) यदि आप अपनी इच्छित इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं, तो आपको प्रकृति के अनुसार कड़ी मेहनत करनी चाहिए। यदि आप इच्छाओं को पूरा करने के लिए अधार्मिक तरीके से प्रयास करते हैं, तो आपको कीमत चुकानी होगी।

2) या यदि आप कुछ हासिल करने के लिए संकल्प लेते हैं और ध्यान करते हैं, तो वे ध्यान के माध्यम से अर्जित शक्ति को खो देंगे।

इसलिए जान लें कि केवल संकल्प लेकर ध्यान करने से इच्छित कार्य नहीं होता। यदि आप संकल्प लेकर इच्छा करते हैं और आपके पास

ध्यान के माध्यम से अर्जित शक्ति है, तो यह होगा। देखिए, यदि आप तीन साल या छह साल से अच्छी तरह से ध्यान कर रहे हैं, तो आपकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है। यदि आप ऐसे बढ़े हुए व्यक्ति हैं और संकल्प लेकर ध्यान करते हैं, तो इच्छित कार्य होगा, लेकिन तब तक आप अपनी सारी अर्जित शक्ति खो देंगे।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ठीक से ध्यान नहीं करते। उनके पास बड़ी शक्ति नहीं होती। ऐसे लोगों की इच्छा के अनुसार शक्ति न होने के कारण वह संकल्प पूरा नहीं होता।

देखिए, ध्यान क्लास में मास्टर 100, 200 लोगों से संकल्प करवाकर ध्यान करवाते हैं। तीन घंटे में,, चार घंटे ध्यान कराने के बाद।।। वे पूछते हैं, ''आप में से किसकी इच्छा पूरी हुई ?'' तब एक या दो लोग उठकर कहते हैं, ''मेरी इच्छा पूरी हुई है।'' इसका मतलब है कि बाकी लोगों की बीमारी ठीक नहीं हुई, दर्द नहीं गया, परेशानी दूर नहीं हुई, है ना ? क्यों नहीं गई ? सोचिए ?

जिन लोगों का दर्द कम हुआ, वे ध्यान करते ही कहते हैं, ''मुझे पता नहीं चला, लेकिन अंदर कुछ बदलाव आया। पहले बहुत दर्द था, अब कम हो गया है।'' बाकी लोग हैरान हो जाते हैं। तब वे मास्टर से पूछते हैं, ''मास्टर, हमारा दर्द क्यों नहीं कम हुआ ?'' तब मास्टर कहते हैं, ''आपकी शक्ति पर्याप्त नहीं है, अपनी शक्ति बढ़ाओ।''

इसका मतलब है कि जिसकी शक्ति थी, उसका दर्द कम हुआ, उसकी इच्छा पूरी हुई, और जिसकी शक्ति नहीं थी, उसका दर्द कम नहीं हुआ, उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। तो जिसकी शक्ति थी, उसकी इच्छा क्यों पूरी हुई ? क्योंकि उसकी सारी शक्ति खर्च हो गई।

उसने उस इच्छा के लिए अपनी अपार, अमूल्य, कई सालों से अर्जित अद्भुत ध्यान शक्ति को दांव पर लगा दिया। इसीलिए उसका दर्द

कम हुआ।

उसने हमेशा इच्छा पूरी होने के बारे में सोचा, लेकिन उसे यह एहसास नहीं था कि उसकी शक्ति खत्म हो जाएगी। उस मास्टर को भी नहीं पता था कि उसे नुकसान होगा। उस मास्टर का ध्यान सिर्फ उसके ठीक होने पर था, और इसका ध्यान सिर्फ इस पर था कि मैं ठीक हो जाऊं। दोनों को शक्ति का मूल्य नहीं पता था, उस शक्ति से होने वाले लाभ नहीं पता थे। उन्हें यह नहीं पता था कि ऐसी शक्ति अद्भुत है, अमूल्य है, और उन्होंने वह शक्ति अर्जित की है। लेकिन जो शक्ति का मूल्य जानते हैं, वे इस तरह शक्ति नहीं खोते, नुकसान नहीं उठाते, संकल्प नहीं करते।

क्योंकि जैसे-जैसे शक्ति बढ़ती है, उसकी बुद्धि विकसित होती है, मन शुद्ध होता है। विवेक आता है, वह अच्छे-बुरे को समझता है। वह अच्छी तरह सोचता है, सही निर्णय लेता है। वह किसी भी मामले में वह नहीं करता जो नहीं करना चाहिए, वही करता है जो करना चाहिए। जीवन में उसे कभी नुकसान नहीं होता। इसीलिए पत्री जी भी कहते हैं, ''अपनी बुद्धि को अच्छी तरह विकसित करो।'' बुद्धि से बढ़कर कुछ नहीं है, यदि आप अपनी बुद्धि को अच्छी तरह विकसित करते हैं, तो आपकी बुद्धि ही आपको गुरु बनकर मार्गदर्शन करेगी।

अपार शक्ति बढ़ाने से ही बुद्धि आती है, और यह शक्ति लंबे समय से ध्यान करने से आती है। इतनी मूल्यवान शक्ति को एक छोटी सी, तुच्छ इच्छा के लिए खो दिया, तो सोचो कितना नुकसान होगा!

जीवन में किसी को भी सिर्फ एक ही परेशानी नहीं आती, वे कई कर्म करके आए हैं। इसलिए ऐसी परेशानियां आती हैं। यदि आप अपनी सारी शक्ति एक परेशानी पर खर्च कर देते हैं, तो दो महीने या छह महीने में एक और परेशानी आएगी। तब आपकी स्थिति क्या होगी? पहले शक्ति थी। अब आपके पास शक्ति नहीं है, संकल्प करके ध्यान करने से भी कोई

फायदा नहीं होगा, आप उस दर्द से बाहर नहीं निकल पाएंगे।

लेकिन जिसके पास शक्ति है, वह किसी भी परेशानी का सामना कर सकता है। वह अपनी बुद्धिमत्ता से किसी भी स्थिति को पार कर लेता है। यदि शक्ति नहीं है, तो वह तड़प उठेगा।

कुछ लोग अपने घर की परेशानियों के अलावा दूसरों की परेशानी दूर करने के लिए भी संकल्प करते हैं। कितना अजीब है! आपको अपनी अर्जित शक्ति का मूल्य नहीं पता, यदि पता होता तो आप ऐसा व्यवहार नहीं करते। देखिए, हम देवताओं को अपार शक्तिशाली कहते हैं। तो उन्हें वह शक्ति कैसे मिली? वे मनुष्य के रूप में पैदा हुए, गहन ध्यान किया, अपार शक्ति अर्जित की और देवता बन गए।

पत्री जी बताते हैं कि कृष्ण ने चौथे वर्ष से ही ध्यान किया, श्रीराम ने 10वें वर्ष से ही ध्यान किया। हनुमान स्वामी ने दूसरे वर्ष से ही ध्यान किया। इस तरह करके वे उस शक्ति से देवता बन गए, ऐसे ही नहीं बने।

और रमण महर्षि भी ऐसे ही भगवान बन गए। उनका शरीर दूसरों जैसा ही दिखता था, लेकिन उनकी शक्ति अपार थी। जो भी उनके पास किसी समस्या के साथ जाता था, वे उसका समाधान बताते थे, उनके पास कोई बड़ी मांसपेशियां नहीं थीं। तो सभी उनके पास क्यों जाते थे? उनके द्वारा दिए गए ज्ञान के लिए। इसलिए जान लें कि जितनी शक्ति बढ़ती है, उतना ही ज्ञान आता है।

बहुत से लोगों को यह संदेह हो सकता है कि इच्छाओं के लिए संकल्प करने से शक्ति कैसे खो जाती है। इसलिए, समझने के लिए विश्वामित्र की कहानी जानते हैं।

विश्वामित्र ने अपार शक्ति अर्जित करने की इच्छा से एक हजार वर्षों तक गहन ध्यान साधना की। उन्होंने इतनी शक्ति अर्जित कर ली थी

कि वे कुछ भी बना सकते थे।

जैसे ही उन्होंने इतनी शक्ति अर्जित की, इंद्र डर गए। यह व्यक्ति इतना शक्तिशाली हो गया है। क्या यह अपनी शक्ति से दुनिया का भला करेगा या नुकसान? इस संदेह के साथ उन्होंने विश्वामित्र की परीक्षा ली।

मेनका को भेजा। मेनका को देखते ही विश्वामित्र को उस पर इच्छा हुई। उसने मेनका से शादी करने के लिए कहा। तब मेनका ने कहा, ''ठीक है, मैं शादी करूँगी, लेकिन एक शर्त है।'' उसने पूछा, ''वह क्या है?'' उसने कहा, ''मैं जो भी चाहूँगी, मेरी इच्छा पूरी करनी होगी। अगर तुम मेरी इच्छा को मना करोगे, तो मैं तुम्हें छोड़कर अपने लोक चली जाऊँगी।''

तब विश्वामित्र ने कहा, ''ओह, मैं निश्चित रूप से पूरा करूँगा। मैं असीम शक्ति वाला हूँ, तुम्हारी इच्छाएँ पूरी करना मेरे लिए कोई बड़ी समस्या नहीं है। मैं तुम्हारी शर्त मानूँगा'', और उसने उससे शादी कर ली। वे साथ रह रहे थे। साथ रहते हुए मेनका रोज़ नई-नई और अजीबोगरीब इच्छाएँ करती थी। कैसी इच्छाएँ? जैसे, जब आम का मौसम नहीं होता था, तो वह आम खाने की इच्छा करती थी। वह जाता था और देखता था, लेकिन कहीं नहीं मिलते थे। अगर वह कहता कि नहीं हैं, तो वह कहीं चली न जाए, इसलिए उसने अपनी कुछ शक्ति खर्च करके वहाँ एक आम का बगीचा बना दिया। उसने उसकी इच्छा पूरी की।

उसके पास शक्ति थी, इसलिए उसने यह काम किया। ऐसा करने में उसकी कुछ शक्ति खर्च हुई। कुछ समय बाद, उसने कहा, ''मुझे आपके साथ आकाश में घूमना है।'' यह कितनी देर का काम था? उसने उसकी कमर पर हाथ रखा और हाथ ऊपर उठाकर ऐसे ही पूरा घूमकर वापस आ गए। क्या हम में से कोई ऐसे उड़ सकता है? नहीं। क्योंकि हमारे पास उतनी शक्ति नहीं है। उसके पास शक्ति थी, इसलिए उसने वह

शक्ति खर्च करके ऐसे घूमकर वापस आया।

यहाँ आपको एक बात याद रखनी चाहिए, अगर आप ऐसी इच्छाएँ करते हैं, तो आपकी सारी शक्ति खर्च हो जाएगी। इसीलिए महान लोग महानता के लिए, इच्छाओं के लिए शक्ति खर्च नहीं करते। यह बात केवल पुरानी कहानियों से ही नहीं, बल्कि हाल ही में रामकृष्ण परमहंस को देखकर भी पता चलती है। रामकृष्ण परमहंस ने बहुत ध्यान किया। एक बार जब वह नाव में गंगा नदी पार कर रहे थे, तो किसी ने उनसे पूछा, ''आप इतने तपस्वी हैं, अगर आप चाहें तो नदी पर चलकर जा सकते हैं, है ना? आप नाव में क्यों जा रहे हैं?''

तब उन्होंने उससे कहा, ''बेटा, अगर तुम पच्चीस पैसे दोगे, तो तुम्हें नदी पार करा देंगे, उसके लिए मैं अपनी कीमती शक्ति क्यों खर्च करूँ?'' यानी, इससे हम समझ सकते हैं कि रामकृष्ण परमहंस ने भी अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए, अपनी मौजूदा शक्ति को खर्च न करने को ही प्राथमिकता दी।

बहुत से लोग महानता के लिए नदी पर चलकर जाते हैं। लेकिन रामकृष्ण परमहंस ने महानता दिखाने के लिए अपनी शक्ति खर्च नहीं की। इससे यह पता चलता है कि कोई भी अगर कोई अलौकिक इच्छा पूरी करना चाहता है, तो उसे अपनी कुछ शक्ति खर्च करनी होगी।

इसी तरह विश्वामित्र उसकी इच्छाएँ पूरी करने के लिए अपनी शक्ति खर्च करते हैं। एक और अवसर पर, जब चमेली के फूल नहीं मिलते थे, तो उसने चमेली के फूल माँगे। कहीं चमेली के फूल नहीं थे। अगर वह मना करता, तो वह चली जाती, इसलिए उसने चमेली के फूलों का बगीचा बनाया। फिर से कुछ शक्ति खर्च हो गई।

बाद में, उसने स्नान करने के लिए मानसरोवर जैसी जगह माँगी, ऐसे ही उसने उसकी सभी इच्छाएँ पूरी करने के लिए अपनी सारी शक्ति

खर्च कर दी। जब ऐसा हो रहा था, तो उसने फिर से कहा, ''मुझे आकाश में घूमना है।'' यह कितना काम था? उसने उसकी कमर पर हाथ रखा और हाथ ऊपर उठाया। पहले वह उठकर जा सकता था, लेकिन अब वह उठ नहीं पा रहा था। उसने सोचा, ''यह क्या है, मैं उठ नहीं पा रहा हूँ।'' उसे समझ आ गया कि उसकी सारी शक्ति खर्च हो गई है।

उसने मेनका से कहा, ''मेरी सारी शक्ति खर्च हो गई है, मैं उठ नहीं पा रहा हूँ।'' लेकिन उसने उससे शुरू में ही कहा था कि जब वह उसकी इच्छा को मना करेगा, तो वह उसे छोड़कर चली जाएगी। और ठीक वैसे ही वह चली गई। वह रोता हुआ बैठ गया। मेनका के जाने के लिए नहीं। उसने दुख व्यक्त किया कि उसने वर्षों की मेहनत से अर्जित सारी शक्ति खो दी है। इस तरह उसने मेनका की इच्छाएँ पूरी करने के लिए अपनी शक्ति खो दी। इसी तरह आपको भी यह जानना चाहिए कि अगर आप इच्छाएँ पूरी करने के लिए संकल्प करते हैं, तो आप शक्ति खो देंगे, नुकसान उठाएँगे।

विश्वामित्र ने फिर से 1000 साल तपस्या करके शक्ति अर्जित की। इस बार इंद्र ने रंभा को भेजा, रंभा आई। विश्वामित्र को समझ आ गया कि इंद्र ही यह काम कर रहा है, और उसे सबक सिखाने के लिए उसने रंभा को पत्थर बनने का श्राप दिया। तब वह पत्थर बन गई। लेकिन उसने फिर से अपनी सारी अर्जित शक्ति खो दी।

वहाँ काम से, यहाँ क्रोध से उसने अपनी शक्ति खर्च कर दी।

''ओह, मैंने फिर से नुकसान उठा लिया,'' कहकर उसने फिर से 1000 साल तपस्या की। उसने फिर से शक्ति अर्जित की। इस बार जब विश्वामित्र भोजन करने बैठे, तो इंद्र भेष बदलकर आए। इंद्र ने भिक्षा मांगी। तब विश्वामित्र को समझ आया कि यह इंद्र ही है, जो फिर से मेरी परीक्षा ले रहा है। उन्होंने भोजन छोड़ दिया और इंद्र को बिठाकर अपना

भोजन उन्हें दे दिया।

तब इंद्र ने कहा, ''हे पुत्र, तुमने काम, क्रोध और अब लोभ को भी जीत लिया है। तुम अब ब्रह्मर्षि पद के योग्य हो।'' यह कहकर उन्होंने अपना असली रूप दिखाया। इस तरह विश्वामित्र ने जाना कि उन्होंने इच्छाओं के कारण कितनी शक्ति खो दी थी।

हम सोचते हैं कि महान लोगों का आश्रय लेने से हमारी परेशानियाँ दूर हो जाएंगी। लेकिन वे भी सृष्टि के नियमों से बंधे हैं। कितने भी महान क्यों न हों, उन्हें सृष्टि के नियमों का पालन करना ही पड़ता है, और वे यह जानते हैं। इसीलिए बड़े-बुजुर्ग और गुरुजन केवल मार्ग दिखाते हैं, लेकिन आपकी परेशानियाँ दूर करने का प्रयास नहीं करते। यदि वे किसी की बीमारी ठीक करते हैं, तो वे उस बीमारी के लिए अपनी अर्जित शक्ति खो देते हैं।

यदि कोई मूर्ख पाप करके अपनी परेशानी दूर करने के लिए उनके चरणों में गिरता है, और वे उसे दूर कर देते हैं, तो वे सामान्य हो जाएंगे। इसलिए वे ऐसा नहीं करते। लोग शिरडी बाबा के चरणों में गिरते हैं, यह कहकर कि उन्होंने भक्तों की परेशानियाँ दूर कीं, वे महान आत्मा और भगवान हैं। वे ऐसा किसके लिए करते हैं? वे केवल उन लोगों के लिए ऐसा करते हैं जो लोक कल्याण के लिए काम करते हैं, और वह भी अंत में कम शक्ति खर्च करके। उनकी खर्च की गई शक्ति से कहीं अधिक उपकार वे दुनिया के लिए करते हैं, इसलिए वे संकोच नहीं करते।

मेरी मैडम के मामले में, उन्हें आग से दुर्घटना हुई थी। डॉक्टरों ने कहा था कि वे नहीं बचेंगी। उन्होंने कहा था कि 60-70% जले हुए लोगों का बचना बहुत मुश्किल होता है। फिर भी वे बच गईं। पत्री जी ने अपनी कुछ शक्ति खर्च करके मैडम को बचाया। क्योंकि वे जानते थे कि भविष्य में मैडम दुनिया का बहुत भला करेंगी। उन्हें इस धरती पर रखने

का उद्देश्य यही था।

अब देखिए, वे बाहर आकर सभी को कितना ज्ञान बांट रही हैं! उनकी वजह से कितने लोग ज्ञानी हुए हैं! और वे ऐसा करती रहेंगी। वास्तव में, इस तरह की आग दुर्घटना के शिकार लोग किसी काम के नहीं होते, उन्हें बिस्तर पर रहना पड़ता है। लेकिन वे ऐसी नहीं हैं, वे कई गाँव, राज्य और देश घूमती हैं। वे इतनी मेहनत करती हैं, और आज भी रोज़ ज़ूम क्लास लेती हैं। वे सभी को अपार ज्ञान संपदा प्रदान करती हैं।

इसलिए, अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करें, अपनी आवश्यकताओं तक सीमित रहें। सृष्टि के अनुसार जीवन जिएं। अपनी बुद्धि का विकास करें, अपार शक्ति बढ़ाएं। महान बनें। साधना से प्राप्त शक्ति को इच्छाओं के लिए संकल्पों में लगाकर न खोएं।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

11.भगवद गीता में इच्छाओं से होने वाली हानि

भगवद गीता में

यं यं वा पि स्मर न्भावं त्यज त्यन्ते कलेबरम ।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ (भ.गी.8-6)

तात्पर्यः अर्जुन ! शरीर छोड़ते समय मनुष्य जिस स्थिति का स्मरण करता है, वह उसी स्थिति को प्राप्त करता है। अर्थात, मृत्यु के समय जिस भाव से, यानी जिस इच्छा से वह रहता है, वही उसे प्राप्त होता है, यह जानना चाहिए।

अर्थात, देखिए, दुनिया में लोगों को धन, परिवार, संपत्ति, रिश्तेदारों, भोगों, पदों आदि पर अलग-अलग तरह की आसक्ति होती है।

कुछ लोगों की इच्छा होती है कि उनके सभी लोग अच्छे रहें। कुछ लोगों की इच्छा होती है कि वे सत्ता में रहें, इस तरह की विभिन्न इच्छाएँ होती हैं। वे उन इच्छाओं के साथ जीते रहते हैं। यदि वे ऐसी इच्छाओं के साथ जीते हैं, तो मरते समय भी वे उन इच्छाओं को याद करते हुए मरते हैं।

और जब वे इस तरह मरते हैं, यानी जिन इच्छाओं के साथ वे मरते हैं, उन्हें फिर से वैसा ही जन्म लेना पड़ता है। अर्थात, यह याद रखना चाहिए कि जन्म किए गए कर्मों के अनुसार होता है। इसलिए, उसी के अनुसार जन्म मिलता है।

लेकिन जो लोग बिना किसी इच्छा के आत्मा पर, यानी भगवान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यानी जो हमेशा ध्यान में रहते हैं, उस भाव में रहने के कारण, मृत्यु के बाद वे उच्च लोकों को प्राप्त कर पाते हैं।

इसलिए, जो लोग आत्म-उन्नति चाहते हैं ! जो उच्च लोकों को प्राप्त करना चाहते हैं ! उन्हें इच्छाओं के बिना आत्म-भाव में रहना चाहिए।

तब वे निश्चित रूप से महान लोकों तक पहुँच पाएंगे। अर्थात,

यहाँ श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि जिस इच्छा के साथ रहते हैं, वही प्राप्त होता है।

इसी तरह, भगवद गीता में एक और श्लोक देखते हैं:

श्लोक।। यस्य सर्वे समारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।।(भ.गी.4-19)

तात्पर्य: जिसके सभी कर्म इच्छा और संकल्प से रहित होते हैं!और ज्ञान की अग्नि से जिसके सभी कर्म जल गए हों, ऐसे व्यक्ति को पंडित कहते हैं, ऐसा ज्ञानीजन बताते हैं।

अर्थात, किसी भी व्यक्ति को कोई भी काम बिना इच्छा या संकल्प के करना चाहिए। मतलब, कोई भी काम निष्काम भाव से करना चाहिए, यानी बिना किसी आशा के। क्योंकि जो करना है, वह करने से जो पाना है, वह मिल जाता है, यह जानना चाहिए। इतना ही नहीं, गीता में यह भी कहा गया है कि तुम्हें कर्म करने का अधिकार है, लेकिन फल की इच्छा करने का नहीं।

अगर आप और गहराई में जाएं, तो कहा गया है कि कर्तृत्व भाव के बिना काम करें, यानी 'मैं कर रहा हूँ' का भाव न हो। अगर 'मैं' है, तो उसका फल होगा। अगर 'मैं' ही नहीं है, तो कुछ भी नहीं है।

और गहराई में जाएं, तो सभी कर्मों के फल का त्याग सबसे महान कहा गया है। यानी, इच्छा से कर्म करना नहीं है। बल्कि, इच्छा के फल को, यानी उस काम के फल को छोड़ देना चाहिए।

बहुत से लोग कहते हैं, कृष्णार्पण, रामार्पण। ऐसे ही कुछ अर्पित कर दिया, अब मेरे पास कुछ नहीं है, ऐसा कहते हैं। लेकिन उनका उद्देश्य यह होता है कि ऐसा अर्पित करने से अच्छा फल मिलेगा, इसी इच्छा से वे ऐसा कहते हैं। लेकिन उनके इस भाव को जानने की शक्ति उस प्रकृति को, उस सृष्टि को चलाने वाले को पता है।

देखिए, मंदिर जाते समय पूजा करवाते हैं। लेकिन पूजा शुरू

करने से पहले ही संकल्प करवाते हैं। यानी इच्छाएं मांगते हैं।

लेकिन भगवान ने ऐसी इच्छाओं के बिना काम करने को कहा है। इच्छाएं और संकल्प हों भी, तो उन्हें छोड़ देने को कहा है। जो कोई ऐसा छोड़ देता है, और ज्ञान की अग्नि में अपने सभी कर्मों को जला देता है, वे पंडित हैं, यानी ज्ञान में परिपक्व हैं, ऐसा कहा गया है।

अर्थात, अज्ञानी इच्छा करते हैं, ज्ञानियों को इच्छाएं नहीं होतीं। क्योंकि उन्हें पता है कि जो करना है, वह करने से जो पाना है, वह मिल जाता है।

पत्री जी ने कहा है कि पाप नहीं चाहिए, पुण्य नहीं चाहिए, मुक्ति कर्म करो, यानी आत्म कर्म करो। जब मुक्ति कर्म करते हैं, तो मुक्ति मिलती है। मुक्ति कर्म यानी आत्मा को लाभ पहुंचाने वाले कर्म। वही ध्यान है। इसीलिए कहते हैं कि ध्यान से ही मुक्ति मिलती है। ''ध्यान से ही ज्ञान, और ज्ञान से ही मुक्ति आती है'', ऐसा पत्री जी ने कहा।

Programs by the Tatavarthy's that will be broadcasted on YouTube:

a) Channel name: **Tatavarthy Veera Raghava Rao**

This channel has 2,000+ videos featuring messages from Mr and Mrs Tatavarthy.

b) PMC has also launched a YouTube channel for Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.

Channel name: **Brahmarshi Tatavarthy Veera Raghava Rao.**

c) For messages from trainees who have trained under Mr. and Mrs. Tatavarthy, watch the Tatavarthy Spiritual Trainees YouTube channel.

d) You can also go directly to the YouTube app, type Tatavarthy Veera Raghava Rao in the search bar, and watch all the Mr. and Mrs.Tatavarthy videos.

12.मृत्यु पर होने वाली हानिया

आइए जानते हैं कि मरने के बाद इन इच्छाओं से क्या नुकसान होते हैं। बहुत से लोग जीवित रहते हुए होने वाले नुकसानों के बारे में सोचते हैं, लेकिन इच्छाओं के कारण मरने के बाद भी नुकसान उठाते हैं।

क्योंकि मनुष्यों के दो प्रकार के जीवन होते हैं। एक शरीर के साथ होता है। दूसरा शरीर के बिना होता है। शरीर के साथ वाला जीवन पृथ्वी पर होता है। शरीर के बिना वाला जीवन परलोक में सूक्ष्म लोकों में होता है। आप ही! वहां भी होते हैं, यहां भी होते हैं, यहां शरीर के साथ होते हैं, वहां शरीर के बिना होते हैं। बहुत से लोगों के लिए यह थोड़ा भ्रमित करने वाला है।

शरीर के साथ होना क्या है, शरीर ही मैं हूँ, ऐसा सोचने वाले लोग हैं। लेकिन ''मुझे जानना चाहिए कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ''। यहां 'मेनु' (शरीर) और मैं दोनों हैं। मैं आत्मा है, 'मेनु' शरीर है। यह मैं यानी आत्मा 'मेनु' में प्रवेश कर गई है। एक माँ के गर्भ में बन रहे शरीर में प्रवेश करके जन्म लेकर, उसे जो अनुभव प्राप्त करने हैं, जो पाठ सीखने हैं, वह सीखती रहती है।

फिर, जब उसका निर्धारित समय समाप्त हो जाता है, तो वह इस शरीर को छोड़कर फिर ऊपर चली जाती है। लेकिन शरीर लेने के बाद, जीवन में इच्छाओं के साथ ही जीते रहते हैं। कितनी तरह की इच्छाएं, एक या दो? वे ऐसे ही पैदा होती रहती हैं।

इस प्रकार मनुष्य इच्छाओं के साथ जीवन में बहुत कुछ इकट्ठा करता है, बहुत कुछ कमाता है, बहुत कुछ जमा करता है, बहुत कुछ बचा कर रखता है। ये सब मरने के बाद एक भी।।। भी नहीं आते, सब पृथ्वी पर ही छोड़ देने पड़ते हैं।

जब सब कुछ खो जाता है, तो 'अरे, मैंने कितना नुकसान उठाया, बहुत नुकसान उठाया' यह मरने के बाद पता चलता है। हमने अभी तक जीवित रहते हुए इच्छाओं के कारण होने वाले नुकसानों के बारे में बात की।

अब हम मरने के बाद इच्छाओं के कारण होने वाले नुकसान के बारे में बात कर रहे हैं। आपको पता चलेगा कि जीवन में आपको जो भी लाभ मिलते हैं, वे मरने के बाद लाभ नहीं, बल्कि नुकसान हैं। आप बहुत मेहनत करके बहुत सी सफलताएं प्राप्त करते हैं, बहुत कुछ महान हासिल करते हैं, बहुत कुछ कमाते हैं और सोचते हैं कि आपको लाभ हुआ है। लेकिन मरने के बाद आपको पता चलेगा कि वह लाभ नहीं, बल्कि नुकसान था।

इस प्रकार, पूरे जीवन भर अनुपयोगी चीजों के लिए मेहनत की, मुझे एक भी चीज काम नहीं आई, और वह सब लाभ नहीं, बल्कि नुकसान था, यह पता चलेगा। उस समय मुझे, यानी आत्मा को लाभ पहुंचाने वाले काम किए होते, तो वे मेरे लिए बहुत उपयोगी होते, यह पता चलेगा।

मैं पत्री जी के परिचय के सौभाग्य से यह बात जीवित रहते हुए ही जान पाया, इसलिए मैंने अपनी जिंदगी बदल ली। इसलिए, आप सभी को अभी, यानी जीते जी, यह जानना चाहिए कि आपको, यानी आत्मा को नुकसान पहुँचाने वाले काम न करें। कमाएँ, कोई मना नहीं करेगा। लेकिन धर्मपूर्वक कमाएँ, यदि आप अधर्मपूर्वक, पाप करते हुए कमाते हैं, तो कमाया हुआ धन आपके साथ नहीं आएगा, लेकिन आपके पाप सुरक्षित रूप से आपके साथ आएंगे। इसलिए, आप यह याद रखें कि आप आत्मा हैं और आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले काम करें।

मैंने इस शरीर के लिए, इस शरीर को सुख पहुँचाने के लिए कितनी गलतियाँ कीं, कितने पाप किए, कितने न करने योग्य काम किए,

कितना अधर्मपूर्वक व्यवहार किया, वे सभी मुझे नुकसान पहुँचाने वाले ही थे। मैंने जो कुछ भी मेहनत से कमाया, वह अब मेरे साथ नहीं आएगा, मुझे काम नहीं आएगा, यह मुझे पता है। मैंने सोचा था कि वे मुझे लाभ पहुँचाएँगे, लेकिन उनके बारे में सोचने पर अब मुझे पता चलता है कि मैंने कितना नुकसान उठाया है, यह मरने के बाद समझ में आएगा।

इसलिए, शरीर महान होना चाहिए, शरीर को नाम मिलना चाहिए। शरीर को सबसे महान बनना चाहिए, सबसे अधिक कमाना चाहिए, ऐसी इच्छाओं के साथ एक बड़ा महल बनाना चाहिए, सभी में महान कहलाना चाहिए, ऐसी इच्छाओं के साथ न करने योग्य काम करने से वे कुछ भी साथ नहीं आते। तब समझ में आता है ? अरे, कितना नुकसान हुआ, मैंने अपने लिए, यानी आत्मा के लिए कुछ नहीं किया, मैंने कितना जीवन जिया, कितनी मेहनत की, क्या मेरी सारी मेहनत व्यर्थ हो गई ? क्या मेरे सारे कष्ट व्यर्थ थे ? ऐसा सोचने पर व्यर्थ ही समझ में आता है।

क्या ऐसा सोचने पर कि मैंने कुछ किया, सब नुकसान ही है ? आप जानेंगे कि आपने कितना नुकसान उठाया है। और सोचने पर यह समझ में आता है कि ये गलतियाँ नहीं करनी चाहिए थीं, और यह पता चलता है कि मैंने एक जीवनकाल ही खो दिया है।

महान ज्ञानी रमण महर्षि को यदि आप थोड़ा ध्यान से देखें, तो बहुत से लोग उन्हें क्या समझते हैं, वे उन्हें कम बुद्धि वाला समझते हैं। उन्होंने कुछ नहीं कमाया, यहाँ तक कि उनके पास कपड़े भी नहीं होते, ऐसा सोचते हैं। वह कैसा जीवन है, हमने कितने लाख, करोड़ कमाए, कितना बड़ा महल बनाया। हमने अपने घर को कितना शानदार सजाया, महल जैसा बनाया। घर ही नहीं, कार, और भी कई सुविधाओं के साथ कई व्यवस्थाएँ कीं, ऐसा कहते हैं। लेकिन मरने के बाद उनके साथ कुछ भी नहीं आता।

तब वे सोचते हैं कि मैंने कितना नुकसान उठाया, मैंने कितनी इच्छाओं के साथ कितना कुछ किया, लेकिन मैंने एक भी ऐसा काम नहीं किया जिससे मुझे लाभ हो, ऐसा सोचकर वे दुखी होते हैं।

रमण महर्षि जैसे लोगों ने पहले ही जान लिया था, उन्होंने इस शरीर का उपयोग अपनी आत्मा के लिए किया और इस शरीर से साधनाएँ करवाईं। उन्होंने अपार ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने जो करके दिखाया, वही पत्री जी भी बता रहे हैं।

इच्छाओं के गुलाम मत बनो, तुम कौन हो, यह जानो ? ऐसा वे बता रहे हैं।

तुम शरीर नहीं हो, शरीर का उपयोग अपने लिए करो। इस शरीर का उपयोग ध्यान साधना के लिए करो, जिससे तुम्हें, यानी आत्मा को लाभ हो, ज्ञान प्राप्त करो। इस शरीर से किताबें पढ़ो, इस शरीर से उन लोगों का साथ करो जो ज्ञान से संबंधित बातें बताते हैं। पत्री जी यही बातें बार-बार बता रहे हैं।

ज्ञानियों का साथ करने से आप ज्ञानी बनेंगे। ज्ञानी वे हैं जो यह जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ। अज्ञानियों का साथ करने से वे शरीर के भाव में रहते हैं। ऐसे लोग हमें क्या बता सकते हैं।

देखिए, ''कंपास की सुई को आप कहीं भी घुमाएँ, वह सुई कहीं भी घुमाई जाए, उत्तर दिशा की ओर ही घूमती है, उत्तर दिशा को ही दिखाती रहती है। वैसे ही, सज्जनों का साथ, यानी सत्य बताने वालों का साथ करने से आप हमेशा आत्मा के बारे में सोचते हैं। आत्मा के बारे में ही जानते हैं।''

ऐसे लोग वास्तव में लाभ प्राप्त करते हैं। आपका ध्यान हमेशा आत्मा पर ही रहना चाहिए।

ऐसे लोग भाग्यशाली होते हैं। वे जानते हैं कि क्या करना है, क्या

नहीं करना है। वे जानते हैं कि आत्मा के लिए क्या लाभदायक है। वे उन्हीं कामों को प्राथमिकता देते हैं। वे उन चीजों को कम प्राथमिकता देते हैं जो आत्मा के लिए लाभदायक नहीं हैं। वे शरीर के लिए गलतियाँ नहीं करते। पाप नहीं करते। अधर्म पूर्वक व्यवहार नहीं करते। सृष्टि के विरुद्ध व्यवहार नहीं करते, सांसारिक इच्छाएँ नहीं होतीं।

इसलिए, जब शरीर छोड़ते हैं, तो ले जाने के लिए आए सहायक जब बुलाते हैं, तो वे कहते हैं, ''अरे, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे, मेरे रिश्तेदार, इन सबको छोड़कर आ जाऊँ? मैं नहीं आऊँगा।'' तब वे कहते हैं, ''क्या तुम्हें अभी भी समझ नहीं आया?'' आखिर उनका तुमसे क्या संबंध है? तुम किसी और लोक से आए हो, वे किसी और लोक से आए हैं। कुछ समय के लिए यहाँ साथ रहे, बस! तुम अब अपने रास्ते चले जाओगे, कुछ समय बाद वे भी अपने रास्ते चले जाएंगे। आपके कर्मों के अनुसार आप अलग-अलग लोकों में जाएंगे। उनके कर्मों के अनुसार वे अलग-अलग लोकों में जाएंगे। इसलिए उनका आपसे कोई संबंध नहीं है, कौन जानता है कि वे कहाँ रहेंगे! और आप कहाँ रहेंगे!? सहायक कहते हैं।

वे फिर से सोचते हैं। क्या उन्होंने जो कहा वह सही नहीं है? इतने सालों तक मैंने उन्हें अपना माना, उन्हें पालने के लिए मैंने बहुत सारी गलतियाँ कीं, बहुत सारे पाप किए, ऐसे काम किए जो नहीं करने चाहिए थे, इतनी गलतियाँ करके जो कमाया वह वे भोग रहे हैं, लेकिन पाप मेरे साथ आ रहे हैं। अरे! मैं कितना नुकसान उठा रहा हूँ। मैंने जो कमाया वह मेरे साथ नहीं आएगा, बल्कि मुझे नुकसान पहुँचाने वाले वे पाप ही मेरे साथ आ रहे हैं, ऐसा सोचकर वे बहुत दुखी होते हैं।

परलोक में एक लोक दूसरी लोक से बहुत बहुत उन्नत या श्रेष्ठ होता है। इसलिए सांसारिक इच्छाओं के गुलाम न बनें, आवश्यकताओं तक सीमित रहें। रात का सपना जैसे है, वैसे ही यह दिन में होने वाला भी

सपना है। वह रात का सपना है, यह दिन का सपना है। अगर इस दिन के सपने के लिए इतने पाप, इतनी गलतियाँ करेंगे... तो मरने के बाद, सपने की बात समझ में आएगी। अरे सपने में होने वाली बातों के लिए इतनी धूमधाम क्यों? जो नहीं करना चाहिए था वह सब करके मैंने कितना नुकसान उठाया, यह समझ में आएगा।

अगर अनावश्यक इच्छाओं को छोड़कर, जो है उसी से संतुष्ट हो जाते तो ये सारी परेशानियाँ नहीं होतीं, है ना? ऐसा तब लगता है। मरने के बाद आपको ले जाने के लिए ऊपर से सहायक आते हैं। कुछ विवेक का उपयोग करके कुछ लोग क्या करते हैं कि वे उनके साथ चले जाते हैं, कुछ लोग बहुत मूर्ख होते हैं। वे कितना भी कहें, सुनते नहीं हैं। सहायक 11 दिन तक चुप रहते हैं, 11वें दिन वे कार्यक्रम समाप्त होने के बाद अपने रास्ते चले जाते हैं। तब वे सहायक कितना भी कहें, सभी पर, सभी चीजों पर रहने वाली इच्छाओं के कारण, उन पर रहने वाले मोह के कारण वह नहीं आता है। तब वे कहते हैं कि हम आपको आखिरी बार बता रहे हैं, आओगे या नहीं? तो वह कहता है कि मैं अपने परिवार को छोड़कर नहीं आऊँगा? वे रो रहे हैं। मेरे बिना कैसे होगा? वे कहते हैं, तब सहायक आखिरी बार कहकर चले जाते हैं।

जैसे ही वे चले जाते हैं, उसे ले जाने के लिए खुले हुए आत्मा के द्वार, यानी जिस द्वार से उसे जाना था, वे द्वार बंद हो जाते हैं। वे चले जाते हैं। फिर उसे जाने का अवसर नहीं मिलता, वह कुछ समय वहीं रह जाता है। वह हर समय घर के चारों ओर, अपनी संपत्ति के चारों ओर घूमता रहता है, उसे कुछ समझ नहीं आता, कोई उसकी बात नहीं सुनता?

ऊपरी लोकों में जाना चाहें तो जाने का कोई रास्ता नहीं है, उसकी मदद करने वाला भी कोई नहीं होता। ऐसे रह गए व्यक्ति को क्या कहते हैं, प्रेतात्मा कहते हैं। उसी को सब भूत कहते हैं। लेकिन याद रखें,

वास्तव में ऊपरी लोकों में जाकर बाद के जीवन की योजना बनाने वाले लोग इच्छाओं के कारण यहीं रह जाते हैं और भूत बन जाते हैं।

यानी प्रेतात्मा बन जाते हैं। देखिए उसने कितना नुकसान उठाया है। कई सौ साल तक उसे ऐसे ही रहना पड़ता है। रास्ता नहीं पता, फिर कोई आकर कभी उसे रास्ता दिखाए तो ही जाने का अवसर मिलता है। देखिए वह कितना नुकसान उठा रहा है, देखिए वह कितना समय बर्बाद कर रहा है, यह सब इच्छाओं के कारण होने वाला नुकसान है।

उन इच्छाओं के कारण ही वह नहीं गया, थोड़ा विवेक का उपयोग करता तो चला जाता, थोड़ा ज्ञान होता तो चला जाता। कुछ भी न होने के कारण वह वहीं रह गया और प्रेतात्मा बन गया, उसे जिन लोकों में जाना था, वहाँ न जाकर उसने नुकसान उठाया। किसके कारण ? इच्छाओं के कारण।

इसलिए हर किसी को यह जानना चाहिए कि इच्छाओं के कारण मरने के बाद भी नुकसान होता है। थोड़ा-बहुत नहीं, बहुत नुकसान होता है, यह बात समझ में आती है। इसलिए इच्छाओं को नियंत्रित करें, इच्छाओं को नियंत्रित करने का तरीका ही पत्री सर द्वारा दिया गया ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान है।

ब्रह्मविध्वरिष्ठ तटवर्ति राज्यलक्ष्मी के हिन्दी किताब

1) एक और जन्म Rs.160/-
2) साधना में स्थितियाँ..... Rs.80/-
3) ज्ञान माला Rs.70/-
4) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरूओं ।..... Rs.70/-
5) अविद्या क्या है ?..... Rs.70/-
6) अगर मानव को योगी बनना है तो ? Rs.60/-
7) गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.60/-
8) महात्माओं का संदेशों..... Rs.50/-
9) मानव के कर्तव्यों Rs.50/-
10)गुरु पूर्णिमा का विशिष्टता Rs.50/-
11)शाकाहार ही मानव का आहार है ! Rs.50/-

Information available on Tatavarthy's website:

Website address: www.tst.org.in

a) Details of programs conducted under the guidance of Mr. and Mrs. Tatavarthy and Google Maps location are available.

b) All books by Mr. and Mrs. Tatavarthy are available in PDF format for free download in Telugu, Kannada, Hindi, and English languages.

c) All the messages of Mr. and Mrs. Tatvarthy are organized in concept-wise YouTube playlists.

d) Summaries of Mr. and Mrs. Tatavarthy's messages are provided in the form of quotations.

e) The gallery of Mr. and Mrs. Tatavarthy is also available.

For registration of a 3 day free meditation and soul-knowledge training classes held in Bhimavaram on the 1st, 2nd, and 3rd of every month, contact Sindhura, 8555995217.

Tatavarthy Raghavarao Sir
Books in English

1.	Life Science (Part-I)	Rs.120
2.	Why is Guiding Not Meditation ?	Rs.100
3.	Which is the right meditation ?	Rs.100
4.	Die before death!	Rs.120
5.	The Law of Karma	Rs.100
6.	What is Meditation?	Rs.80
7.	True Path	Rs.80
8.	Why soul-knowledge	Rs.70
9.	What comes after death ?	Rs.70
10.	How to improve Financial Status ?	Rs.60
11.	Wisdom is attained only through Meditation	Rs.60
12.	What is Intention?	Rs.50
13.	Why is this life?	Rs.50
14.	Vegetarian Food Is Human Food	Rs.50
15.	Meditation for the Development of Students	Rs.40
16.	Non violence and vegetarianism	Rs.40

REBIRTH (Tatavarthy Rajya Lakshmi) Rs.150

श्री तटवर्ती वीर राघवराव के हिन्दी किताब

1. आत्म शास्त्र ।..... Rs.200/-
2. ध्यान विद्या ।..... Rs.160/-
3. भगवद गीता का सार ।..... Rs.160/-
4. सत्य मार्ग ।..... Rs.160/-
5. मरने से पहले मरना है।..... Rs.130/-
6. गाईडिंग ध्यान क्यों नहीं ?..... Rs.120/-
7. भगवान कौन है।..... Rs.120/-
8. कर्म सिद्धांत ।..... Rs.120/-
9. विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ ।..... Rs.120/-
10. ब्रह्म ज्ञान ।..... Rs.100/-
11. यह जीवन क्यों है ?..... Rs.100/-
12. मेहर बाबा का संदेश ।..... Rs.100/-
13. कौन सा ध्यान सही है ?..... Rs.100/-
14. इच्छाओं के कारण होने वाली हानियाँ..... Rs.100/-
15. मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.....Rs.80/-
16. भगवत के दृश्यों का अर्थ ।.....Rs.80/-
17. आत्म हंतक कौन होता है ।.....Rs.70/-
18. स्त्री जन्मों में सीखने वाले विषयों, पुरुष जन्मों में सीखने वाले विषयों।. Rs.70/-
19. दुख निवारण का मार्ग.....Rs.75/-
20. उत्तम पुरूष.....Rs.60/-
21. आर्थिक स्थिति बढाना है तो ?.....Rs.60/-
22. निर्वाण मार्ग.....Rs.60/-
23. सत्य.....Rs.50/-
24. क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं ?..... Rs.50/-
25. गुरू को पहचानना कैसे ?.....Rs.50/-
26. विद्यार्थियों के विकास के लिए ध्यान विद्या Rs.50/-
27. शाकाहार ही मानव का आहार है!.....Rs.50/-
28. ब्रह्मं क्या है ?.....Rs.50/-
29. संकल्प अर्थात ?.....Rs.40/-

इच्छाओं के बिना कोई नहीं रहता। बहुत से लोगों को ऐसा लग सकता है, इच्छाओं से क्या नुकसान हैं ? इच्छाओं के बिना कैसे रह सकते हैं ? आखिर अगर इच्छाएं न हों तो जीने का क्या मतलब ? आखिर जीना ही इच्छाएं पूरी करने के लिए हैं, ऐसा कहने वाले भी हैं। ऐसे इच्छाओं के साथ जीने वाले मनुष्यों को ये इच्छाएं कितने प्रकार के नुकसान और कठिनाइयां देती हैं, यह जानने के बाद हर कोई इच्छाएं पूरी करने की कोशिश नहीं करेगा, बल्कि इच्छाओं को नियंत्रित करने की कोशिश करेगा। जो लोग इच्छाओं को नियंत्रित कर पाते हैं, वे जीवन में अपनी ज़रूरतों तक सीमित रहते हैं।

इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए इच्छाओं का मूल ''मन'' है, इसलिए यदि आप मन को नियंत्रित करते हैं, तो इच्छाएं आपके नियंत्रण में रहेंगी। यानी, आप मन की नहीं सुनना, बल्कि मन आपकी सुनना है।

यह कैसे संभव है ? वह मार्ग है जो पत्री जी ने हमें दिया है, ''श्वास पर ध्यान'' ध्यान।

Rs.100/-

– ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघव राव